उत्पत्ति

1 आरंभ[a] में प्रभु ने आकाश और पृथ्वी
को बनाया। 2 पृथ्वी बिना आकार और
सुनसान थी। गहरे पानी के ऊपर अँधेरा था।
उस समय परमेश्वर का आत्मा पानी की
सतह पर मण्डराता था। 3 तब परमेश्वर ने
कहा, "रोशनी[b] हो," और रोशनी हो गई।
4 प्रभु ने देखा कि, रोशनी अच्छी है और प्रभु
ने अंधेरे को रोशनी से अलग किया। 5 प्रभु
ने रोशनी को दिन तथा अंधेरे को रात कहा।
तब शाम हुई फिर सुबह हुई। इस तरह पहला
दिन हो गया। 6 फिर प्रभु ने कहा, "पानी के
बीच एक ऐसा अन्तर हो, जिस से पानी के
दो हिस्से हो जाएँ। 7 तब प्रभु ने एक अंतर
बना कर उसके नीचे के पानी और उसके
ऊपर के पानी को अलग-अलग किया और
वैसा ही हो गया। 8 और प्रभु ने उस अंतर
को आकाश कहा। फिर शाम हुई और उसके
बाद सुबह। इस तरह दूसरा दिन हो गया।
9 फिर प्रभु ने कहा, आकाश के नीचे का
जल एक जगह इकट्ठा हो जाए और सूखी
ज़मीन दिखने लगे और वैसा हो भी गया।
10 प्रभु ने सूखी भूमि[c] को पृथ्वी कहा, तथा
इकट्ठे हुए पानी को सागर कहा, और प्रभु
ने देखा कि अच्छा है। 11 फिर प्रभु ने कहा,
"ज़मीन पर हरी घास, बीज वाले छोटे-छोटे
पौधे और फल देने वाले पेड़ उग जाएँ, जिन
के बीज उन्हीं में हों" और वैसा ही हुआ।
12 इस तरह पृथ्वी पर वनस्पति अर्थात बीज
वाले पौधे और फल देने वाले पेड़ उगे, जिन
में अपनी अपनी जाति[d] के अनुसार बीज
होता है। यह सब देख कर प्रभु को अच्छा
लगा। 13 तब संध्या होने के बाद सुबह हो
गई। इस तरह तीसरा दिन हुआ। 14 फिर
प्रभु ने यह शब्द कहा, "दिन को रात से
अलग करने के लिए आकाश के ज्योतियाँ[e]
हों ये पिण्ड नियत समयों, दिनों तथा वर्षों
के संकेत चिन्ह बनें। 15 वे पृथ्वी पर प्रकाश
देने के लिए आकाश के दायरे में ज्योतियाँ
ठहरें," और ऐसा हो गया। 16 उन में से बड़ी
ज्योति को दिन पर शासन करने के लिए और
छोटी ज्योति को रात पर शासन करने के
लिए बनाया। इसी तरह से प्रभु ने तारों को
भी बनाया 17 प्रभु ने उन दोनों को आकाश
मण्डल में इसलिए रखा ताकि उन से पृथ्वी
पर रोशनी हो और अंधेरे-उजियाले में फ़र्क
हो। 18 और वे दिन व रात पर शासन करें:
यह सब देख कर प्रभु को अच्छा लगा।
19 फिर शाम हुई और उसके बाद सुबह।
इस तरह चौथा दिन हो गया। 20 फिर प्रभु ने
कहा, "पानी ज़िन्दा जन्तुओं से बहुत भर जाए
और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश में उड़ें।"
21 इसलिए प्रभु ने कई तरह के बड़े-बड़े
जल जन्तुओं और उन सब प्राणियों की सृष्टि
की,जो चलते-फिरते हैं और तैरते हैं । इन
प्राणियों के तमाम प्रकार से जल भर गया और
प्रभु ने तरह-तरह के पक्षियों को भी बनाया।
यह सभी प्रभु को अच्छा लगा। 22 प्रभु ने ये
आशीष के शब्द कहे, "फूलो-फलो, सागर
के जल में भर जाओ और पृथ्वी पर पक्षियों
की गिनती बढ़ जाए।" 23 तत्पश्चात् संध्या
हुई और फिर प्रातःकाल इस तरह पाँचवां
दिन खत्म हुआ। 24 फिर प्रभु ने कहा, "पृथ्वी
पर तरह तरह के जीवित प्राणी अर्थात घरेलू
पशु, रेंगने वाले जन्तु और जंगल के जानवर

[a] 1.1 शुरुआत [b] 1.3 उजियाला [c] 1.10 पृथ्वी [d] 1.12 प्रकार [e] 1.14 ज्योति-पिण्ड

उनकी अपनी जाति के अनुसार उत्पन्न हो।
और ऐसा हुआ भी। 25 और प्रभु ने दुनिया
के जाति-जाति के जंगली जानवरों, घरेलू
जानवरों और भूमि पर रेंगने वाले जंतुओं
को बनाया और प्रभु ने देखा कि यह अच्छा
है। 26 फिर प्रभु ने कहा, “हम इन्सान को
अपने स्वभाव की समानता में बनाएँ। और
वे[a] समुन्दर की मछलियों, आकाश में उड़ने
वाली चिड़ियों, सारी पृथ्वी और सब रेंगने
वाले प्राणियों पर अधिकार रखें।” 27 तब
प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप[b] की तरह
नर-नारी के रूप में बनाया। 28 प्रभु ने उन्हें इन
शब्दों में आशीर्वाद दिया, “फूलो-फलो और
दुनिया को भर दो और उसे अपने वश में कर
लो, समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों
और ज़मीन पर चलने वाले हर जीव-जन्तु पर
अधिकार[c] रखो।” 29 फिर प्रभु ने उन से कहा,
“सुनो जितने बीज वाले छोटे-छोटे पौधे सारी
पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने पेड़ों में बीज
वाले फल होते हैं, वे सब मैंने तुम्हारे खाने
के लिए दिए हैं। 30 जितने पृथ्वी के पशु,
आकाश के पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले
जन्तु हैं, जिन में प्राण[d] है, उन सब के भोजन
के लिए मैंने सभी हरे-हरे छोटे झाड़ दिए हैं।”
और ऐसा हुआ भी। 31 प्रभु ने अपनी सब
बनाई हुई चीजों को देखा, कि वे सब बहुत
अच्छी हैं। तब शाम हो गई और उसके बाद
सुबह। इस प्रकार छठवाँ दिन समाप्त हुआ।

2 इस तरह आकाश, पृथ्वी और जो कुछ
उन में है, सब कुछ का बनाया जाना
समाप्त[e] हुआ। 2 जो कुछ प्रभु कर रहे थे,
उसे छः दिन में समाप्त करके सातवें दिन से
निर्माण काम को रोक दिया। 3 तब प्रभु ने
सातवें दिन को आशीषित किया और अन्य
दिनों से अलग[f] भी रखा क्योंकि यह वही
दिन है जो सृष्टि निर्माण कार्य के बाद का
दिन था। 4 आकाश[g] और पृथ्वी के बनाए
जाने का ब्यौरा यह है कि जिस दिन प्रभु ने
पृथ्वी और आकाश को बनाया 5 उस दिन
तक मैदान का कोई पौधा ज़मीन पर न था
और न ही मैदान का कोई छोटा पेड़ उगा
था, क्योंकि प्रभु ने पृथ्वी पर पानी नहीं भेजा
थाऔर भूमि पर खेती करने के लिए इन्सान
भी नहीं था। 6 लेकिन पृथ्वी की सारी सतह
कुहरे से सिंच रही थी। 7 तब प्रभु ने आदम
को ज़मीन की मिट्टी से बनाया, और उसके
नथनों[h] में ज़िन्दगी की सांस को डाला और
आदम जीवित प्राणी बन गया। 8 तब प्रभु
परमेश्वर ने पूर्व की तरफ़ अदन में एक,
बगीचा लगा कर आदम को वहीं बसा दिया।
9 प्रभु ने भूमि से मनोहर[i] दिखने वाले ऐसे
पेड़ भी उगाए, जो स्वादिष्ट फल देते थे।
बगीचे के बीच में उन्होंने जीवन का वृक्ष और
भलाई-बुराई के ज्ञान का वृक्ष भी लगाया।
10 उस बगीचे को सींचने के लिए एक बड़ी
नदी अदन से निकल कर चार धाराओं[j] में
बँट गई। 11 पहली नदी का नाम पीशोन है,
यह वही है जो हवीला नामक सारे देश को
घेरे हुए है, जहाँ सोना मिलता है। 12 इस देश
का सोना चोखा[k] होता है, यहाँ मोती और
सुलैमानी पत्थर भी पाए जाते हैं। 13 दूसरी
नदी का नाम गीहोन है, यह कूश के सारे
देश को घेरे हुए है। 14 तीसरी नदी का नाम
हिद्देकेल है, यह वही है जो असीरिया के पूर्व
की ओर बहती है। चौथी नदी का नाम फ़रात
है। 15 प्रभु ने आदम को अदन के बगीचे में
इसलिए रखा था कि वह काम[l] करे और

[a] 1.26 मनुष्य [b] 1.27 स्वभाव [c] 1.28 नियंत्रण [d] 1.30 जीवन [e] 2.1 खत्म [f] 2.3 पवित्र
[g] 2.4 आकाश [h] 2.7 नाक [i] 2.9 खूबसूरत [j] 2.10 शाखाओं [k] 2.12 बहुत शुद्ध [l] 2.15 मेहनत

बगीचे की रक्षा भी। 16 प्रभु ने आदम को यह
आज्ञा दी थी कि वह किसी भी पेड़ के फलों
को बिना रोक-टोक खा सकता है, 17 लेकिन
भलाई-बुराई की पहचान का जो पेड़ था, उस
का फल वह न खाए, इसलिए कि जिस दिन
वह उस का फल खाएगा, उसी दिन अवश्य
मर जाएगा। 18 फिर प्रभु ने कहा, "इस पुरुष
का अकेला रहना अच्छा नहीं, मैं इसके लिए
इस से मेल खाता हुआ सहायक[a] बनाऊँगा।
19 पृथ्वी पर बनाए गए सभी जीव जन्तुओं
और पक्षियों को प्रभु ने आदम को सौंपा
कि वही उनको नाम दे। 20 इसलिए आदम[b]
ने सब जाति के घरेलू जानवरों, उड़ने वाले
पक्षियों और सब तरह के बनैले जानवरों के
नाम रखे। लेकिन आदम से मिलता जुलता
कोई प्राणी नहीं था जो उस का सहायक
ठहरे। 21 तब प्रभु ने पुरुष को गहरी नींद में
डाल दिया। ऐसी हालत में उसके बाजू से
एक पसली निकाल कर वहाँ मांस भर दिया।
22 तब प्रभु उस निकाली हुई पसली से एक
स्त्री बना कर पुरुष[c] के पास ले आए। 23 तब
आदम बोल उठा, "यह मेरी हड्डियों में की
हड्डी और मेरे मांस में का मांस है। इसका नाम
नारी होगा, क्योंकि यह नर में से बनायी गई
है।" 24 इस वजह से पुरुष अपने माता-पिता
को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला[d] रहेगा,
और वे दोनों एक ही तन[e] होंगे। 25 आदम
और उसकी पत्नी बिना वस्त्र के थे और उन्हें
शर्म नहीं महसूस होती थी।

3 प्रभु परमेश्वर ने जितने बनैले जानवर
बनाए थे, उन सब में साँप धूर्त था, उसने
स्त्री से कहा, "क्या प्रभु ने सचमुच कहा है
कि तुम इस बगीचे के किसी पेड़ के फल
को मत खाना? 2 स्त्री ने साँप से कहा, "इस
बगीचे के पेड़ों के फल हम खा सकते हैं?
3 लेकिन जो पेड़ बगीचे के बीच में है, उसके
फल के खाने के बारे में मनाही है, यहाँ तक
कि छूने की भी। प्रभु की आज्ञा न मानने से
हमारी मौत हो जाएगी। 4 तब साँप ने स्त्री
से कहा, "तुम हरगिज़ न मरोगे। 5 वरन् प्रभु
खुद जानते हैं कि जिस दिन तुम उस का
फल खाओगे, उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल
जाएँगी[f]। और तुम भले-बुरे का ज्ञान पाकर
प्रभु के समान[g] हो जाओगे।" 6 अतः जब स्त्री
ने देखा कि उस पेड़ का फल खाने के लिए
अच्छा, देखने में मनभावना और बुद्धि देने[h]
लायक भी है, उसने फल तोड़ा, खुद खाया
और अपने पति को भी खिलाया 7 तब उन
दोनों की आँखें खुल गईं[i] और उन्हें नंगेपन[j]
का एहसास हुआ इसलिए उन्होंने अंजीर के
पत्ते जोड़-जोड़ कर लंगोट बना लिए। 8 फिर
उन्हें दिन के ठण्डे समय बगीचे में प्रभु की
मौजूदगी का एहसास हुआ। 9 पुरुष और स्त्री
दोनों ही पेड़ों के बीच छिपने लगे। तब प्रभु
ने आदम[k] से पूछा, "आदम, तुम कहाँ हो?
10 उसने कहा, "बगीचे में आपकी आवाज़
सुनते ही मैं डर गया क्योंकि मुझे लगा कि मेरी
देह ढँकी हुयी नहीं है इसलिए मैं छिप गया।
11 प्रभु बोले, "यह तुम्हें किस ने बताया कि
तुम नंगे हो[l] क्या तुमने उस पेड़ के फल को
खा लिया है, जिसे खाने के लिए मैंने तुम्हें मना
किया था?" 12 आदम ने कहा, "जिस स्त्री
को आपने मेरे साथ रहने को दिया है, उसी ने
उस पेड़ का फल मुझे दिया और मैंने खाया।"
13 तब प्रभु ने स्त्री से कहा, "तुमने यह क्या

[a] **2.18** मददगार [b] **2.20** प्रथम पुरुष [c] **2.22** आदम [d] **2.24** जुड़ा [e] **2.24** नया परिवार [f] **3.5** तुम्हारा विवेक जाग जाएगा [g] **3.5** ज्ञानी और शक्तिशाली [h] **3.6** अक्ल देने [i] **3.7** या विवेक जाग गया [j] **3.7** अपनी सही शारीरिक हालत [k] **3.9** पुरुष [l] **3.11** कुछ पहने हुए नहीं हो

किया?" स्त्री ने कहा, "साँप ने मुझे बहका
दिया और मैंने खा लिया।" 14 इसके बाद प्रभु
ने साँप से कहा, "तुम्हारी इस करतूत की
वजह से तुम ही घरेलू और बनैले जानवरों से
अधिक दण्डित[a] हो ,पेट के बल चला करोगे
और ज़िन्दगी भर मिट्टी चाटते रहोगे। 15 मैं
तुम्हारे और स्त्री के बीच में, तुम्हारे वंश और
इसके वंश के बीच में दुश्मनी उत्पन्न करूँगा।
वह तुम्हारे सिर को कुचल[b] डालेगा और तुम
उसकी एड़ी को डसोगे।" 16 तब प्रभु ने स्त्री
से कहा, '' बच्चों के गर्भधारण और जनने
की तुम्हारी पीड़ा बढ़ गई है। पति से तुम्हारी
अपेक्षा होगी,लेकिन वह तुम्हें अपने अधीन
रखना चाहेगा। 17 इसके पश्चात् प्रभु ने आदम
से कहा, "क्योंकि तुमने अपनी पत्नी की बात
मानी और जिस पेड़ का फल खाने के लिए
मैंने मना किया था, खाया इसलिए तुम्हारे
साथ भूमि भी दण्डित[c] है। तुम उसकी उपज
जीवन भर दुख के साथ खाया करोगे। 18 भूमि
तुम्हारे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी
और तुम खेत की फ़सल खाओगे 19 तुम माथे
के पसीने[d] का खाना खाओगे और अंत में
मिट्टी में मिल जाओगे क्योंकि तुम उसी में से
निकाले गए हो!" 20 आदम ने अपनी पत्नी
का नाम हव्वा रखा क्योंकि दुनिया में सब
मनुष्यों की आदि माता वही हुई। 21 और प्रभु
ने आदम और उसकी पत्नी के लिए खाल के
कपड़े बना कर उन्हें पहना दिए। 22 तब प्रभु
ने कहा, "देखो, यह इन्सान भले और बुरे का
ज्ञान पाकर हम में से एक की तरह हो गया
है। कहीं ऐसा न हो वह अपना हाथ बढ़ा
कर जीवन के पेड़ का फल तोड़ कर खाए
और हमेशा जीवित रहे" 23 इसलिए प्रभु ने
उसे अदन के बगीचे से बाहर निकाल दिया
कि उसी ज़मीन पर खेती करे, जिस की मिट्टी
से उसे बनाया गया था। 24 और जीवन के पेड़
की रक्षा करने के लिए अदन के बाग के पूर्व
की तरफ़ करूबों और चारों तरफ़ घूमने वाली
ज्वालामय तलवार को नियुक्त कर दिया।

4 जब आदम अपनी पत्नी के पास गया
तब उसने गर्भवती होकर कैन को जन्म
दिया जिस का नाम उन्होंने कैन रखा। हव्वा
बोली, "मैंने इस पुरुष को प्रभु की कृपा
से पाया है।" 2 जब हव्वा का दूसरा बेटा
उत्पन्न हुआ, तो उस का नाम हाबिल रखा
गया। बड़े होने पर कैन खेतिहर किसान बन
गया और हाबिल भेड़-बकरी चराने वाला
चरवाहा। 3 समय के अन्तराल में अपनी
भूमि की उपज में से, कैन कुछ हिस्सा प्रभु
को भेंट देने के लिए आया। 4 हाबिल भी
अपने भेड़-बकरियों के कई एक पहलौठे बच्चे
भेंट स्वरूप लाया। प्रभु ने उसकी भेंट को
स्वीकार किया। 5 लेकिन कैन और उसकी
कुर्बानी को प्रभु ने कबूल नहीं किया। इस
वजह से कैन को गुस्सा आया और उसके
चेहरे पर उदासी छा गयी। 6 तब प्रभु ने कैन से
एक सवाल किया,"तुम क्रोधित क्यों हो और
तुम्हारा चेहरा उदास क्यों है? 7 उचित काम
करने पर तुम ग्रहण योग्य होगे। लेकिन उचित
न करने पर सावधान हो जाना। अपराध तुम्हें
अपनी मुट्ठी में करने के लिए ताक में रहता है।
लेकिन होना यह चाहिए कि तुम उसे अपने
वश में करो।" 8 एक दिन कैन ने अपने भाई
हाबिल को खेत में चलने के लिए कहा। वहीं
पर उसने अपने भाई का खून कर डाला।
9 तब प्रभु ने कैन से पूछा, "तुम्हारा भाई
कहाँ है?" उसने कहा, "मुझे क्या मालूम,
क्या मैं उस का चौकीदार हूँ? 10 प्रभु बोले,
"यह तुमने क्या किया? धरती में से तुम्हारे

[a] **3.14** शापित [b] **3.15** रौंद [c] **3.17** प्रभावित [d] **3.19** अपनी मेहनत

भाई का खून मेरी तरफ़ चिल्लाकर इन्साफ़ की
माँग कर रहा है। 11 इसलिए अब ज़मीन जिस
ने तुम्हारे भाई का खून पीने के लिए अपना
मुँह खोला है, प्रभावित है। 12 तुम्हारी ज़मीन
से तुम्हें पूरी फसल नहीं मिलेगी, तुम इस
दुनिया में आवारा और भगोड़े रहोगे।" 13 तब
कैन ने प्रभु से कहा, "यह सज़ा मेरे सहने से
बाहर है। 14 देखिए, आपने आज मुझे खदेड़
दिया है और मैं आपकी उपस्थिति से भी
हटा दिया जाऊँगा। मैं पृथ्वी पर आवारा और
भगोड़ा रहूँगा और जो कोई मुझे पाएगा, मुझे
मार डालेगा।" 15 इसलिए प्रभु ने उससे कहा,
"इस कारण जो कोई कैन का खून करेगा,
उससे सात गुणा बदला लिया जाएगा।" और
प्रभु ने कैन के लिए एक निशान ठहराया,
ताकि कोई उसे पाकर मार न डाले। 16 तब
कैन परमेश्वर की उपस्थिति से निकला और
अदन के पूर्व में नोद नामक देश में जाकर
बस गया। 17 कैन के विवाह के बाद उस
का एक पुत्र हुआ, जिस का नाम हनोक रखा
गया। कैन ने एक नगर भी बसा लिया जिस
का नाम भी उसने हनोक रखा। 18 हनोक
से ईराद, ईराद से महूयाएल, महूयाएल से
मतूशाएल और मतूशाएल ने लेमेक को जन्म
दिया। 19 लेमेक ने दो पत्नियाँ कर ली। उन
में से एक का नाम आदा और दूसरी का
सिल्ला था। 20 आदा से याबाल पैदा हुआ।
वह उन सब का पूर्वज हुआ जो तंबुओं में
रहते और पशु-पालन करते थे। 21 उसके
भाई का नाम यूबाल था। वह वीणा और
बांसुरी बजाने वालों का पूर्वज हुआ। 22 सिल्ला
ने तुमबल-कैन को जन्म दिया। वह कांसे
और लोहे की हर तरह की चीजों का बनाने
वाला हुआ। तूबल-कैन की बहन नामा थी।
23 लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा, "हे आदा
और सिल्ला, मेरी बात सुनो, हे लेमेक की
पत्नियों मेरी बात पर ध्यान दो, मैंने एक
जवान पुरुष को जिस ने मुझे घायल किया
और चोट पहुँचायी थी, मार डाला है। 24 यदि
कैन का बदला सात गुना, तो लेमेक सतहत्तर
गुणा चुकाया जाएगा।" 25 आदम और हव्वा
से फिर एक बेटा हुआ जिस का नाम उसने
शेत रखा। उन्होंने कहा, "परमेश्वरने हाबिल
के बदले जिस का खून कैन ने किया था, हमें
एक और पुत्र दिया है। 26 इसी शेत के बड़े
होने और शादी होने के बाद एक बेटा हुआ
जिसे उन्होंने एनोश कहा। उसी समय से लोग
परमेश्वरका नाम लेकर प्रार्थना करने लगे।

5 आदम की वंशावली ऐसी है। प्रभु ने
मनुष्य को अपने स्वभाव की तरह ही
स्वभाव दिया । 2 नर-नारी के रूप में प्रभु ने
उन्हें बनाया और आशीर्वाद दिया। आदम के
बनाए जाने के दिन ही उस का नाम आदम
रखा गया था। 3 एक सौ तीस साल की उम्र
में आदम-हव्वा को बेटा हुआ, उस का नाम
उन्होंने शेत रखा था। 4 शेत के जन्म के बाद
आदम आठ सौ साल जीवित रहा। उसके
और बेटे-बेटियाँ भी हुईं। 5 नौ सौ तीस साल
की उम्र में वह मर गया। 6 शेत के एक सौ
पाँच वर्ष के होने पर एनोश उत्पन्न हुआ।
7 एनोश के पैदा होने के बाद शेत आठ सौ
सात वर्ष जीवित रहा। इसके अलावा उसके
और भी बेटे-बेटियाँ हुए। 8 शेत जब नौ सौ
बारह वर्ष का था, तभी उसकी मृत्यु हुई।
9 एनोश के नब्बे वर्ष की आयु में कनान
उत्पन्न हुआ। 10 कनान के जन्म के बाद एनोश
आठ सौ पन्द्रह साल जीवित रहा। उसके
और पुत्र-पुत्रियाँ भी हुए। 11 जब वह नौ सौ
पाँच साल का था, तभी उसकी मौत हो
गयी। 12 जब कनान सत्तर वर्ष का हुआ, तब
उस से महललेल उत्पन्न हुआ। 13 महललेल

के जन्म के बाद कनान आठ सौ चालीस
साल तक ज़िन्दा रहा। उसे छोड़कर उसके
और बेटे-बेटियाँ भी हुए। 14 नौ सौ दस वर्ष
की आयु में वह मर गया। 15 येरेद के जन्म
के समय महललेल पैंसठ साल का था।
16 उसके उत्पन्न होने के बाद उसके और
बेटे-बेटियाँ हुई और वह आठ सौ तीस साल
तक जीवित रहा। 17 उसके मरने के समय
वह आठ सौ पन्चानवे वर्ष का था। 18 एक
सौ बासठ वर्ष की आयु में उससे हनोक
पैदा हुआ। 19 हनोक के पैदा होने के बाद
येरेद आठ सौ साल जीवित रहा तथा उसके
तमाम बेटे-बेटियाँ हुए। 20 नौ सौ बासठ साल
की आयु में वह मर गया। 21 पैंसठ साल
की उम्र में हनोक से मतूशेलह उत्पन्न हुआ।
22 मतूशेलह के जन्म के बाद हनोक तीन सौ
वर्ष तक प्रभु की इच्छा में चलता रहा तथा
उसके और बच्चे भी पैदा हुए। 23 हनोक तीन
सौ पैंसठ वर्ष तक जीवित रहा, 24 सारी उम्र
उसने प्रभु की इच्छा के अनुसार बिताई।
अचानक ही उसे प्रभु ने जीते जी, धरती पर
से उठा लिया। 25 एक सौ सत्तासी वर्ष की
उम्र में मतूशेलह से लेमेक उत्पन्न हुआ था।
26 लेमेक के जन्म के बाद मतूशेलह सात
सौ बयासी साल ज़िन्दा रहा। उसके और भी
बच्चे हुए। 27 नौ सौ उनहत्तर साल की उम्र में
उस का देहान्त हो गया। 28 लेमेक की एक
सौ बयासी वर्ष की आयु में उसको एक पुत्र
हुआ। 29 उसने यह कह कर उस का नाम नूह
रखा, “यह हमारी मेहनत से और हमारे हाथों
की मेहनत से जो हम करते हैं, जो प्रभु द्वारा
शापित इस भूमि के कारण है वह हम को
शान्ति देगा।” 30 नूह के जन्म के बाद लेमेक
पाँच सौ पचानवे साल ज़िन्दा रहा और उसके
भी बेटे-बेटियाँ पैदा हुई। 31 लेमेक की कुल
आयु सात सौ सतहत्तर वर्ष की थी, जब उस
का देहान्त हुआ। 32 और नूह पाँच सौ साल
का हुआ, और नूह से शेम, और हाम, और
येपेत का जन्म हुआ।

6 धीरे-धीरे मनुष्य धरती पर बढ़ने लगे।
2 तब प्रभु के पुत्रों को मनुष्य की पुत्रियाँ
खूबसूरत लगीं और जिस ने जिस किसी को
चाहा, अपनी पत्नी बना लिया। 3 तब प्रभु
ने कहा, मनुष्य के साथ मेरा आत्मा हमेशा
संघर्ष करता नहीं रहेगा, क्योंकि वह तो देह
है। उसकी उम्र 120 साल तक की होगी।
4 उन दिनों में धरती पर नफ़ीली लोग रहा
करते थे। प्रभु के बेटों ने इन्सान की बेटियों
से संबन्ध करके बच्चे पैदा किए। यह पुराने
समय के ताकतवर और मशहूर लोग थे।
5 फिर प्रभु ने पृथ्वी पर मनुष्य की बढ़ती
हुई दुष्टता को देखा। यह भी कि मनुष्य के
मन का हर ख्याल बुरा ही होता है। 6 मनुष्य
के बनाए जाने पर प्रभु को दुख भी हुआ।
7 तब प्रभु ने कहा, “जिस मनुष्य को मैंने
बनाया था, उसे धरती पर से मिटा डालूँगा।
मनुष्य, जानवर, रेंगने वाले प्राणी, उड़ने वाले
पक्षी-सभी को खत्म कर डालूँगा। मैंने इन्हें
बेकार बनाया।” 8 लेकिन नूह पर प्रभु की
मेहरबानी बनी रही। 9 नूह खरा और अपने
लोगों में अच्छे चाल-चलन का आदमी था।
10 नूह के तीन बेटे हुए, जिस का नाम शेम,
हाम और येपेत था। 11 प्रभु की निगाह में
दुनिया भ्रष्ट हो गयी थी और हिंसा से भर
चुकी थी। 12 सब लोगों ने अपनी-अपनी
चाल-चलन को बिगाड़ लिया था। 13 तब प्रभु
ने नूह से कहा, “इसलिए कि पृथ्वी हिंसा से
भर गई है, मैंने सभी को बर्बाद कर डालने का
फ़ैसला किया है। 14 तुम अपने लिए तमाम
कमरों सहित, गोपेर की लकड़ी का एक
जहाज़ बनाओ और उसके अंदर बाहर राल

लगाना। 15 इस जहाज़ की लंबाई तीन सौ
हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊँचाई तीन सौ
हाथ हो। 16 जहाज़ में एक खिड़की बना कर
उसके एक हाथ ऊपर से छत डालना और
जहाज़ में एक तरफ़ दरवाज़ा रखना। उसमें
पहला, दूसरा और तीसरा हिस्सा बनाना।
17 सुनो, मैं खुद आकाश के नीचे के सब
प्राणियों को जिन में जीवन की सांस है, बर्बाद
करने के लिए पृथ्वी पर जल प्रलय लाने पर
हूँ। पृथ्वी पर जो कुछ है, वह सब नष्ट हो
जाएगा। 18 लेकिन मैं तुम्हारे साथ यह वायदा
करता हूँ, इसलिए तुम अपने बेटों, पत्नी
और बहुओं के साथ जहाज़ में चले जाना।
19 अपने साथ सब जीवित प्राणियों में से तुम
प्रत्येक जाति के दो-दो अर्थात् नर और मादा
अपने साथ जहाज़ में ले जाना ताकि वे तुम्हारे
साथ जीवित बचें। 20 हर जाति के पक्षी और
पशु और भूमि पर रेंगने वाले प्रत्येक जाति
के जंतुओं का एक-एक जोड़ा तुम्हारे पास
आएगा, कि वे जीवित बचें। 21 और तुम सब
तरह की खाने की चीजें लेकर अपने पास
इकट्ठा कर लेना जो तुम्हारे लिए और तुम्हारे
साथ के प्राणियों के लिए होंगी। 22 प्रभु की
इस आज्ञा के अनुसार नूह ने सब कुछ पूरा
किया।

7 प्रभु ने नूह से कहा, “तुम अपने पूरे
परिवार सहित जहाज़ में दाखिल हो
जाओ, क्योंकि इस पीढ़ी में सिर्फ तुम ही मुझे
सही इन्सान दिखते हो। 2 तुम अपने साथ
शुद्ध पशु की हर एक जाति में से नर और
उसकी मादा के सात-सात जोड़े लेना। जो
अशुद्ध पशु हैं, उन में से दो, अर्थात नर और
उसकी मादा। 3 आकाश के पक्षियों में से भी
सात-सात, अर्थात नर और मादा लेना, कि
उनका वंश बचकर सारी पृथ्वी के ऊपर बना
रहे। 4 क्योंकि सात दिन बीतने पर मैं पृथ्वी
पर चालीस दिन और चालीस रात तक पानी
बरसाता रहूँगा। जितनी चीजें मैंने बनायी हैं,
सब को पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा। 5 प्रभु
के कहने के अनुसार नूह ने किया। 6 जब
पृथ्वी पर जल प्रलय आया, उस समय नूह
की उम्र छः सौ साल की थी। 7 जल प्रलय
से बचने के लिए नूह अपने बेटों, पत्नी और
बहुओं के साथ जहाज़ में गया। 8 प्रभु के
निर्देश के अनुसार शुद्ध, अशुद्ध पशु-पक्षियों
और ज़मीन पर रेंगने वाले 9 हर तरह के
जानवरों में से दो-दो अर्थात नर और मादा
करके नूह के साथ जहाज़ में अंदर गए।
10 सात दिन के बाद प्रलय का पानी पृथ्वी
पर आ गया। 11 नूह के जीवन के छः सौवें
साल के दूसरे महीने के ठीक सत्रहवें दिन
गहरे जल के सब सोते फूट पड़े और आकाश
की खिड़कियाँ खुल गयीं। 12 और पृथ्वी
पर चालीस दिन-चालीस रात बारिश होती
रही। 13 उसी दिन नूह उसकी पत्नी उसके
बेटों शेम, हाम, येपेत और बहुओं के साथ
जहाज़ में गए। 14 हर जाति के बनैले जानवर,
पालतू जानवर और रेंगने वाले जीव-जन्तु
तथा सभी पक्षी भी। 15 इस तरह सभी प्राणी,
दो-दो करके जहाज़ में गए। 16 प्रभु की आज्ञा
के मुताबिक वे सभी जाति के प्राणियों के
नर-मादा थे। उसके बाद प्रभु ने जहाज़ का
दरवाज़ा बंद कर दिया। 17 और पृथ्वी पर
चालीस दिन[a] तक प्रलय होता रहा। पानी
बढ़ते जाने से जहाज़ ऊपर उठने लगा।
18 धरती पर पानी बहुत बढ़ गया और जहाज़
पानी की सतह पर तैरने लगा। 19 पृथ्वी पर
पानी इतना ज़्यादा बढ़ गया कि उसने सभी
ऊँचे से ऊँचे पहाड़ तक को डुबो दिया।

[a] **7.17** एक बड़े अर्से

20 पानी, पंद्रह हाथ ऊपर बढ़ गया, जिस
की वजह से पहाड़ डूब गए थे। 21 पृथ्वी
पर चलने वाले प्राणी, पक्षी, पशु, जंगली
जानवर, कीड़े मकोड़े जो इस पृथ्वी पर बहुत
बढ़ चुके थे, वे और सारे लोग बर्बाद हो गए।
22 जितने सूखी ज़मीन पर थे और जिस में
जीवन की सांस थी, सब मर गए। 23 इस तरह
प्रभु ने भूमि पर से हर जीवित प्राणी को खत्म
कर डाला जीव-जंतु तथा आकाश के पक्षी ये
सभी पृथ्वी पर से मिटा दिए गए। सिर्फ नूह
तथा जितने उसके साथ जहाज़ में थे, वे ही
बच पाए। 24 पृथ्वी पर पानी एक सौ पचास
दिन तक रहा।

8 प्रभु ने नूह, वन पशु और घरेलू पशु जो
उसके साथ जहाज़ पर थे, उन सभी की
सुधि ली; फिर प्रभु ने पृथ्वी पर हवा बहायी
और पानी घटने लगा। 2 गहरे समुद्र के सोते
और आकाश के झरोखे बंद हो गए तथा
बरसात थम गयी। 3 एक सौ पचास दिनों के
बाद पृथ्वी पर से पानी घटने लगा। 4 सातवें
महीने के सत्रहवें दिन जहाज़ अरारात पहाड़
पर जा टिका। 5 दसवें महीने तक जल घटता
गया और दसवें महीने के पहिले दिन को
पहाड़ों की चोटियाँ दिखलायी दीं। 6 चालीस
दिन के बाद नूह ने जहाज़ की खिड़की को
खोलकर एक कौआ उड़ा दिया। 7 धरती पर
पानी सूखने तक वह इधर- उधर उड़ता रहा।
8 फिर उसने एक कबूतरी को भी उड़ाया,
ताकि वह जाने कि भूमि पर से जल हट
गया है या नहीं। 9 सारी धरती पर पानी ही
पानी था। उस कबूतरी के पैर धरने के लिए
भी जगह न मिलने की वजह से उसे वापस
जहाज़ पर लौटना पड़ा। नूह ने अपना हाथ
बढ़ाया और अपने पास भीतर ले लिया।
10 सात दिन बाद फिर उसने कबूतरी को
जहाज़ में से उड़ा दिया। 11 शाम को जब
कबूतरी लौटी तो उसकी चोंच में जलपाई
की एक पत्ती थी। इस से नूह को पृथ्वी पर से
जल घट जाने का सबूत मिल गया। 12 दोबारा
सात दिन बाद फिर से नूह ने कबूतरी को
उड़ा दिया। इस बार वह वापस नहीं आयी।
13 छः सौ एक, साल के पहले महीने के पहले
दिन जब नूह ने जहाज़ की छत खोलकर
बाहर देखा तो पाया कि धरती सूख चुकी
है। 14 दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन तक
पृथ्वी पूरी तरह सूख गयी थी। 15 तब प्रभु
ने नूह से यह कहा, 16 “तुम अपने बेटों,
बहुओं और अपनी पत्नी के साथ जहाज़ के
बाहर आ जाओ। 17 पक्षी, पशु, रेंगने वाले
जन्तु जो तेरे संग हैं, उनको भी बाहर ले
आओ, ताकि वे बच्चे उत्पन्न करें और पृथ्वी
पर बढ़ जाएँ”। 18 तब नूह बेटों, पत्नी और
बहुओं समेत बाहर निकल आया। 19 सब
जंगली जानवर, रेंगने वाले जन्तु, पक्षी और
पृथ्वी पर चलने फिरने वाले सब जीव-जन्तु
अपनी-अपनी जाति के अनुसार जहाज़ में से
निकल आए। 20 फिर नूह ने प्रभु के लिए एक
वेदी बनाई और शुद्ध पशुओं और पक्षियों में
से कुछ को लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया
21 इस पर प्रभु ने सुखदायक सुगंध को पाकर
सोचा, “मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि
को तकलीफ़[a] नहीं दूँगा। हालांकि इन्सान के
मन में बचपन से जो कुछ पैदा होता है, वह
बुरा ही है। तौभी जिस तरह मैंने सब जीवों
को पानी से बर्बाद किया है, वैसा फिर कभी
न करूँगा। 22 अब से जब तक पृथ्वी बनी
रहेगी, तब तक बोना, फसल काटना, सर्दी,
गर्मी और ठंड का मौसम और रात -दिन बिना
रूके जारी रहेंगे।

[a] 8.21 सज़ा

9 फिर प्रभु ने नूह और उसके बेटों को
आशीष दी और कहा, “फूलो - फलो,
बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ।” 2 तुम्हारा
डर पृथ्वी के सब जानवरों, आकाश के सब
पक्षियों, ज़मीन पर रेंगने वाले जन्तुओं और
सागर की सब मछलियों पर बना रहेगा, ये
सब तुम्हारे वश में कर दिए गए हैं। 3 खाने
के लिए जैसे तुम्हें हरे-हरे छोटे पेड़ दिए
थे, वैसे ही चलने वाले जानवर भी तुम्हारे
लिए भोजन वस्तु ठहरेंगे। 4 लेकिन मांस को
खून के साथ मत खाना। 5 ऐसा करने पर
मैं तुम्हारी जान का बदला ज़रूर लूँगा। सब
पशुओं और मनुष्यों का बदला मैं लूँगा। 6 जो
कोई इन्सान का खून बहाएगा, उस का खून
इन्सान ही से बहाया जाएगा, क्योंकि प्रभु ने
इन्सान को अपने स्वभाव की तरह स्वभाव
दिया है। 7 तुम फलवंत हो, बढ़ते जाओ और
पृथ्वी पर बहुतायत से संतान उत्पन्न करके
उसे भर दो। 8 फिर प्रभु ने नूह और उसके
बेटों से कहा, 9 तुम्हारे और तुम्हारे बाद आने
वाली पीढ़ी के साथ मैं वाचा बाँधता हूँ
10 सब जीवित प्राणी, क्या पक्षी, घरेलू पशु,
जंगली जानवर व तमाम जन्तु जो जहाज़ से
निकले हैं उनके साथ मैं यह वाचा बाँधता
हूँ। 11 मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि पृथ्वी और
उस पर के प्राणियों को पानी से कभी भी
बर्बाद न करूँगा। 12 फिर प्रभु ने कहा,“यह
वाचा मैं अपने और तुम्हारे तथा उन सब
जीवित प्राणियों के साथ जो तुम्हारे संग हैं,
उनके साथ भी युग-युग के लिए बान्धता हूँ।
13 पृथ्वी और मेरे बीच इस वाचा का चिन्ह
आकाश में धनुष होगा। 14 जब मैं पृथ्वी पर
बादल फैलाऊँगा, तब बादल ही में धनुष
दिखेगा। 15 तब मेरी वाचा जो तुम्हारे और
सब जीवित प्राणियों के साथ बँधी है, उसको
मैं याद करूँगा तब ऐसा जल प्रलय फिर न
होगा, जिस से सब प्राणी बर्बाद हों। 16 जब
धनुष बादल में दिखाई देगा, तब मैं अपनी
उस वाचा[a] को याद करूँगा जो तुम्हारे और
मेरे बीच और हर एक ज़िन्दा प्राणी के साथ
बंधी है 17 फिर प्रभु ने नूह से कहा, “जो वाचा
मैंने दुनिया के सभी जीवधारियों के साथ
बाँधी है, उस का निशान यही है।” 18 जहाज़
में से बाहर आए नूह के बेटों का नाम शेम,
हाम और येपेत था। हाम कनान का पिता था।
19 ये तीन ही नूह के पुत्र हैं और इनका वंश
सारी धरती पर फैल गया। 20 नूह ने खेत में
काम करना शुरू किया और अंगूर का एक
बगीचा लगाया। 21 एक दिन अंगूर से बनी
दाखमधु[b] पीकर इतना मतवाला हो गया, कि
होश-हवास खो कर वस्त्रहीन तक हो गया।
22 कनान के पिता हाम ने नूह की ऐसी हालत
के बारे में अपने भाईयों को बतलाया। 23 तब
शेम और येपेत ने पीछे की तरफ़ उल्टा चल
कर अपने पिता की नंगी देह को बिना देखे
कपड़े से ढाँक दिया। वे अपना चेहरा पीछे
किए हुए थे। इसलिए उन्होंने अपने पिता को
वस्त्रहीन नहीं देखा। 24 नशा उतरने के बाद
नूह को मालूम पड़ा कि उसके छोटे बेटे ने
उसके साथ कैसा बर्ताव किया है। 25 वह
बोल उठा, “कनान शापित होः कनान अपने
भाई बंधुओं के गुलामों का गुलाम हो। 26 शेम
का प्रभु महान है, धन्य है, कनान शेम का
गुलाम बने 27 प्रभु येपेत के वंश को बढ़ाए
और वह शेम के तंबुओं में बसे और कनान
उस का गुलाम बनें। 28 जलप्रलय के बाद नूह

[a] 9.16 प्रतिज्ञा [b] 9.21 शराब

साढ़े तीन सौ साल तक जीवित रहा। 29 नूह साढ़े नौ सौ साल ज़िन्दा रहने के बाद मर गया।

10 शेम, हाम और येपेत नूह के बेटे थे। जलप्रलय के बाद उनके उत्पन्न होने वालों की वंशावली यह है। 2 येपेत के पुत्र गोमेर, मागोग, मार्दे, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास 3 गोमेर के पुत्र अशकनज, रीपत और तोगर्मा। 4 यावान के वंश में एलीशा, तर्शीश, कित्ती और दोदानी लोग 5 इनके वंश अन्य जातियों के द्वीपों के देशों में ऐसे बँट गए कि वे अलग-अलग भाषाओं, कुलों और जातियों के अनुसार अलग अलग हो गए। 6 हाम के बेटेः कूश, मिस्र, फूत और कनान हुए। 7 कूश के बेटे सबा, हवीला, सबता, रामा और सबूतका हुए और रामा के बेटे शबा और ददान थे। 8 कूश के वंश में निम्रोद हुआ, जो पृथ्वी का पहला वीर था। 9 वह प्रभु की निगाह में ज़बरदस्त शिकारी था, इसलिए यह कहावत चल पड़ी, 'प्रभु की निगाह में निम्रोद की तरह पराक्रमी शिकारी'। 10 उसके राज्य की शुरूवात शिनार देश में बाबेल, ऐरेख, अक्कद और कलने से हुई। 11 उस देश से वह असीरिया को चला गया और नीनवे, रहोबोतीर तथा कालह को बसाया। 12 नीनवे और कालह के बीच रेसेन को भी उसी ने बसाया, जो कि मुख्य नगर है। 13 मिस्र, लूदी, अनामी, लहाबी और नप्तूही का पिता हुआ। 14 पत्रूसी, कसलूही, जिस से पलिश्ती तथा कप्तोरी जाति निकली। 15 कनान से उस का जेठा पुत्र सीदोन पैदा हुआ और बाद में हित्ती 16 यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, 17 हिव्वी, अर्की, सीनी 18 अर्वदी, समारी, हमाती भी उत्पन्न हुए। बाद में कनानियों के कुल दूर-दूर तक फैल गए। 19 और कनानियों की सरहद से लेकर गरार की तरफ़ गाज़ा तक तथा सदोम, अमोरा, अदमा और सबोयीम की ओर लाशा तक थी। 20 ये ही अपने अपने कुलों, भाषाओं, देशों और जातियों के अनुसार हाम के वंशज हुए 21 फिर शेम के भी जो सब एबेर वंशियों का मूल पुरुष हुआ, और जो येपेत का ज्येष्ठ भाई था, बेटे उत्पन्न हुए 22 शेम के पुत्र एलाम, असीरिया, अर्पक्षद, लूद और अराम थे 23 तथा अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मश हुए। 24 अर्पक्षद, शेलह का पिता था और शेलह का पुत्र एबेर। 25 एबेर के दो बेटे हुए; एक का नाम पेलेग था, क्योंकि उसके समय में पृथ्वी बँट गई। उसके भाई का नाम योक्तान था। 26 योक्तान से अल्मोदाद, शेलेप, हसमीवेत, येरह 27 हदोराम, ऊजाल, दिक्ला, 28 ओबाल, अबीमाएल, शबा, 29 ओपीर, हवीला और योआब पैदा हुए। ये सभी योक्तान के पुत्र थे। 30 उनका निवासस्थान मेशा से लेकर सपारा की तरफ़, जो पूर्व में एक पहाड़ी प्रदेश है, फैला हुआ था। 31 ये ही अपने कुलों, भाषाओं और जातियों के मुताबिक शेम के वंशज हुए 32 ये अपनी-अपनी वंशावलियों तथा जातियों के अनुसार नूह के बेटों के कुल हैं, जल प्रलय के बाद इन्हीं में से जातियाँ बँट कर पृथ्वी भर में फैल गई।

11 सारी दुनिया में एक भाषा और एक बोली थी। 2 वे सभी पूर्व की तरफ़ से यात्रा करते हुए शिनार[a] देश पहुँचे और वहीं मैदान में बस गए। 3 आपस में उन्होंने कहा, "आओ, ईंटें बना कर आग में अच्छी तरह पकाएँ।" उन्होंने पत्थर की जगह ईंटों

[a] 11.2 बेबिलोन

का और चूने की जगह में मिट्टी के गारे का
इस्तेमाल किया। 4 फिर वे बोले, “आओ,
हम अपने लिए एक नगर और आकाश
तक ऊँची मीनार बना कर अपना नाम ऊँचा
करें और तित्तर-बितर भी न हो। 5 उनके
इस प्रयास के समय ही प्रभु[a] उपस्थित हुए।
6 उन्होंने कहा, “देखो, ये सब एक ही दल
के हैं और भाषा भी एक ही है। यदि वे
अपनी कोशिश में कामयाब हो गए तो उनके
लिए कुछ भी कर लेना असंभव नहीं होगा।
7 आओ, हम उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल
दें, ताकि वे एक दूसरे की बात समझ न
सकें। 8 इस तरह प्रभु ने उन्हें सारी दुनिया में
तित्तर-बितर कर डाला और वे अपने लक्ष्य
को पूरा न कर पाए। 9 इसलिए उस नगर का
नाम बाबेल पड़ा, क्योंकि वहाँ प्रभु ने सारी
पृथ्वी की भाषाओं में गड़बड़ी डाली थी और
वहीं से प्रभु ने उन्हें सारी दुनिया में बसा दिया।
10 शेम की वंशावली यह है। जलप्रलय के
दो साल बाद जब शेम सौ साल का था,
अर्पक्षद पैदा हुआ। 11 अर्पक्षद के जन्म के
बाद शेम पाँच सौ साल जीवित रहा और
उसके और भी बेटे-बेटी हुए। 12 अर्पक्षद की
पैंतीस साल की आयु में शेलह पैदा हुआ।
13 शेलह के जन्म के बाद अर्पक्षद के चार
सौ तीन साल की उम्र के दौरान बेटे-बेटियाँ
उत्पन्न हुई 14 तीस वर्ष की उम्र में शेलह ने
एबेर को जन्म दिया। 15 एबेर के जन्म के
बाद शेलह चार सौ तीन वर्ष तक जीवित रहा
और उसके अनेक बेटे बेटियाँ हुई। 16 एबेर
की चौंतीस वर्ष की आयु में पेलेग उत्पन्न
हुआ। 17 पेलेग के जन्म के बाद एबेर चार
सौ तीस वर्ष तक जीवित रहा तथा उसके
भी बेटे-बेटियाँ हुए। 18 पेलेग की तीस साल
की उम्र में रू उत्पन्न हुआ। 19 रू की पैदाईश
के बाद पेलेग दो सौ नौ वर्ष तक जीवित रहा
और अनेक पुत्र-पुत्रियों को जन्म दिया। 20 रू
की बत्तीसवीं वर्ष की आयु में उससे सरूग
पैदा हुआ। 21 सरूग के जन्म के बाद रू दो
सौ सात वर्ष तक जीवित रहा और उसके
और भी पुत्र-पुत्रियाँ थी। 22 जब सरूग तीस
वर्ष का था, तो उससे नाहोर उत्पन्न हुआ।
23 नाहोर के जन्म के पश्चात् सरूग दो सौ वर्ष
तक ज़िन्दा रहा और अनेक पुत्र-पुत्रियों को
जन्म दिया। 24 उन्तीस साल की उम्र में उससे
तेरह उत्पन्न हुआ। 25 तेरह के जन्म के बाद
नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष तक जीवित रहा
तथा उसके और भी पुत्र-पुत्रियाँ हुई। 26 सत्तर
वर्ष की उम्र में, तेरह से अब्राम, नाहोर और
हारान पैदा हुए। 27 तेरह की वंशावली यह है।
तेरह से अब्राम, नाहोर, हारान और हारान से
लूत का जन्म हुआ। 28 अपने पिता तेरह की
मौजूदगी में, कसदियों के ऊर नामक नगर
में, हारान की मौत हो गयी। 29 अब्राम और
नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की
पत्नी का नाम सारा और नाहोर की पत्नी का
नाम मिल्का था। यह उसी हारान की बेटी
थी जो मिल्का और यिस्का दोनों ही का पिता
था। 30 सारा बांझ होने की वजह से निःसंतान
थी। 31 तेरह ने अपने बेटे अब्राम उसकी
पत्नी सारा और पोते लूत को जो हारान का
बेटा था, साथ लिया। वह कसदियों के ऊर
से निकल कर कनान देश के लिए रवाना
तो हुआ, लेकिन हारान में ही टिक गया।
32 तेरह, दो सौ पाँच साल की उम्र में हारान
ही में मर गया।

12 प्रभु ने अब्राम से कहा, अपने देश
अपनी जन्म भूमि और अपने पिता
के घर को छोड़कर उस देश को चले

[a] **11.5** प्रभु

जाओ, जो मैं तुम्हें दिखाऊँगा. 2 मैं तुम से
एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा, तुम्हें आशीष दूँगा,
तुम्हारा नाम बड़ा करूँगा और तुम लोगों के
लिए आशीष के कारण बनोगे। 3 जो तुम्हें
आशीर्वाद दें उन्हें मैं आशीष दूँगा, जो तुम्हें
कोसे, उसे मैं सज़ा दूँगा। दुनिया के सारे लोग
तुम्हारे ज़रिए आशीष पाएँगे। 4 यह सुनने के
बाद अब्राम चल दिया। उसके साथ उस का
भतीजा, लूत भी हो लिया जब अब्राम हारान
देश में था, उस समय उसकी उम्र पचहत्तर
थी। 5 इसलिए अब्राम अपनी पत्नी सारा,
भतीजे लूत, इकट्ठे किए गए धन और हारान
में हासिल किए गए लोग को लेकर कनान
के लिए रवाना हो गया। 6 अब्राम उस देश के
बीच से जाते हुए शेकेम की उस जगह जहाँ
मोरे का बांज का पेड़ है पहुँचा। उन दिनों
वहाँ कनानी लोग रहा करते थे। 7 तब प्रभु
ने अब्राम से दर्शन में यह कहा, “यह देश मैं
तुम्हारे वंश को दूँगा। अब्राम ने वहाँ प्रभु के
लिए एक वेदी बनाई। 8 वहाँ से निकल कर
वह बेतेल के पूर्व की तरफ़ के पहाड़ पर
आया। जिस जगह उसने अपना तंबू खड़ा
किया, उसके पश्चिम में बेतेल और पूर्व की
तरफ़ में नेगेव ऐ हैं। वहाँ पर भी उसने प्रभु के
लिए एक वेदी बनायी और प्रभु से प्रार्थना की
9 वहाँ से निकल कर अब्राम दक्षिण की तरफ़
चल दिया। 10 उस देश में भयंकर आकाल
पड़ने पर वह मिस्र देश को चल पड़ा, ताकि
वही रहें। 11 मिस्र देश के पास पहुँचते ही
उसने अपनी पत्नी से कहा, “इसलिए कि
तुम खूबसूरत हो, 12 मिस्री लोग मेरा खून कर
डालेंगे, लेकिन तुम्हें छोड़ देंगे। 13 इसलिए
तुम बताना कि मैं तुम्हारा पति नहीं भाई हूँ,
इस से मेरी जान बच जाएगी।” 14,15 अब्राम
के मिस्र में आने पर साराह की सुन्दरता देख
कर, फ़िरौन के गवर्नरों ने फ़िरौन के सामने
उसकी बड़ाई की। इसलिए उसे फ़िरौन के
घर में रख लिया गया। 16 इसके बदले में
अब्राम के साथ अच्छा व्यवहार तो किया
ही गया, साथ ही उसे भेड़ बकरी, गाय-बैल,
गुलाम, गदहे-गदहियाँ और ऊँट दिए गए।
17 अब्राम की पत्नी साराह के फ़िरौन के घर
में रखे जाने के कारण प्रभु ने उसके परिवार
पर बड़ी-बड़ी मुसीबतें डालीं। 18 इसलिए
फ़िरौन ने अब्राम को बुलाकर कहा, “तुमने
यह क्यों नहीं बताया कि साराह तुम्हारी पत्नी
है? 19 तुमने तो कहा था कि वह तुम्हारी बहन
है, इसलिए उसे अपनी पत्नी बना लेने के
लिए मैंने उसे रख लिया था। इसलिए अपनी
पत्नी को लेकर तुम चले जाओ।” 20 फ़िरौन
की आज्ञानुसार उसके लोगों ने अब्राम को
उसकी सारी संपत्ति के साथ विदा कर दिया।

13 अब्राम ने अपनी पत्नी, भतीजे लूत
और सारी दौलत को लिया और
मिस्र छोड़कर कनान के दक्षिण भाग में आ
गया। 2 उसके पास भेड़ बकरी, गाय, बैल
और सोना-चाँदी थे। 3 दक्षिण देश से चल
कर वह बेतेल के पास उसी जगह पहुँचा,
जहाँ उसमें बेतेल और ऐ के बीच अपना तंबू
लगाया था। 4 यह जगह उसी वेदी की है,
जिसे उसने पहले बनाया था। वहीं अब्राम
ने फिर से बिनती की। 5 उसके भतीजे लूत
के पास भी तमाम तंबू और जानवर थे।
6 उनके पास बहुत कुछ होने की वजह से
उनका साथ में रहना दूभर हो गया 7 लूत और
अब्राम के नौकरों में झगड़ा होने लगा। उस
इलाके में उन दिनों कनानी और परिज्जी भी
रहा करते थे। 8 तब अब्राम ने लूत से कहा,
“इसलिए कि हम रिश्तेदार हैं, हमारे बीच
झगड़ा फ़साद अच्छा नहीं दिखता है 9 सारा
देश हमारे सामने है, इसलिए हम लोगएक

दूसरे से अलग हो जाएँ। यदि तुम बायीं
और जाओ, तो मैं दाहिनी तरफ़ जाऊँगा और
यदि तुम दाहिनी तरफ़ जाओ, तो मैं बायीं
तरफ़ जाऊँगा। 10 तब लूत ने देखा कि यरदन
नदी के पास वाली सारी तराई खूब हरी-भरी
है। सदोम और अमोरा के बर्बाद किए जाने
तक सोअर के रास्ते तक यह तराई प्रभु के
बगीचे और मिस्र देश की तरह उपजाऊ थी।
11 इसलिए लूत ने अपने लिए यरदन की सारी
तराई को चुन लिया। इस तरह से वे दोनों
एक दूसरे से अलग हो गए। 12 अब्राम कनान
देश ही में रह गया, लेकिन लूत उस तराई
के नगरों में रहने लगा और सदोम के पास
ही अपना डेरा डाला। 13 प्रभु की निगाह में
सदोम के लोग बहुत बुरे थे 14 लूत के अब्राम
से अलग हो जाने के बाद प्रभु ने अब्राम से
कहा, “जिस जगह पर तुम खड़े हो, वहीं से
खड़े-खड़े उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम की तरफ़
नज़र डालो।” 15 जितनी ज़मीन तुम देख
सकते हो, उस सब को मैं तुम्हें और तुम्हारी
आने वाली पीढ़ियों को युग-युग के लिए
दूँगा। 16 मैं तुम्हारे वंश को पृथ्वी की धूल
के किनकों की तरह बहुत करूँगा। यहाँ तक
कि जो कोई पृथ्वी की धूल के कणों को गिन
सकेगा, वही तुम्हारे वंश को गिन सकेगा।
17 उठो, और इस देश में चलो-फिरो, क्योंकि
मैंने इसे तुम्हारे लिए ठहराया है। 18 इसके
बाद अब्राम ने अपना तंबू उखाड़ा और मम्रे
के बांजों के बीच जाकर रहने लगा, जो हेब्रोन
में थी। वहाँ भी एक वेदी बनाई।

14 शिनार के राजा अम्रापेल, एल्लासार
के राजा अर्योक, एलाम के राजा
कदोली ओमेर और गोयीम के राजा तिदाल
के दिनों में ऐसा हुआ 2 कि उन्होंने सदोम
के राजा बेरा, अमोरा के राजा बिशी, अदमा
के राजा शिनार और सबोयीम के राजा
शेमेबेर तथा बेला, अर्थात सोअर के राजा
इन सब के साथ युद्ध किया 3 इन सब ने
सिद्दीम की तराई में अर्थात मृतक सागर
के पास एका किया 4 बारह साल तक ये
कदोर्लाओमेर के अधीन रहे। लेकिन तेरहवें
साल में उन्होंने बलवा किया 5 इसलिए
चौदहवें वर्ष में, कदोर्लाओमेर और उसके
साथी राजाओं ने आकर अश्तरोत-करनैम
में रपाइयों और हाम में जूजियों 6 और सेईर
नाम पहाड़ में होरियों को मारते-मारते उस
एल्पारान तक जो जंगल के पास है पहुँच
गए 7 वहाँ से लौटकर एन्मिशपात या कादेश
को आए। वहाँ आकर, उन्होंने अमालेकियों
के सारे देश और उन एमोरियों को भी जीत
लिया, जो हससोन्तामार में रहते थे 8 तब
सदोम, अमोरा, अदमा, सबोयीम और बेल[a]
के राजा निकले और सिद्दीम नाम घाटी में
उन से युद्ध की तैयारी की। 9 एलाम के
राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल,
शिनार के राजा अम्रापेल, और एहलासार
के राजा अर्योक के खिलाफ़ पांति बांधी।
10 सदोम और अमोरा के राजा भागते-भागते
सिद्दीम नाम तराई में जहाँ चिकनी मिट्टी के
गड्ढे ही गड्ढे थे, उन में गिर पड़े, लेकिन
जो बचे वे पहाड़ पर भाग गए। 11 तब वे
सदोम-अमोरा की सारी दौलत और खाने की
चीजों को लूटकर चले गए। 12 सदोम में रहने
वाले लूत को जो अब्राम का भतीजा था,
धन-दौलत सहित ले गए 13 तब भाग कर बचे
एक जन ने जाकर इब्री अब्राम को समाचार
दिया। अब्राम एमोरी मम्रे एश्कोल और आनेर
का भाई था, वह उसके बांज पेड़ों के बीच में
रहता था। इन लोगों ने अब्राम के साथ वाचा

[a] **14.8** सोअर

बांधी थी 14 अपने भतीजे की गुलामी की
खबर सुन कर अब्राम युद्ध कौशल में निपुण
तीन सौ अठ्ठारह शिक्षित, अस्त्र-शस्त्र धारित
लोगों के साथ दान तक पीछा करता गया।
15 अपने दासों के अलग-अलग दल बांध
कर रात को उन पर चढ़ाई करके उन्हें मार
डाला और दमिश्क के उत्तर के होबा तक
उनका पीछा किया। 16 इस तरह वह अपने
भतीजे लूत, उसकी संपत्ति, स्त्रियों और सभी
बंधुओं को वापस लौटा ले आया। 17 जब
वह कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं
को जीतकर लौट रहा था, तब सदोम का
राजा शाने नाम घाटी में जो राजा की भी
कहलाती है, उससे मिलने आया। 18 तभी
शालेम का राजा मल्किसेदेक जो परम प्रधान
प्रभु का याजक[a] था, रोटी और अंगूर का
रस लेकर आया 19 परम प्रधान प्रभु तथा
आकाश और पृथ्वी के अधिकारी के नाम
से उसने अब्राम को आशीर्वाद दिया 20 उसने
यह भी कहा, "जिस परम प्रधान प्रभु ने
तुम्हारे दुश्मनों को तुम्हारे वश में किया,
उनकी बड़ाई हो। तभी अब्राम ने सारी लूट
का दसवाँ हिस्सा उसे दिया 21 तब सदोम
के राजा ने अब्राम से कहा, प्राणियों[b] को
मुझे दो, लेकिन धन दौलत को अपने पास
रखो।" 22 अब्राम सदोम के राजा से बोला,
"परम प्रधान प्रभु, जो आकाश और पृथ्वी
के अधिकारी हैं 23 उन्हीं की शपथ मैं खा कर
कहता हूँ, कि जो कुछ तुम्हारा है, उसमें से न
तो मैं एक सूत, जूती का बन्धन या कोई और
चीज लूँगा। ताकि तुम ऐसा न कहने पाओ
कि मेरी वजह से अब्राम दौलतमंद हो गया।
24 लेकिन जो कुछ इन जवानों ने खा लिया
है और उनका हिस्सा जो मेरे साथ गए थे।
अर्थात आनेर, एश्कोल और मम्रे, मैं लौटा
नहीं पाऊँगा वे अपना-अपना हिस्सा रखें।

15 इन बातों के बाद दर्शन में यह
संदेश अब्राम के पास पहुँचा "हे
अब्राम डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारी ढाल और
बहुत बड़ा प्रतिफल हूँ।" 2 अब्राम बोला,
"हे प्रभु परमेश्वर मैं निःसंतान हूँ और मेरे
घर का वारिस यह दमिश्कवासी एलीऐजेर
होगा, इसलिए आप मुझे क्या देंगे?" 3 अब्राम
ने आगे कहा, आपने तो मुझे अब तक
बे-औलाद रखा है और मुझे तो यही दिखता
है कि मेरे घर में उत्पन्न हुआ एक जन मेरा
वारिस होगा। 4 तब प्रभु का यह संदेश उसके
पास पहुँचा, "यह[c] तेरा वारिस नहीं होगा।
तेरा बेटा ही तेरा वारिस होगा।" 5 बाहर ले
जाकर प्रभु ने उससे कहा, "ऊपर की तरफ़
आँखें उठाओ और देखो, क्या तुम तारों को
गिन सकते हो? प्रभु ने उससे कहा, "तुम्हारा
वंश भी ऐसा ही होगा।" 6 अब्राम ने प्रभु पर
भरोसा किया और प्रभु ने इस बात को अपने
लेखे में रख लिया। 7 तब प्रभु ने उससे कहा,
"मैं वही हूँ जो तुम्हें कसदियों के ऊर नगर
से बाहर लेकर आया था ताकि इस देश का
अधिकारी बनाऊँ।" 8 उसने कहा, "हे प्रभु
परमेश्वर, इसका सबूत क्या है?" 9 प्रभु ने
उस से कहा, मेरे लिए तीन वर्ष की एक
कलोर, तीन वर्ष की एक बकरी, तीन वर्ष
का एक मेंढा, एक पिण्डुक और कबूतर का
एक बच्चा लो। 10 इन सभी को लेकर उसने
बीच में से दो टुकड़े किए और टुकड़ों को
आमने-सामने रखा, लेकिन चिड़ियों को ऐसे
ही रहने दिया। 11 जब मांसाहारी पक्षी लोथों
पर झपटे, तब अब्राम ने उन्हें उड़ा दिया।

[a] **14.18** पुरोहित [b] **14.21** गुलामों [c] **15.4** कोई बाहरी जन

12 सूरज डूबने के समय, अब्राम को गहरी
नींद आ गई। उसको बड़े डर और अंधेरे ने
भी छा लिया। 13 तब प्रभु ने अब्राम से कहा,
“यह जान लो कि तुम्हारे वंश के लोग पराए
देश में परदेशी होकर रहेंगे और[a] गुलाम हो
जाएँगे। वे उन्हें चार सौ साल तक दुख देंगे।
14 फिर जिस देश के वे गुलाम होंगे, उसे मैं
सज़ा दूँगा और उसके बाद वे ढेर सारी दौलत
लेकर वहाँ से निकल आएँगे। 15 तुम बुढ़ापे
तक ज़िन्दा रहोगे और फिर तुम्हारे पूर्वजों
की तरह दफ़ना दिए जाओगे 16 लेकिन वे
चौथी पीढ़ी में यहाँ वापस आएँगे, क्योंकि
अभी अमोरी लोगों को उनके अपराधों के
लिए दण्ड दिए जाने का समय नहीं आ
पहुँचा है। 17 सूरज डूबने पर जब अँधेरा हो
गया, तब पशु के विभाजित भागों के बीच
से धुआँ निकलती हुई एक अंगीठी और
एक जलती हुई मशाल-सी गुज़री। 18 उस
दिन प्रभु ने अब्राम के साथ एक प्रतिज्ञा की,
“तुम्हारे वंश को मैं मिस्र की नदी से लेकर
इफ़रात नदी तक की भूमि देता हूँ। 19 अभी
यहाँ केनी, कनिज्जी, कदमोनियों, 20 हित्ती,
परिज्जी, रपाई, 21 एमोरी, कनानी गिर्गाशी
और यबूसी रहते हैं।”

16 अब्राम और साराह के कोई भी
बच्चा नहीं हुआ था। साराह के पास
हाज़िरा नाम की एक दासी थी। 2 इसलिए
साराह ने अब्राम से कहा, “देखो, अब तक
हम से कोई औलाद नहीं हुई, इसलिए मेरी
तुम से यह बिनती है कि मेरी दासी के साथ
यौन संबन्ध करो। शायद उससे अपने को
एक संतान मिले और मेरा घर बस जाए।”
3 साराह की यह सलाह अब्राम ने मान ली।
इसलिए जब अब्राम को कनान देश में रहते
रहते दस साल बीत गए तब उसकी पत्नी
ने अपनी मिस्री दासी हाज़िरा को अब्राम के
हवाले कर दिया, ताकि वह भी उसकी पत्नी
हो जाए। 4 हाज़िरा के गर्भवती होने पर वह
अपनी स्वामिनी साराह को तुच्छ समझने
लगी। 5 तब साराह ने अब्राम से कहा, “मेरे
साथ जो हो रहा है, वह तुम्हारी ज़िम्मेदारी
हो। मैंने तो हाज़िरा को तुम्हारी पत्नी होने
के लिए तुम्हारे अधीन किया था। अपने
गर्भधारण कर लेने पर वह मुझे ही नीच
दृष्टि से देखने लगी है। प्रभु ही फ़ैसला करें
कि इसका ज़िम्मेदार कौन है तुम या मैं।”
6 अब्राम बोला, “साराह, देखो, तुम्हारी दासी
तुम्हारे अधिकार में है, तुम्हें उसके साथ जो
सही लगता है, तुम करो।” तब साराह उसके
साथ बुरा बर्ताव करने लगी, जिस की वजह
से उसे घर छोड़ कर भागना पड़ा। 7 तब
प्रभु के दूत ने उसको जंगल में शूर के रास्ते
पर पानी के एक सोते के पास पाकर कहा,
8 “हे साराह की दासी तुम कहाँ से आ रही
हो और कहाँ जा रही हो”? उसने जवाब में
कहा, “मैं अपनी मालकिन साराह के यहाँ से
भाग कर आ रही हूँ।” 9 प्रभु के दूत ने उससे
कहा, “अपनी मालकिन के पास लौट जाओ
और उसके अधीन रहो। 10 मैं तुम्हारे वंश को
अनगिनित बढ़ा दूँगा। 11 तुम्हारा एक बेटा
पैदा होगा और उस का नाम इश्माएल रखना,
क्योंकि प्रभु ने तुम्हारे कष्ट का हाल सुन लिया
है। 12 वह पुरुष जंगली गदहे की तरह होगा
वह दूसरों का विरोध करेगा और दूसरे उस
का विरोध करेंगे वह अपने सभी भाई बंधुओं
के बीच बना रहेगा।” 13 जिस प्रभु ने उससे
बातचीत की, उस का नाम उसने अताएलरोई
रखा और कहा, 14 इस कारण उस कुँए का
नाम लहैरोई पड़ गया। यह कादेश और बेरेद

[a] **15.13** उस वंश के

के बीच है। 15 समय पूरा होने पर उसके एक
पुत्र हुआ जिस का नाम अब्राम ने इश्माएल
रखा 16 इश्माएल के जन्म के समय अब्राम
छियासी वर्ष का था।

17 अब्राम के निन्यानवे वर्ष में प्रभु
ने उसे दर्शन देकर कहा, “मैं
सर्वशक्तिमान प्रभु हूँ। मेरे रास्ते पर चलो
और निर्दोष बने रहो 2 तुम्हारे और मेरे बीच,
मैं एक वाचा बान्धूँगा। और तुम्हारे वंश
को बढ़ाऊँगा। 3 तब अब्राम मुँह के बल
ज़मीन पर गिर पड़ा और प्रभु ने उससे कहा,
4 “देखो, मेरा वायदा तुम्हारे साथ बना रहेगा,
इसलिए तुम बहुत से देशों के मूल पिता
होगे 5 अब से तुम्हारा नाम अब्राम न होगा,
लेकिन तुम्हारा नाम अब्राहम होगा, क्योंकि
मैंने तुम्हें देशों के समूह का मूल पिता ठहरा
दिया है। 6 मैं तुम्हें बहुत बढ़ाऊँगा और तुम्हें
तमाम राष्ट्रों का उद्गम बना दूँगा। तुम्हारे
वंश से राजा उत्पन्न होंगे। 7 मैं तुम्हारे साथ
और तुम्हारे बाद पीढ़ी-पीढ़ी तक तुम्हारे वंश
के साथ भी इस आशय की युग-युग की वाचा
बान्धता हूँ कि 8 मैं तुम्हारे बाद तुम्हारे वंश
को भी, यह सारा कनान देश, जिस में तुम
परदेशी होकर रहते हो, इस तरह दूँगा कि
वह युग-युग तक उनकी अपनी ज़मीन होगी
और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा। 9 फिर प्रभु ने
अब्राहम से कहा, “तुम भी मेरे साथ बाँधी
वाचा का पालन करना, तुम और तुम्हारे बाद
तुम्हारा वंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उस
का पालन करें 10 मेरे साथ बाँधी हुई वाचा
जो तुम्हें और बाद में तुम्हारे वंश को बनाए
रखनी पड़ेगी, वह यह है कि तुम में से हर
एक पुरुष का खतना हो 11 तुम अपनी-अपनी
खलड़ी का खतना करा लेना। मेरे और तुम्हारे
बीच की वाचा का यही निशान होगा 12 सिर्फ
तुम्हारे वंश के लोग ही नहीं, लेकिन जो
तुम्हारे घर में पैदा हो या परदेशियों को
रूपये देकर मोल लिए जाएँ, सभी लड़कों का
आठवें दिन खतना किया जाए। 13 जो तुम्हारे
घर में उत्पन्न हों और जो रूपा देकर मोल
लिए गए हों, उनका खतना ज़रूर किया जाए।
युग-युग तक तुम्हारे साथ मेरी वाचा का
तुम्हारी देह में चिन्ह यही होगा। 14 जो पुरुष
खतना न कराए, वह अपने लोगों में से नाश
किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बांधी
वाचा को तोड़ दिया। 15 फिर प्रभु ने अब्राहम
से कहा, “तुम अपनी पत्नी सारै को अब से
साराह करके बुलाना। 16 मैं उस पर अपनी
भलाई इस तरह प्रगट करूँगा कि उससे एक
बेटा होगा। वह तमाम देशों की माता ठहरेगी,
उसकी नस्ल से तमाम राजा होंगे। 17 यह सुन
कर अब्राहम मुँह के बल गिरा और हँसा और
अपने मन में कहने लगा, “क्या सौ साल
के आदमी और नब्बे साल की औरत से
बच्चा हो सकेगा? 18 अब्राहम ने प्रभु से कहा,
“इश्माएल पर आपकी कृपा बनी रहे, यही
काफी है” 19 प्रभु ने कहा, “निःसंदेह, तुम्हारी
पत्नी साराह के द्वारा तुम्हें एक बेटा होगा
और तुम उस का नाम इसहाक रखना 20 और
इश्माएल के बारे में मैंने तुम्हारी सुनी है मैं उसे
भी आशीष दूँगा, मैं उसे फलवंत करके बहुत
ज़्यादा बढ़ा दूँगा। उस से बारह प्रधान पैदा
होंगे और मैं उससे एक बड़ा देश बनाऊँगा।
21 लेकिन मैं अपनी वाचा इसहाक के साथ
ही बान्धूँगा जो साराह के ज़रिए अगले साल
नियुक्त समय में उत्पन्न होगा 22 प्रभु अब्राहम
से बातचीत के बाद उसके पास से चले
गए। 23 तब अब्राहम ने अपने बेटे इश्माएल
तथा उसके घर में उत्पन्न उन सभी पुरुषों को
जिन्हें उसने मोल लिया था, प्रभु की आज्ञा के
अनुसार खतना किया। 24 अब्राहम के खतने

के समय उसकी उम्र निन्यानवे वर्ष की थी।
25 इश्माएल तेरह साल का था जब उस का
खतना हुआ 26 अब्राहम और इश्माएल दोनों
का एक ही दिन खतना हुआ था। 27 साथ
ही उसके घर में उत्पन्न सभी पुरुषों और
परदेशियों के हाथ से खरीदे पुरुषों का खतना
हुआ था।

18 एक दिन जब अब्राहम दिन की तेज़
धूप के समय अपने तंबू के दरवाज़े
पर बैठा हुआ था, प्रभु ममे के बांज वृक्षों
के पास उस पर प्रगट हुए। 2 आँखें उठा
कर देखने पर अब्राहम को तीन पुरुष खड़े
दिखायी दिए। उन्हें देखते ही उठ कर वह
उन से मिलने आगे बढ़ा और ज़मीन पर गिर
कर दण्डवत् किया। 3 वह बोल उठा, "मेरे
मालिक, यदि मुझ पर आपकी कृपा दृष्टि है
तो अपने दास के पास से यों ही मत जाईये।
4 पानी से अपने पैर धो कर इसी पेड़ के नीचे
आराम करें। 5 मेरे यहाँ भोजन खा कर ही
जाईए, क्योंकि आपने दास के यहाँ आपने
पैर रखे हैं।" 6 उन लोगों ने कहा, "ठीक है
जैसा तुम कह रहे हो वैसा ही करेंगे।" 7 तुरन्त
अब्राहम ने जाकर साराह से कहा, "तीन
पसेरी मैंदे की रोटियाँ बना लो।" 8 अब्राहम ने
एक छोटे बछड़े को लाकर अपने नौकर को
पकाने के लिए दिया। खाना बन जाने के बाद
दूध-दही के साथ परोसा गया। उनके खाते
समय अब्राहम वहीं पेड़ के नीचे खड़ा रहा।
9 तभी उन लोगों ने उससे उसकी पत्नी के बारे
में पूछा। अब्राहम ने बताया कि वह तंबू में
है। 10 उसे बताया गया कि वह अगले साल
फिर से आएँगे और साराह से एक बेटा होगा।
ये बातें साराह तंबू के दरवाज़े से सुन रही
थी। 11 अब्राहम और साराह काफ़ी बुज़ुर्ग हो
चुके थे और साराह का मासिक धर्म भी बंद
हो चुका था। 12 मन ही मन हँसते हुए साराह
बोली, "मैं तो बुढ़िया हूँ और मेरे पति भी बूढ़े
हैं यह कैसे हो सकता है?" 13 प्रभु ने अब्राहम
से कहा, "अपने आप को बूढ़ा कह कर
साराह हँसी क्यों? 14 क्या प्रभु के लिए कुछ
असंभव[a] है? अगले साल इसी समय पर मैं
तुम्हारे पास आऊँगा और साराह की गोद में
एक पुत्र होगा। 15 डरते हुए साराह बोली,
"नहीं मैं बिल्कुल नहीं हँसी।" लेकिन उसने
कहा, "नहीं तुम ज़रूर हँसी थी।" 16 तब उन
पुरुषों ने सदोम की तरफ़ अपनी निगाह की
और अब्राहम उन्हें विदा करने के लिए साथ
साथ चल रहा था। 17 प्रभु ने कहा, "जो कुछ
मैं करने वाला हूँ, क्या मैं उसे अब्राहम से
छिपा रखूँ?" 18 अब्राहम से एक महान और
ताकतवर देश बनेगा। सारी दुनिया के सभी
देश उस देश से प्रभु का भलाई को चखेंगे।
19 मैंने उसे इसलिए चुना है कि उसके पीछे
छूट जाने वाले परिवार और बच्चों को वह
यह आज्ञा दे, कि वे खराई और इन्साफ़ के
काम करते हुए प्रभु के रास्ते पर मज़बूत बने
रहें, जिस से कि अब्राहम से कही गई बातों
को प्रभु पूरी कर सकें 20 फिर प्रभु ने कहा,
"सदोम और अमोरा की चिल्लाहट बढ़ गई है
और उनका गुनाह बहुत भारी हो चुका है।
21 इसलिए मैं देखूँगा कि, उनके काम उतने
ही बुरे हैं जैसा मेरे सुनने में आया है, यदि नहीं
तो मैं जानना चाहूँगा।" 22 तब वे पुरुष वहाँ से
मुड़ कर सदोम की तरफ़ जाने लगे, लेकिन
अब्राहम फिर भी प्रभु की मौजूदगी में बना
रहा। 23 फिर अब्राहम ने पास आकर कहा,
"क्या आप सचमुच बुरे लोगों के साथ अच्छे
लोगों को भी बर्बाद कर डालेंगे? 24 मान लें
शहर में पचास लोग अच्छे हों, क्या फिर

[a] **18.14** नामुमकिन

भी आप उन्हें बर्बाद कर डालेंगे? क्या उन
पचास भले लोगों को बचाने के लिए उस
जगह को आप यों ही नहीं छोड़ देंगे? 25 दुष्टों
के साथ भले लोगों को आप नाश न करें। क्या
सारी सृष्टि के न्यायी उचित न्याय न करें?
26 प्रभु ने कहा, “यदि मुझे सदोम में पचास
भले लोग मिलें, तो उनकी वजह से मैं उस
जगह को छोड़ दूँगा” 27 तब अब्राहम बोल
उठा, “हे स्वामी मैं तो मिट्टी और राख हूँ,
फिर भी मैंने इतनी ढिठाई की है कि आप से
बात करूँ 28 अगर उन पचास अच्छे लोगों में
से पाँच कम हो जाएँ, तो क्या आप पाँच ही
के घटने के कारण उस सारे नगर को बर्बाद
करेंगे?” प्रभु ने जवाब दिया, “यदि मुझे उस
जगह पैंतालिस भी मिलें, तौभी उस का नाश
न करूँगा” 29 अब्राहम ने फिर पूछा, “यदि
वहाँ सिर्फ चालीस मिलें तो? प्रभु ने कहा,
“चालीस के कारण भी मैं ऐसा न करूँगा।”
30 फिर अब्राहम ने सवाल किया, “हे मालिक
यदि आप गुस्सा न हों, तो मैं कुछ और कहूँ,
यदि वहाँ तीस ही मिलें?” प्रभु ने कहा, “मैं
तीस के कारण भी उन्हें बर्बाद नहीं करूँगा”
31 अब्राहम ने फिर कहा, “हे प्रभु ढिठाई में
मैंने इतने सवाल तो किए हैं एक बार फिर
करता हूँ, “यदि उस नगर में सिर्फ बीस लोग
धर्मी हों तो? प्रभु ने कहा, “बीस के कारण भी
मैं उस जगह को नाश नहीं करूँगा। 32 उसने
फिर से पूछा, “गुस्सा न कीजिएगा, सिर्फ एक
मौका और दीजिए यदि केवल वहाँ दस ही
मिलें?” प्रभु ने कहा, “दस के कारण भी मैं
उस नगर को नाश नहीं करूँगा” 33 अब्राहम
से प्रभु की बातचीत समाप्त हुई तब प्रभु चले
गए और अब्राहम भी अपने घर लौट गया।

19 शाम के समय जब लूत सदोम के
फ़ाटक पर बैठा हुआ था, तभी वे
दो स्वर्गदूत वहाँ पहुँचे। उनको देखते ही
वह उन से मिलने के लिए उठा और मुँह के
बल झुक कर सलाम किया। 2 वह बोला,
“स्वामियो, कृपा करके अपने दास के यहाँ
पधारें, पैर धोएँ, आराम करें और सुबह चले
जाईएगा।” 3 वे बोले, “नहीं, हम चौक ही
में रात बिताएँगे।” बहुत मनाए जाने पर वे
राज़ी हो गए और उसके घर पर ही खाना
खाया 4 उनके सोने से पहले, सदोम शहर के
पुरुषों ने, जवानों से लेकर बूढ़ों तक यहाँ
तक कि चारों तरफ़ के सब लोगों ने आकर
लूत के घर को घेर लिया। 5 उन्होंने लूत को
पुकार कर उससे कहा, “जो पुरुष आज रात
तुम्हारे यहाँ ठहरे हैं, उन्हें हमारे पास लाओ।
हम उनके साथ संभोग करना चाहते हैं”।
6 लोगों तक जाने के बाद अपना दरवाज़ा बंद
करते ही उसने कहा, 7 “हे मेरे भाईयो, ऐसी
बुराई मत करो। 8 देखो मेरे पास दो कुँवारी
बेटियाँ है। तुम्हारे लिए मैं उनको बाहर ले
आता हूँ। अपनी मन मर्जी से जो चाहो, उनके
साथ करो। लेकिन इसलिए कि ये पुरुष मेरे
यहाँ मेहमान हैं, इनके साथ कुछ बुरा मत
करो।” 9 उन्होंने कहा, “हट जा”। फिर वे
कहने लगे, “तुम एक परदेशी होकर यहाँ
रहने के लिये आया परन्तु अब न्यायी भी बन
बैठा है। इसलिये अब हम उन से भी अधिक
तेरे साथ बुराई करेंगे।” और वे उस पुरुष लूत
को बहुत दबाने लगे, और किवाड़ तोड़ने के
लिये निकट आए। 10 तब इन पाहुनों ने हाथ
बढ़ा कर, लूत को अपने पास घर में खींच
लिया, और किवाड़ को बन्द कर दिया।
11 और उन्होंने क्या छोटे, क्या बड़े, सब
पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे अन्धा कर
दिया, तब वे द्वार को टटोलते-टटोलते थक
गए। 12 फिर उन मेहमानों ने लूत से पूछा,
“यहाँ तेरे और कौन कौन हैं? दामाद, बेटे,

बेटियाँ, या नगर में तेरा जो कोई हो, उन
सभों को लेकर इस स्थान से निकल जा।
13 क्योंकि हम यह स्थान नाश करने पर हैं,
इसलिये कि इसकी चिल्लाहट प्रभु के सम्मुख
बढ़ गई है, और प्रभु ने हमें इसका सत्यानाश
करने के लिये भेजा है।" 14 तब लूत ने निकल
कर अपने दामादों को, जिन के साथ उसकी
बेटियों का विवाह हो गया था, समझा कर
कहा, उठो, इस स्थान से निकल चलोः
क्योंकि प्रभु इस नगर को नाश करना चाहते
हैं। परन्तु वह अपने दामादों की दृष्टि में ठट्ठा
करने हारा सा जान पड़ा। 15 जब पौ फटने
लगी, तब दूतों ने लूत से फुर्ती कराई और
कहा, कि उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों
को जो यहाँ हैं ले जा, नहीं तो तुम भी इस
नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा। 16 परन्तु
वह देर करता रहा, इस से इन पुरुषों ने उस
का और उसकी पत्नी, और दोनों बेटियों का
हाथ पकड़ लिया। इसलिए कि प्रभु की कृपा
उस पर बनी हुई थी। उन्होंने उसको निकाल
कर नगर के बाहर कर दिया। 17 और ऐसा
हुआ कि जब उन्होंने उनको बाहर निकाला,
तब उन से कहा, "अपना प्राण लेकर भाग
जा; पीछे की ओर न ताकना, और तराई भर
में न रूकना, उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं
तो तुम भी भस्म हो जाओगे।" 18 लूत ने उन
से कहा, "हे प्रभु, ऐसा न करें" 19 देखिए,
आपके दास पर आपकी अनुग्रह की दृष्टि
हुई है, और आपने इस से बड़ी कृपा दिखाई,
कि मेरे प्राण को बचाया है, परन्तु मैं पहाड़
पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि
कोई विपत्ति मुझ पर आ पड़े, और मैं मर
जाऊँ, 20 देखिए, वह नगर ऐसा निकट है कि
मैं वहाँ भाग सकता हूँ। वह छोटा भी है, मुझे
वहीं भाग जाने दें, क्या वह छोटा नहीं है?
और मेरा प्राण बच जाएगा।" 21 उसने कहा,
देखो, मैंने इस विषय में भी तुम्हारी प्रार्थना
मान ली है, कि जिस नगर की चर्चा तुमने
की है, उसको मैं नाश न करूँगा। 22 फुर्ती से
वहाँ भाग जाओ, क्योंकि जब तक तुम वहाँ
न पहुँचो तब तक मैं कुछ न कर सकूँगा।
इसी कारण उस नगर का नाम सोअर पड़ा।
23 लूत के सोअर के निकट पहुँचते ही सूर्य
पृथ्वी पर उदय हुआ। 24 तब प्रभु ने अपनी
ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से
गन्धक और आग बरसाई; 25 और उन नगरों
को सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब
निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत
नाश कर दिया। 26 लूत की पत्नी ने जो उसके
पीछे थी दृष्टि फेर कर पीछे की ओर देखा,
और वह नमक का खम्भा बन गई। 27 भोर
को इब्राहीम उठ कर उस स्थान को गया,
जहाँ वह प्रभु के सम्मुख खड़ा था; 28 और
सदोम, अमोरा, और उस तराई के सारे देश
की ओर आँख उठा कर क्या देखा, कि उस
देश में से धधकती हुई भट्टी का सा धुआँ
उठ रहा है। 29 और ऐसा हुआ, कि जब प्रभु
ने उस तराई के नगरों को, जिन में लूत रहता
था, उलट - पुलट कर नाश किया, तब उसने
अब्राहम को याद करके लूत को उस घटना
से बचा लिया। 30 कुछ समय बाद लूत ने
सोअर को छोड़ दिया, और पहाड़ पर अपनी
दोनों बेटियों समेत रहने लगा, क्योंकि वह
सोअर में रहने से डरता था। इसलिये वह
और उसकी दोनों बेटियाँ वहाँ एक गुफ़ा
में रहने लगे। 31 तब बड़ी बेटी ने छोटी से
कहा, "हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर
में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति
के अनुसार हमारे पास आए। 32 सो आ, हम
अपने पिता को दाखमधु पिला कर, उसके
साथ सोएँ, जिस से कि हम अपने पिता के
वंश को बचाए रखें।" 33 तब उन्होंने उसी रात

के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया,
तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट
गई, परन्तु उसने न जाना, कि वह कब लेटी,
और कब उठ गई। 34 दूसरे दिन बड़ी ने छोटी
से कहा, देख, कल रात को मैं अपने पिता के
साथ सोई थी। आज भी रात को हम उसको
दाखमधु पिलाएँ, तब तुम जाकर उसके साथ
सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न
करें। 35 सो उन्होंने उस दिन भी रात के समय
अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी
बेटी जाकर उसके पास लेट गई परन्तु लूत
को उसके भी सोने और उठने का ज्ञान न
था। 36 इस प्रकार से लूत की दोनों बेटियाँ
अपने पिता से गर्भवती हुई। 37 और बड़ी ने
एक पुत्र को जन्म दिया, और उस का नाम
मोआब रखाः वह मोआब नाम जाति का जो
आज तक है मूल पिता हुआ। 38 और छोटी
ने भी एक पुत्र को जन्म दिया, और उस का
नाम बेनम्मी रखा। वह अम्मोनवंशियों का जो
आज तक हैं मूल पिता हुआ।

20 अब्राहम वहाँ से निकल कर दक्षिण
देश में आकर कादेश और शूर के
बीच गरार में आकर रहने लगा। 2 अब्राहम
ने अपनी पत्नी का परिचय बहन के रूप में
कराया, इसलिए गरार के राजा अबीमेलेक
ने एक व्यक्ति को भेज कर साराह को अपने
यहाँ बुलवा लिया 3 रात में एक स्वप्न में
प्रभु ने अबीमेलेक से कहा, “जिस महिला
को तुमने अपने पास रख लिया है, वह
विवाहित है। इस वजह से तुम मर जाओगे।”
4 अबीमेलेक ने उसके साथ कोई शारीरिक
संबन्ध नहीं किया था। इसलिए उसने कहा,
“प्रभु क्या व्यभिचार न करने पर भी आप
मुझे उसकी सज़ा देंगे? 5 अब्राहम ही ने तो
कहा था कि साराह उसकी बहन है और
साराह ने अब्राहम को अपना भाई बताया
था।” 6 स्वप्न में प्रभु ने कहा, “हाँ मैं जानता हूँ
कि तुम दोषी नहीं हो। इसलिए मैंने तुम्हें मेरे
खिलाफ़ दुष्टता नहीं करने दी। मैंने ही तुम्हें
उसके साथ शारीरिक संबन्ध करने से रोक
लिया। 7 इस महिला को उसके पति के सुपुर्द
कर दो। वह एक नबी है और तुम्हारे जीवित
रहने के लिए प्रार्थना करेगा। यदि तुम उसे
वापस न करोगे तो तुम अपने लोगों के साथ
मर जाओगे।” 8 अगले दिन बड़े सवेरे उठ
कर अबीमेलेक ने अपने सब कर्मचारियों को
बुलाकर जब सब कुछ बतलाया वे सभी डर
से भर गए। 9 तब अबीमेलेक ने अब्राहम को
बुलाकर कहा, “तुमने हमारे साथ यह क्या
किया” मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया था
जिस की सज़ा का भागीदार मैं और मेरा देश
हैं? जैसा तुमने किया, वैसा कभी भी किसी
ने नहीं करना चाहिए।” 10 तब अबीमेलेक
ने अब्राहम से पूछा, “किस बात ने तुम्हें
प्रेरित किया, कि तुम ऐसा करो?” 11 अब्राहम
बोला, “मैंने सोचा कि यहाँ के लोग प्रभु
से डरने वाले नहीं हैं। इसलिए वे मुझे मार
देंगे लेकिन मेरी पत्नी साराह को रख लेंगे।”
12 इसमें कोई संदेह भी नहीं, कि मेरे पिता
की बेटी होने की वजह से वह मेरी बहन है
भी, लेकिन वह मेरी माँ की बेटी नहीं है। मैंने
उससे शादी की थी। 13 जब प्रभु ने मुझे मेरे
पिता के घर से निकलने की आज्ञा दी, तब
मैंने साराह से कहा था, “इतनी कृपा मुझ
पर करना कि जहाँ कहीं हम जाएँ तुम मुझे
अपना भाई ही बताना. 14 तब अबीमेलेक ने
साराह को वापस लौटाने के साथ-साथ भेड़
बकरी, गाय-बैल और नौकर चाकर भी दिए।
15 अबीमेलेक ने यह भी कहा, “मेरी सारी
ज़मीन तुम्हारे सामने है, जहाँ चाहो रहो।”
16 साराह से अबीमेलेक ने कहा, “मैंने चाँदी

के हज़ार टुकड़े तुम्हारे भाई को दे दिए हैं। यह मेरी उस गलती के बदले में है जो मैंने तुम्हारे साथ की। अब सब के सामने तुम्हारी इज़्ज़त बनी हुई है। 17 तब अब्राहम ने प्रार्थना की, जिसे सुन कर प्रभु ने अबीमेलेक उसकी पत्नी और नौकरानियों को फिर से जनने की शक्ति दे दी, 18 क्योंकि अब्राहम की पत्नी को अपने घर में रख लेने की वजह से प्रभु ने उसकी पत्नी और नौकरानियों को बांझ बना दिया था।

21 प्रभु ने अपने वायदे के अनुसार साराह के साथ किया। 2 वह गर्भवती हुई और बुढ़ापे में उसको एक बेटा हुआ। 3 अब्राहम ने उस बच्चे का नाम इसहाक रखा। 4 प्रभु की आज्ञा के मुताबिक आठवें दिन उस का खतना किया गया 5 इसहाक के जन्म के समय अब्राहम की उम्र सौ साल थी 6 साराह बोल उठी, "प्रभु ने मुझे खुश कर दिया है इसलिए सभी सुनने वाले मेरे साथ खुशी मनाएँ" 7 उसने यह भी कहा, "क्या कभी कोई अब्राहम से कह सकता था कि साराह भी कभी नवजात शिशु को दूध पिलाएगी, फिर भी उसके बुढ़ापे में मुझ से उसके लिए एक बेटा पैदा हुआ है।" 8 इसहाक बढ़ता गया और उसके दूध छुड़ाए जाने पर एक बड़ी दावत दी गई। 9 तब साराह ने मिस्री हाज़िरा के बेटे को जो अब्राहम से उसको उत्पन्न हुआ था, मज़ाक करते देखा। 10 इसलिए, साराह ने अब्राहम से बिनती की, कि हाज़िरा और उसके बेटे इश्माएल को घर से बाहर कर दे। गुलाम हाज़िरा का बेटा मेरे बेटे के साथ वारिसदार नहीं होगा। 11 साराह की यह बिनती अब्राहम को पसंद न आई, क्योंकि इश्माएल भी उसी का बेटा था। 12 प्रभु ने अब्राहम से कहा, "अपनी दासी और अपने बेटे की वजह से तुम परेशान मत हो। क्योंकि इसहाक के द्वारा ही तुम्हारा वंश कहलाएगा। 13 हाज़िरा के बेटे से भी मैं एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा क्योंकि वह भी तुम से पैदा हुआ है।" 14 इसलिए बड़े सवेरे अब्राहम ने उठ कर हाज़िरा और इश्माएल को खाना, पानी से भरी थैली देकर विदा किया। वह बेर्शेबा के जंगल में इधर-उधर भटकती रही। 15 थैली का पानी खत्म होने पर, एक झाड़ी के नीचे बेटे को छोड़ कर पानी ढूँढने में लग गई। 16 तकरीबन सौ गज़ की दूरी पर जाकर वह बैठ गयी और कहने लगी, "मैं अपने बेटे को प्यास से मरते देख नहीं सकती।" इतना कह कर वह बिलख-बिलख कर रोने लगी। 17 प्रभु ने इश्माएल की आवाज़ सुनी। प्रभु के दूत ने उसकी माँ हाज़िरा से पूछा, "तुम क्यों परेशान हो? डरो मत! इसलिए कि प्रभु ने तुम्हारे बेटे की आवाज़ सुन ली है। 18 उठो। लड़के को तसल्ली दो, मैं उससे बड़ा देश बनाऊँगा" 19 तब प्रभु ने उसे एक कुआँ दिखाया, जहाँ से उसने थैली में पानी भरा और लाकर बेटे को पिलाया। 20 प्रभु की कृपा उस लड़के पर बनी रही। वहीं जंगल में रहते-रहते वह धनुष चलाने में निपुण हो गया। 21 वह पारान नामक जंगल में बस गया। उसकी माँ ने मिस्र देश से एक लड़की का प्रबंध करके उसकी शादी करवा दी 22 इसी बीच अबीमेलेक ने अपने सेनापति के साथ आकर अब्राहम से कहा, "तुम्हारे हर काम में प्रभु की मदद दिखती है। 23 प्रभु को उपस्थित जानते हुए मुझ से प्रण करो कि तुम मुझे, मेरे बच्चों और वंशजों को धोखा नहीं दोगे। मैं[a] तुम्हारे साथ वफ़ादार रहा हूँ। प्रण करो कि इस ज़मीन पर जहाँ तुम परदेशी होकर रह

[a] **21.23** हमेशा

रहे हो, इसके और मेरे प्रति वफ़ादार रहोगे”।
24 अब्राहम बोला, “मैं प्रण करूँगा।” 25 तब
अब्राहम ने अबीमेलेक के एक कुएँ के बारे
में जो अबीमेलेक के दासों ने ज़बरदस्ती ले
लिया था, डाँट लगायी। 26 तब अबीमेलेक
बोला, “मुझे नहीं मालूम यह काम किस ने
किया और तुमने बताया भी नहीं। इसके बारे
में मैंने आज-तक नहीं सुना।” 27 तब अब्राहम
ने भेड़-बकरी और गाय-बैल अबीमेलेक को
दिए और उन दोनों ने आपस में वाचा बाँधी।
28 अब्राहम ने सात भेड़ की बच्चियों को
अलग रख लिया। 29 इसके बाद अबीमेलेक
ने अब्राहम से सवाल किया, “इन सात भेड़
की बच्चियों को अलग रखने का कारण क्या
है?” 30 उसने कहा, “तुम इन बच्चियों को इस
बात की गवाही मान कर मेरे हाथों से ले लो
कि मैंने यह कुआँ खोदा है।” 31 उन दोनों की
बीच बाँधी गयी इस वाचा के कारण उस
जगह का नाम बेर्शेबा पड़ा। 32 उसी समय
अबीमेलेक और उस का सेनापति पीकोल
उठा और पलिश्तियों के देश को लौट गया।
33 फिर अब्राहम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक
पेड़ लगाया। वहीं उसने प्रभु परमेश्वर से
प्रार्थना की। 34 पलिश्तियों के देश में अब्राहम
बहुत समय तक परदेशी की तरह रहा।

22 इन बातों के बाद प्रभु ने अब्राहम
को परखने के लिए उसे नाम लेकर
पुकार। अब्राहम ने कहा, “मैं यहाँ हूँ।” 2 तब
प्रभु ने कहा, “अपने एकलौते बेटे इसहाक
को जिस से तुम बहुत प्रेम करते हो, साथ
लेकर मोरिय्याह देश को जाओ। वहाँ एक
पहाड़ पर जिसे मैं दिखाऊँगा, अपने बेटे को
होमबलि करके चढ़ाना।” 3 इसलिए अब्राहम
ने बड़े सवेरे उठ कर गदहे पर काठी कस
कर अपने दो नौकरों और बेटे को लिया।
होमबलि के लिए लकड़ी चीरी और उस
स्थान के लिए चल पड़ा जहाँ जाने के
लिए प्रभु ने कहा था। 4 तीसरे दिन वह उस
जगह को दूर से देख सका 5 अब्राहम अपने
नौकरों से बोला, “तुम यहाँ गदहे के पास
ठहरो, मैं और इसहाक प्रभु की आराधना[a]
करके वापस आते हैं। 6 होमबलि की लकड़ी
अब्राहम ने इसहाक पर लादी और आग व
छुरा हाथ में लेकर चल पड़ा। 7 इसहाक ने
अपने पिता से पूछा, “पिताजी, आग और
लकड़ी तो है, लेकिन होमबलि के लिए मेमना
कहाँ है। 8 अब्राहम बोला, “बेटा, होमबलि
के लिए मेमने का इन्तज़ाम प्रभु खुद करेंगे।
9 जब वे प्रभु की बतायी जगह पर पहुँचे
तब अब्राहम ने एक वेदी बना कर लकड़ियों
को उस पर रखा तथा अपने बेटे इसहाक
को बांध कर वेदी पर लकड़ियों के ऊपर
रख दिया। 10 तब अब्राहम ने अपने बेटे
को होमबलि करने के लिए छुरा उठाया।
11 तभी प्रभु के स्वर्गदूत ने पुकार कर कहा,
“अब्राहम, अब्राहम।” 12 प्रभु ने कहा, “उस
लड़के की तरफ़ हाथ मत बढ़ाओ और न
ही उसे नुकसान पहुँचाओ। मैं अब जान गया
हूँ कि तुम प्रभु की इज़्ज़त करते हो, क्योंकि
तुमने मेरे लिए अपने एकलौते बेटे को भी
नहीं रख छोड़ा है।” 13 तब अब्राहम ने मुड़
कर पीछे देखा कि एक मेढ़ा अपने सींगों से
झाड़ी में फँसा हुआ है। अब्राहम ने जाकर
मेंढ़े को पकड़ा और अपने बेटे के बदले में
होमबलि चढ़ायी। 14 अब्राहम ने उस जगह
का नाम ‘प्रभु यिरै’ रखा। इसलिए आज तक
कहा जाता है कि प्रभु के पहाड़ पर प्रबंध
किया जाएगा। 15,16 इसके बाद प्रभु के दूत
ने अब्राहम को दोबारा पुकार कर कहा, “प्रभु

[a] 22.5 दण्डवत्

यह कहते हैं क्योंकि तुमने अपने एकलौते पुत्र
को भी नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं तुम से
एक शपथ करता हूँ। 17 वायदा यह है कि
मैं ज़रूर तुम्हें बड़ी आशीष दूँगा। मैं तुम्हारे
वंश को आकाश के तारे और समुद्र-तट
की रेत की तरह अनगिनित करूँगा। तुम्हारे
वंशज दुश्मनों के शहरों को अपने वश में कर
लेंगे। 18 इसलिए कि तुमने मेरी बात मानी है,
तुम्हारे बेटे की वजह से इस दुनिया के तमाम
देश मेरी भलाई चखने पाएँगे। 19 इसलिए
अब्राहम अपने नौकरों के पास लौट गया।
फिर सभी मिल कर बेर्शेबा गए, जहाँ अब्राहम
ठहर गया। 20 इन बातों के बाद अब्राहम
से किसी ने कहा, "मिल्का के तुम्हारे भाई
नाहोर से संतान पैदा हुई है। 21 मिल्का के
बेटे ये थे उस का बड़ा भाई ऊस और उस
का भाई बूज़ और अराम का पिता कमूएल।
22 और केसेद, हज़ो, पिल्दारा, यिदलाप और
बतूएल। 23 बतूएल से रिबका उत्पन्न हुयीं।
अब्राहम के भाई नाहोर के ये आठ बेटे
मिल्का से उत्पन्न हुए, 24 और नाहोर के रूमा
नाम एक रखैल भी थी, जिस से तेबह, गहम,
तहश और माका उत्पन्न हुए।

23 साराह एक सौ सत्ताईस साल
जीवित रही। 2 कनान के
किर्यत-अर्बा अर्थात हेब्रोन में उस का निधन
हो गया। अब्राहम रोने और शोक मनाने वहाँ
आया। 3,4 वहाँ से उठने के बाद अब्राहम
ने हेत के बेटों से कहा," मैं तुम्हारे बीच
अजनबी और परदेशी हूँ। मुझे अपने बीच
दफ़नाने की जगह दो, ताकि मैं अपनी
पत्नी की लाश दफ़ना सकूँ।" 5,6 हित्तियों ने
अब्राहम से कहा, "हमारे मालिक, हमारी
सुनें, हमारे बीच में आप तो शक्तिशाली
शासक हैं। 7 इसलिए अब्राहम उठा और
झुक कर उस देश के वासियों को दण्डवत्
किया। 8 वह बोला, "यदि तुम्हारी यही
इच्छा है कि मैं अपनी पत्नी की लाश को
दफ़ना दूँ, तो सोहर के बेटे एप्रोन से मेरे लिए
यह बिनती करो 9 कि वह अपनी मकपेला
की गुफ़ा को जो उसकी भूमि की सरहद पर
है, मुझे दे दे।" 10,11 एप्रोन वहीं हित्तियों के
बीच बैठा हुआ था। इसलिए जितने हित्ती
उसके नगर के फ़ाटकों में से होकर जाते थे,
उन सब के सामने उसने अब्राहम को जवाब
दिया, "हे मेरे प्रभु, ऐसा नहीं, मेरी सुनो, वह
ज़मीन और जो गुफ़ा उसमें है, मैं तुम्हें देता
हूँ। अपने सगे सम्बन्धियों के सामने मैं तुम्हें
देता हूँ उसी में तुम साराह को दफ़नाओ।
12 अब्राहम ने उस देश के लोगों के प्रति
अपना आभार प्रगट किया 13 उस देश के
लोगों के ही सामने उसने एप्रोन से कहा,
अगर तुम चाहो तो मेरी सुनो, उस ज़मीन का
दाम मैं दूँगा और वहीं साराह को मिट्टी दूँगा।
14,15 तब एप्रोन बोला, "मेरे मालिक, मेरी
बात पर गौर करें। उस ज़मीन की कीमत तो
चाँदी के चार सौ शेकेल है। लेकिन तुम्हारे
और मेरे बीच यह क्या है? अपने मृतक
को कब्र में रखो।" 16 अब्राहम ने एप्रोन
की बात मान ली। अब्राहम ने हित्तियों के
सामने उतनी चाँदी तौल दी अर्थात करीब
चार सौ शेकेल चाँदी 17 इस तरह एप्रोन की
ज़मीन जो मम्रे पेड़ों और गुफ़ा सहित भी, जो
उसमें और उसके चारों ओर सरहद पर थे।
18 हित्तियों की मौजूदगी में तथा उन सभी
लोगों के सामने जो उसके नगर के फ़ाटक
से होकर जाते थे, अब्राहम की संपति होने
के लिए वह सौंप दी गयी। 19 इसके बाद
अब्राहम ने अपनी पत्नी साराह को उस भूमि
की गुफ़ा में जो कनान देश के मकपेला में
और मम्रे अर्थात हेब्रोन के सामने थी, दफ़ना

दिया। 20 इस तरह गुफ़ा समेत वह ज़मीन
हित्तियों के द्वारा कब्रिस्तान होने के लिए
अब्राहम के वश में पूरी तरह से आ गई।

24 अब्राहम की उम्र काफी हो चुकी थी
और प्रभु ने सभी दायरों[a] में उसको
बढ़ाया था। 2 इसलिए अब्राहम ने अपने
काफी अनुभवी और सारी दौलत के ऊपर
निगरानी रखने वाले नौकर[b] को अपने पास
बुलाकर उसके हाथ को अपनी जाँघ के नीचे
रखने को कहा। 3 आकाश और पृथ्वी के प्रभु
के नाम से उसने उसे यह शपथ खाने को कहा
कि वह उसके बेटे के लिए कनानी लड़की
नहीं लाएगा। 4 उसने यह माँगा कि, वह उसी
के देश जाकर उसी के सगे संबन्धियों में से
इसहाक के लिए लड़की लाएगा। 5 सेवक
ने पूछा, "अगर वह लड़की यहाँ न आना
चाहे तो क्या मुझे इसहाक को वहाँ ले जाना
पड़ेगा? 6 अब्राहम बोला, "नहीं-नहीं, मेरे बेटे
को कभी वहाँ मत ले जाना। 7 स्वर्ग के प्रभु
जिन्होंने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी
जन्म-भूमि से निकाल कर मुझ से यह वायदा
किया कि, 'मैं यह देश तुम्हारे वंश को दूँगा',
वही अपना दूत तुम्हारे आगे भेज कर मदद
करेंगे ताकि तुम मेरे बेटे के लिए वहाँ से
एक स्त्री लाओ। 8 यदि वह स्त्री तुम्हारे साथ
न आना चाहे, तब तो तुम मेरी इस शपथ
से छूट जाओगे, लेकिन मेरे बेटे को वहाँ
मत ले जाना।" 9 तब उस सेवक ने अपने
मालिक अब्राहम की जांघ के नीचे हाथ रख
कर उससे इस विषय की शपथ खाई। 10 तब
वह सेवक अब्राहम के ऊँटों में से दस ऊँट
छाँटकर, सभी बढ़िया से बढ़िया चीजों में
से थोड़ी-थोड़ी चीजें लेकर रवाना हुआ और
मेसोपोटामिया में नाहोर नगर के पास पहुँचा।
11 उसने ऊँटों को नगर के बाहर एक कुएँ
के पास बैठाया। शाम के समय पानी भरने
स्त्रियाँ वहाँ आयीं। 12 दास ने प्रभु से प्रार्थना
की, "प्रभु मेरे काम को सफ़ल करें और मेरे
मालिक अब्राहम पर कृपा करें। 13 देखिए,
"मैं पानी के कुएँ पास खड़ा हूँ और इस नगर
की बेटियाँ पानी भरने आ रही हैं। 14 प्रभु ऐसा
होने दीजिए कि जिस कन्या से मैं पानी माँगू
और वह मेरे ऊँटों को भी पिलाने के लिए
तैयार हो जाए वही इसहाक के लिए ठहरायी
गयी पत्नी हो। इस तरह से मैं यह भी जान
लूँगा कि आपने मेरे मालिक पर कृपा की है।
15 वह ऐसा कह ही रहा था कि अब्राहम के
भाई नाहोर के जन्माए मिल्का के बेटे बतूएल
की बेटी, रिबका कंधे पर घड़ा लिए हुए आ
पहुँची। 16 वह बहुत खूबसूरत और कुँवारी
थी। उसने किसी भी पुरुष का मुँह न देखा
था। कुएँ में सोते के पास उतर कर घड़ा पानी
से भर कर वह ऊपर आयी। 17 तब वह दास
उससे भेंट करने दौड़ा और बोला, "अपने
घड़े में से मुझे भी थोड़ा-सा पानी पिला दो।"
18 रिबका ने कहा, "हे मेरे प्रभु पी लीजिए।"
उसने फुर्ती से घड़ा उतार कर हाथ में लिए
लिए उसने पानी पिला दिया। 19 उसे पानी
पिलाने के बाद उसने कहा, "मैं तुम्हारे ऊँटों
को भी तब तक पिलाती रहूँगी, जब तक वे
तृप्त नहीं हो जाते। 20 तब फुर्ती से अपने घड़े
का पानी हौद में उण्डेल कर फिर कुएँ से पानी
भरने दौड़ी और सभी ऊँटों के पीने के लिए
पानी भर दिया। 21 अब्राहम का दास उसकी
तरफ़ आश्चर्य से ताकता हुआ सोचता रहा कि
प्रभु ने उसकी यात्रा को सफल कर दिया है
या नहीं। 22 जब ऊँट पी चुके, तब उस पुरुष
ने आधे तोले सोने का एक नत्थ निकाल कर
उसको दिया, और दस तोले सोने के कंगन

[a] **24.1** मायनों [b] **24.2** सेवक

उसके हाथों में पहना दिए; 23 और पूछा, “तुम
किस की बेटी है, मुझको बता। क्या तेरे पिता
के घर में हमारे टिकने के लिये कोई स्थान
है?” 24 उसने उत्तर दिया, “मैं तो नाहोर के
जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूँ।”
25 फिर उसने उससे कहा, “हमारे यहाँ पुआल
और चारा बहुत है, और टिकने के लिये
स्थान भी है।” 26 तब उस सेवक ने सिर झुका
कर प्रभु को दण्डवत् करके कहा, 27 धन्य
है मेरे स्वामी अब्राहम के प्रभु, कि आपने
अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर
से हटा नहीं लियाः आपने मुझ को ठीक मार्ग
पर चला कर मेरे स्वामी के भाई-बन्धुओं
के घर पर पहुँचा दिया है। 28 उस कन्या ने
दौड़ कर अपनी माता के घर में सारी बात
कह सुनायी। 29 तब लाबान जो रिबका का
भाई था, बाहर कुएँ के निकट उस पुरुष के
पास दौड़ कर गया। 30 और ऐसा हुआ कि
जब उसने वह नत्थ और अपनी बहन रिबका
के हाथों में वे कंगन देखे, और उसकी यह
बात भी सुनी कि उस पुरुष ने मुझ से ऐसी
बातें कही तब वह उस पुरुष के पास गया
। उसने देखा, कि वह सोते के निकट ऊँटों
के पास खड़ा है। 31 उसने कहा, “हे प्रभु की
ओर से धन्य पुरुष भीतर आओ तुम क्यों
बाहर खड़े हो? मैंने घर को तुम्हारे लिए, और
ऊँटों के लिये भी स्थान तैयार किया है।”
32 और वह पुरुष घर में गया और लाबान
ने ऊँटों की काठियाँ खोलकर पुआल और
चारा दिया। उसने उसके, और उसके संगी
जनों के पाँव धोने को पानी दिया। 33 तब
अब्राहम के दास के आगे जलपान के लिये
कुछ रखा गया, परन्तु उसने कहा, मैं जब
तक अपना प्रयोजन न कह दूँ, तब तक कुछ
न खाऊँगा। 34 तब उसने कहा, मैं तो अब्राहम
का दास हूँ। 35 और प्रभु ने मेरे स्वामी को
बड़ी आशीष दी है। वह महान पुरुष हो
गया है, और उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल,
सोना-रूपा, दास-दासियाँ, ऊँट और गदहे
दिए हैं। 36 मेरे स्वामी की पत्नी साराह के
बुढ़ापे में उससे एक बेटा उत्पन्न हुआ और
उस बेटे को अब्राहम ने अपना सब कुछ दे
दिया है। 37 और मेरे स्वामी ने मुझे यह शपथ
खिलाई, कि मैं उसके पुत्र के लिए कनानियों
की लड़की में से जिन के देश में वह रहता है,
लड़की न ले आऊँगा। 38 सिर्फ मैं उसके पिता
के घर, और कुल के लोगों के पास जाकर
उसके बेटे के लिए एक लड़की ले आऊँगा।
39 तब मैंने अपने स्वामी से कहा, ‘कदाचित
वह लड़की मेरे पीछे न आये।’ 40 तब उसने
मुझ से कहा, प्रभु जिन की मैं इज़्ज़त करता
रहा हूँ, वह तुम्हारे संग अपने दूत को भेज कर
तुम्हारी यात्रा को सफ़ल करेगा। ताकि तुम
मेरे कुल, और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र
के लिए एक लड़की ला सको। 41 जब तुम
मेरे कुल के लोगों के पास पहुँचोगे; अर्थात्
यदि वे मुझे कोई लड़की न दें, तो तुम मेरी
शपथ से छूट जाओगे। 42 इसलिए मैं आज
उस कुएँ के निकट आकर कहने लगा, हे
मेरे स्वामी अब्राहम के प्रभु, यदि आप मेरी
इस यात्रा को सफल करते हैं, 43 तो देखिए मैं
पानी के इस कुएँ के निकट खड़ा हूँ; इसलिए
ऐसा हो कि जो कुमारी पानी भरने के लिए
निकल आए , और मैं उस से कहूँ, अपने
घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिलाओ, 44 और
वह मुझ से कहे, पी ले और मैं तुम्हारे ऊँटों
के पीने के लिए भी पानी भर दूंगी, वह वही
लड़की होगी जिस को आपने मेरे स्वामी के
पुत्र के लिए ठहराया हो। 45 मैं मन ही मन
यह कह ही रहा था, कि देखो रिबका कन्धे
पर घड़ा लिए हुए निकल आयी। वह सोते
के पास से उतर कर पानी भरने लगी और

मैंने उस से कहा, ‘मुझे पिला दो’। 46 और
उसने फुर्ती से अपने घड़े को कन्धे पर से
उतार के कहा, ‘लो, पी लो, बाद में मैं तुम्हारे
ऊँटों को भी पिलाऊँगी’। मेरे पीने के बाद
उसने ऊँटों को भी पिला दिया। 47 तब मैंने
उस से पूछा, “तुम किस की बेटी हो?” उसने
कहा, “मैं तो नाहोर और मिल्का के पुत्र
बतूएल की बेटी हूँ।“तब मैंने उसके नाक में
वह नथ, और उसके हाथों में वे कंगन पहना
दिए। 48 फिर मैंने सिर झुका कर प्रभु को
दण्डवत् किया, और अपने स्वामी अब्राहम
के प्रभु को धन्य कहा, क्योंकि उन्होंने मुझे
ठीक मार्ग से पहुँचाया कि मैं अपने स्वामी
के पुत्र के लिए उसकी भतीजी को ले जाऊँ।
49 इसलिए अब, यदि तुम मेरे स्वामी के साथ
कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते
हो, तो मुझ से कह दो, ताकि मैं दाहिनी या
बायीं ओर फिर जाऊँ। 50 तब लाबान और
बतूएल ने उत्तर दिया, “यह बात प्रभु की ओर
से हुई है। इसलिए हम लोग तुम से न तो
भला कह सकते हैं और न बुरा। 51 देखो,
रिबका तुम्हारे सामने है, उसको ले जाओ,
और वह प्रभु के वचन के अनुसार तुम्हारे
स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए।” 52 उनका
यह वचन सुन कर, अब्राहम के दास ने
भूमि पर गिर कर प्रभु को दण्डवत् किया।
53 फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने,
और वस्त्र निकाल कर रिबका को दिए।
उसके भाई और माता को भी उसने अनमोल
वस्तुएँ दीं। 54 तब उसने अपने साथ के लोगों
समेत भोजन किया, और रात वहीं बिताई
और तड़के उठ कर कहा, “मुझको अपने
स्वामी के पास जाने के लिए विदा करो।”
55 रिबका के भाई और माता ने कहा, “कन्या
को हमारे पास कुछ दिन, अर्थात् कम से
कम दस दिन रहने दो, फिर उसके बाद वह
चली जाएगी।” 56 उसने उन से कहा, “प्रभु ने
मेरी यात्रा को सफल किया है, इसलिए तुम
मुझे मत रोको, अब मुझे विदा कर दो कि
मैं अपने स्वामी के पास जाऊँ।” 57 उन्होंने
कहा, “हम कन्या को बुलाकर पूछते हैं, और
देखेंगे कि वह क्या कहती है।” 58 तब उन्होंने
रिबका को बुलाकर उससे पूछा, क्या तुम
इस मनुष्य के संग जाओगी? उसने कहा,
“हाँ, मैं जाऊँगी।” 59 तब उन्होंने अपनी बहन
रिबका, और उसकी धाय, और अब्राहम के
दास, और उसके साथ सभों को विदा किया।
60 और उन्होंने रिबका को आशीर्वाद देकर
कहा, “हे हमारी बहन, तुम हज़ारों लाखों
की आदि माता हो, और तुम्हारा वंश अपने
बैरियों के नगरों का अधिकारी हो।” 61 इस
पर रिबका अपनी सहेलियों समेत चली और
ऊँट पर चढ़ कर उस पुरुष के पीछे हो ली।
तब वह दास रिबका को साथ लेकर चल
दिया। 62 इसहाक जो दक्षिण देश में रहता
था, लहैरोई नाम के कुएँ से होकर चला आ
रहा था। 63 और शाम के समय वह मैदान
में ध्यान करने के लिए निकला था। उसने
आँखें उठा कर क्या देखा कि ऊँट चले आ
रहे हैं। 64 और रिबका ने भी आँख उठा कर
इसहाक को देखा, और देखते ही ऊँट पर से
उतर पड़ी। 65 तब उसने दास से पूछा, “जो
पुरुष मैदान पर हम से मिलने चला आता है,
वह कौन है?” दास ने कहा, “वह तो मेरा
स्वामी है।” तब रिबका ने घूँघट लेकर अपने
मुँह को ढाँप लिया। 66 और दास ने इसहाक
से अपनी सारी बात कह दी। 67 तब इसहाक
रिबका को अपनी माता साराह के तम्बू में

ले आया, और उसको ब्याह कर उस से प्रेम
किया । और इसहाक को अपनी माता के
मृत्यु के पश्चात् शान्ति हुई।

25 अब्राहम ने कतूरा नाम की एक
स्त्री से विवाह कर लिया। 2 उससे
जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक
और शूह पैदा हुए। 3,4 योक्षान से शबा और
ददान पैदा हुए। ददान के वंश से असीरियी
लतूशी और लूम्मी लोग हुए। मिद्यान के पुत्र
एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एल्दा हुए,
ये सभी कतूरा की संतान हुए। 5 अब्राहम ने
अपना सब कुछ इसहाक को दे दिया था।
6 लेकिन अपनी रखैलों के पुत्रों को कुछ-कुछ
देकर अपने जीते जी अपने पुत्र इसहाक के
पास से पूर्व देश में भेज दिया। 7 अब्राहम जिस
समय मरा उस समय वह एक सौ पचहत्तर
साल का था। 8 हित्ती सोहर के पुत्र एप्रोन की
मम्रे के सामने वाली ज़मीन में जो मकपेला
की गुफ़ा थी, 9 उस में इसहाक और इश्माएल
ने अपने पिता को मिट्टी दी। 10 अर्थात वही
ज़मीन जिसे अब्राहम ने हित्तियों से खरीदी
थी, उसी में उसे और उसकी पत्नी को
मिट्टी दी गयी। 11 अब्राहम के मर जाने के
बाद प्रभु ने उसके बेटे इसहाक को जो
लहैरोई नाम कुएँ के पास रहा करता था,
बढ़ाया। 12 अब्राहम के बेटे इश्माएल की जो
हाज़िरा से उत्पन्न हुआ था, यह वंशावली है।
13 इश्माएल के पुत्रों के नाम और वंशावली
यह है, अर्थात उस का बड़ा बेटा नबायोत,
फिर केदार, अद्बेल, मिबसाम 14 मिश्मा,
दूमा, मस्सा 15 हदर, तेमा, यतूर, नापीश और
केदमा 16 ये ही इश्माएल के पुत्र हुए और
इन्हीं के नामों के अनुसार इनके गाँवों और
छावनियों के नाम भी पड़े। ये ही बारह अपने
कुल के प्रधान हुए। 17 एक सौ सैंतीस साल
की उम्र में इश्माएल चल बसा। 18 मिस्र के
सामने असीरिया के रास्ते में हवीला से शूर
तक उसके वंश बस गए। उनका हिस्सा
उनके सब भाई बंधुओं के सामने पड़ा।
19 अब्राहम के बेटे इसहाक की वंशावली यह
है। 20 इसहाक ने चालीस साल का होकर
रिबका को जो पद्नराम के वासी, अरामी
बतूएल की बेटी और अरामी लाबान की
बहन थी, ब्याह लिया। 21 इसहाक की पत्नी
बांझ थी। उसने अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना
की और उसकी प्रार्थना सुन ली गयी उसकी
पत्नी गर्भवती हुयी। 22 जुड़वा बेटे उसके
गर्भाशय में आपस में लिपटकर एक दूसरे
को मारने लगे। तब वह बोली, “यदि मेरी
ऐसी हालत रही, तो मैं जीवित कैसे रहूँगी।
फिर वह प्रभु की इच्छा पूछने को गयी।
23 तब प्रभु ने कहा, “तुम्हारे गर्भ में दो देश
हैं। तुम्हारी कोख से निकलते ही दो राज्य के
लोग अलग-अलग होंगे। एक राज्य के लोग
दूसरे से ज़्यादा ताकतवर होंगे और बड़ा बेटा
छोटे के अधीन होगा।” 24 जन्म का समय
हो जाने पर पुष्ट हो गया कि गर्भ में जुड़वा
बेटे थे। 25 पहला लाल था और उसकी देह
कंबल की तरह रोएँदार[a] था, इसलिए उस
का नाम एसाव रखा 26 इसके बाद उस का
भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े
हुए पैदा हुआ। इसलिए उस का नाम याकूब
रखा गया। बच्चों के जन्म के समय इसहाक
की उम्र साठ साल थी। 27 बड़े होने पर एसाव
अच्छा शिकारी बन गया। याकूब शान्ति प्रिय
था और ज़्यादातर घर[b] ही में रहा करता
था। 28 इसहाक शिकार के गोश्त को पसंद
करता था। उस का ज़्यादा लगाव एसाव
से और रिबका का याकूब से था। 29 एक

[a] **25.25** बालों से भरा हुआ था [b] **25.27** तंबू

बार याकूब दाल पका रहा था, तभी एसाव
जंगल से थका मांदा लौटा था 30 तब एसाव
ने याकूब से कहा, “यह लाल-लाल चीज
मुझे खाने को दो।[a] 31 याकूब ने कहा, “मुझे
पहले अपने पहलौठेपन का हक बेच दो।”
32 एसाव बोल उठा, “भूख के मारे मैं तो
मरने पर हूँ, मेरे पहलौठेपन के अधिकार से
मुझे क्या फ़ायदा?” 33 याकूब ने उसे शपथ
लेने पर मजबूर कर डाला। इसलिए एसाव
ने शपथ खा ली और अपने पहलौठेपन का
अधिकार याकूब को दे दिया 34 तब याकूब
ने एसाव को मसूर की पकी हुयी दाल और
रोटी खाने के लिए दी। खा-पीकर वह उठा
और चला गया। इस तरह एसाव ने अपने
पहलौठे होने के अधिकार को तुच्छ जाना।

26 अब्राहम के समय में पड़ने वाले
आकाल के बाद एक और आकाल
पड़ा। इसलिए इसहाक गरार में पलिश्तियों
के राजा अबीमेलेक के पास गया। 2 वहाँ
दर्शन में प्रभु ने उसे मिस्र देश जाने को
मना किया और कहा, “जो देश मैं तुम्हें
दिखाऊँ, वहीं बने रहना। 3 इसी देश में रहना,
मेरी उपस्थिति तुम्हारे साथ बनी रहेगी और
मेरी आशीष भी। मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश
को यह सारा[b] देश दूँगा। जो प्रतिज्ञा मैंने
तुम्हारे पिता अब्राहम से की थी, उसे मैं
पूरा करूँगा। 4 तुम्हारे वंश को मैं आकाश
के तारों की तरह बढ़ाऊँगा। ये सारे देश
तुम्हारे वंश को दूँगा। पृथ्वी के सभी देश
तुम्हारे वंश के कारण अपने को धन्य कहेंगे।
5 इसलिए कि अब्राहम ने मेरी बात मानी
थी और जो ज़िम्मेदारी मैंने उसे दी थी, उसे
उसने पूरा किया और मेरी विधियों, आज्ञाओं
और मेरे नियमों का पालन किया।” 6 इसलिए
इसहाक गरार में रहने लगा 7 जब उस जगह
के लोगों ने उसकी पत्नी के बारे में पूछा
तो उसने कहा, “यह मेरी बहन है।” उसे
डर यह था कि अगर वह सच्चाई बताएगा
तो वहाँ के लोग सुंदर रिबका को हथियाने
के लिए उसे मार डालेंगे। 8 बहुत दिन बीत
जाने के बाद अबीमेलेक ने इसहाक को
रिबका के साथ प्रेमालाप करते देख लिया।
9 अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाकर उसके
झूठ बोलने के बारे में पूछा। इसहाक ने
बताया कि इस डर से कि, कहीं उसकी
वजह से लोग मुझे न मार डालें मैंने ऐसा
कहा था। 10 अबीमेलेक बोला, “ऐसा तुमने
क्यों किया, यदि कोई नागरिक उसके साथ
सहवास कर लेता, तो हम सब अपराधी
ठहरते?” 11 अबीमेलेक ने यह कह कर
लोगों को सावधान किया, “यदि कोई इस
मनुष्य या इसकी पत्नी को छूएगा, तो वह
ज़रूर मौत की सज़ा पाएगा।” 12 इसहाक
ने उस देश की ज़मीन में बोआई की और
उसी साल सौ गुना फसल काटी, क्योंकि
प्रभु ने उसको आशीष दी थी। 13 धीरे-धीरे
वह बहुत दौलतमंद हो गया। 14 क्योंकि
उसके पास बहुत भेड़-बकरी, गाय-बैल और
दास-दासी हो गए, इसलिए पलिश्ती उससे
नफ़रत करने लगे। 15 उसके पिता अब्राहम
के नौकरों द्वारा खोदे गए सभी कुओं को
पलिश्तियों ने भर दिया था। 16 अबीमेलेक
ने इसहाक से कहा, “तुम हमारे यहाँ से
अब चले जाओ, क्योंकि तुम हम से ज़्यादा
ताकतवर हो गए हो। 17 इसलिए इसहाक
वहाँ से निकला और गरार की घाटी में जाकर
रहने लगा। 18 तब इसहाक ने पानी के उन
कुओं को फिर से खुदवाया, जिन्हें उसके
पिता के दिनों में खुदवाया गया था, क्योंकि

[a] **25.30** इसी कारण एसाव का नाम एदोम भी पड़ा [b] **26.3** समूचा

उन्हें अब्राहम की मौत के बाद पलिश्तियों ने
भर दिया था। उनको इसहाक ने उन्हें फिर
खुदवाया और उनके वे ही नाम रखे, जो
उसके पिता ने रखे थे। 19 फिर इसहाक के
दासों को नाले में खोदते खोदते बहते जल
का एक सोता मिला। 20 तब गरारी चरवाहों
ने इसहाक के चरवाहों से झगड़ा किया, और
कहा, कि यह पानी हमारा है। सो उसने उस
कुएँ का नाम एसेक रखा, इसलिये कि वे
उस पर से झगड़े थे। 21 फिर उन्होंने दूसरा
कुआँ खोदा, और उन्होंने उसके लिये भी
झगड़ा किया, सो उसने उस का नाम सित्ना
रखा। 22 तब उसने वहाँ से निकल करके
एक और कुआँ खुदवाया, और उसके लिये
उन्होंने झगड़ा नहीं किया। उसने उस का
नाम यह कह कर रहोबोत रखा, कि अब
तो प्रभु ने हमारे लिये बहुत जगह दी है,
और हम इस देश में फूले-फलेंगे। 23 तब
वहाँ से वह बेर्शेबा को गया। 24 और उसी
दिन प्रभु ने रात को उसे दर्शन देकर कहा,
“मैं तुम्हारे पिता अब्राहम का प्रभु हूँ; मत
डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और अपने
दास अब्राहम के कारण तुम्हें आशीष दूँगा,
और तुम्हारे वंश को बढ़ाऊँगा।” 25 तब उसने
वहाँ एक वेदी बनाई, और प्रभु से प्रार्थना
की, और अपना तम्बू वहीं खड़ा किया ।
और वहाँ इसहाक के दासों ने एक कुआँ
खोदा। 26 तब अबीमेलेक अपने सलाहकार
अहुज्जत और सेनापति पीकोल के साथ
गरार से उसके पास पहुँचा। 27 इसहाक
अबीमेलेक से बोला, “तुम तो मुझ से दुश्मनी
रखते हो और तुमने मुझे अपने बीच में से
निकाल दिया था, अब मेरे पास किस लिए
आए हो? 28 वे बोल उठे, “हम ने यह देख
लिया है कि प्रभु तुम्हारे साथ हैं। इसलिए
हमारा इरादा यह है कि हमारे बीच में प्रतिज्ञा
करके एक सहमति हो। 29 ताकि जिस तरह
हम ने तुम्हारा कोई नुकसान नहीं किया, तुम
भी हमारे साथ बुरा बर्ताव नहीं करोगे। 30 तब
उसने उन्हें खाना खिलाया 31 बड़े सवेरे उठ
कर उन्होंने शपथ ली और इसहाक ने उन्हें
विदा किया 32 उसी दिन इसहाक के दासों
ने उसके पास आकर खोदे गए कुएँ के बारे
में बताया, कि उसमें पानी भी मिला है।
33 इसलिए उसने उस का नाम शिबा रखा
और आज तक उस नगर का नाम बेर्शेबा है।
34 चालीस साल की उम्र में एसाव ने हित्ती
बेरी की बेटी यहूदीत और हित्ती एलोन की
बेटी बासमत से विवाह कर लिया। 35 इन
बहुओं की वजह से इसहाक और रिबका को
तकलीफ़ हुई।

27 बुढ़ापे की वजह से आँखें धुंधली
हो जाने से इसहाक ठीक से देख
नहीं सकता था। एक दिन उसने अपने बड़े
बेटे एसाव को बुलाया। 2 इसहाक ने कहा,
“देखो, मैं बूढ़ा हो गया हूँ और कभी भी
मर सकता हूँ। 3 अपने हथियार, तरकश और
धनुष से शिकार करके आओ। 4 मेरी पसंद
के हिसाब से मज़ेदार खाना मेरे लिए बना
कर लाना, ताकि मरने से पहले मैं तुम्हें बहुत
सारा आशीर्वाद दूँ।” 5 एसाव शिकार करने
जंगल गया, लेकिन उसकी माँ अपने पति की
बातों को सुन रही थी। 6 इसलिए उसने अपने
छोटे बेटे याकूब से कहा, “बेटा, मैंने तुम्हारे
पिताजी को एसाव से यह कहते सुना है।
7 कि वह उनके लिए शिकार करके मज़ेदार
खाना बनाए ताकि वह उसे आशीर्वाद दे।”
8 इसलिए मेरे बेटे, “मेरी सुनो और जैसा
मैं कहूँ, तुम जाकर करो।” 9 बकरियों के
दो अच्छे-अच्छे बच्चे ले आओ। मैं तुम्हारे
पिताजी के लिए उनकी पसंद का स्वादिष्ट

भोजन तैयार करूँगी। 10 तब तुम वह खाना
अपने पिताजी के पास ले जाना, ताकि वह
खा कर, मरने से पहले तुम्हें आशीष दे।
11 याकूब ने अपनी माताजी से कहा, “लेकिन
मेरे भाई की देह पर तो बाल हैं और मेरे नहीं
है।” 12 यदि पिताजी मुझे छूने लगें, तो मैं
उनकी निगाह में ठग ठहरूँगा और आशीष
के बदले सज़ा पाऊँगा।” 13 उसकी माँ ने
कहा, “सज़ा तुम पर नहीं मुझ पर आए,
तुम पहले वही करो, जो मैं तुम से कह रही
हूँ।” 14 याकूब ने अपनी माँ की आज्ञा के
अनुसार किया और उसकी माँ ने इसहाक
की पसंद के मुताबिक बढ़िया खाना बनाया।
15 तब रिबका ने याकूब को अपने बड़े बेटे
एसाव के बढ़िया-बढ़िया कपड़ों को पहना
दिया। 16 साथ ही उसने बकरी के बच्चों की
खालों को उसके हाथों तथा गले के चिकने
हिस्से पर लपेट दिया। 17 याकूब के हाथों
में उसने अपने हाथ से मज़ेदार खाना बना
कर दे दिया। 18 तब याकूब अपने पिता के
पास गया और बोला, “हे मेरे पिताजी।”
इसहाक ने कहा, “मैं यहाँ हूँ, हे मेरे बेटे
तुम कौन?” 19 याकूब अपने पिता से बोला,
“मैं आपका बड़ा बेटा एसाव हूँ। आपके
कहने के अनुसार मैंने किया है, उठिए, उठ
कर शिकार का गोश्त खा लीजिए और
मुझे आशीर्वाद दीजिए।” 20 इसहाक ने कहा,
“मेरे बेटे, इतनी जल्दी शिकार मिल गया?
याकूब ने कहा, “हाँ आपके परमेश्वर ने
मेरे लिए ऐसा कर दिया।” 21 तब इसहाक
ने याकूब से कहा, “हे मेरे बेटे, पास आओ
ताकि मैं तुम्हें छू सकूँ और जान सकूँ, कि
सचमुच में तुम ही हो।” 22 इसलिए याकूब
अपने पिता इसहाक के पास गया, लेकिन
उसे छूते ही कहा, “आवाज़ तो याकूब की
है, लेकिन हाथ एसाव के हैं।” 23 इसहाक
याकूब को पहचान न सका क्योंकि उसके
हाथों पर वैसे ही बाल थे, जैसे उसके भाई
एसाव के हाथों पर, इसलिए उसे आशीर्वाद
दे दिया। 24 उसने उससे पूछा, “क्या तुम
सचमुच में मेरे बेटे एसाव हो?” वह बोला,
“हाँ, मैं वही हूँ।” 25 तब उसने कहा, “खाना
मेरे सामने लाओ, ताकि तुम्हारे किए गए
शिकार से पकाया गया खाना खा कर तुम्हें
आशीर्वाद दूँ। तब वह खाना और अंगूर
का रस उसके पास लाया, जिस का सेवन
उसने किया। 26 इसके पश्चात् इसहाक बोला,
“बेटा पास आकर मुझे चूमो।” 27 याकूब
ने वैसा ही किया। उसके कपड़ों की गंध
का एहसास करने के बाद इसहाक आशीष
के शब्द कहने लगा, “देखो, मेरे बेटे की
गंध उस खेत के गंध की तरह है, जिसे
प्रभु ने आशीष दी हो, 28 प्रभु तुम्हें आकाश
से ओस और ज़मीन से बढ़िया से बढ़िया
उपज और बहुतायत से अनाज व अंगूर रस
दिया करे। 29 राज्य-राज्य के लोग तुम्हारे
अधीन हों और तुम्हारी माँ के बेटे तुम्हें
दण्डवत् करें। जो लोग तुम्हें शाप दें वे शापित
हों और जो आशीर्वाद दें, उनका कल्याण
हो।” 30 इसहाक याकूब को आशीर्वाद देने
के बाद, वह वहाँ से निकला ही था, कि
तभी एसाव शिकार करके लौटा 31 मज़ेदार
खाना बना कर वह भी पिताजी के पास
आया और बोला, “अपने बेटे के हाथ के
शिकार और बनाए गए स्वादिष्ट खाना को
खा कर दिल से मुझे आशीर्वाद दीजिए।”
32 इसहाक ने सवाल किया, “तुम हो कौन?”
वह बोला, “मैं आपका पहलौठा एसाव हूँ।”
33 इसहाक ने थरथराते हुए कहा, “वह कौन
था जो शिकार के मांस को पका कर लाया
था और जिसे मैंने खा कर लाने वाले को
आशीर्वाद भी दिया?” वह तो ज़रूर ही अपने

जीवन में भलाईयों[a] को चखेगा। 34 अपने
पिताजी की बातों को सुन कर वह ऊँची
आवाज़ में दुख भरे शब्दों में चिल्लाकर कहने
लगा, "पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद दीजिए।"
35 इसहाक बोला, "धोखा देकर तुम्हारा भाई
आशीर्वाद लेकर चला गया।" 36 एसाव ने
कहा, "क्या उसके नाम का यही मतलब नहीं
है? दो बार उसने मुझे लूटा है। पहलौठे का
हक तो वह मुझ से ले ही चुका था, अब
मेरा आशीर्वाद भी ले गया। क्या मेरे लिए
आपने कुछ भी आशीर्वाद रख नहीं छोड़ा
है?" 37 इसहाक ने जवाब में कहा, "मैंने
उसे तुम्हारा मालिक ठहराया है और उसके
सभी भाईयों को उसके नीचे कर दिया है।
अनाज और नए दाखमधु की आशीष मैं उसे
दे चुका हूँ। अब तुम बताओ, कि तुम्हारे लिए
मैं क्या करूँ? 38 एसाव ने आपने पिता से
कहा, "पिताजी, क्या आपके पास एक ही
आशीर्वाद है? पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद
दीजिए।" यह कह कर एसाव फूट-फूट कर
रोने लगा। 39 तब इसहाक कह उठा, "देखो,
तुम्हारा घर, उपजाऊ ज़मीन और आकाश
की ओस से दूर होगा। 40 तुम अपनी तलवार
के बल पर जीवित रहोगे और अपने भाई के
अधीन रहोगे। लेकिन जब तुम हैरान परेशान
होगे, तब उसके दबाव[b] को अपनी गर्दन[c]
से तोड़ डालोगे। 41 उस आशीर्वाद के कारण
जो इसहाक ने याकूब को दिया था, एसाव
मन ही मन याकूब से नफ़रत करने लगा।
एसाव ने यह इरादा कर लिया कि पिताजी
की मौत के बाद वह याकूब का खून कर
डालेगा 42 रिबका को यह खबर मिलने पर
उसने याकूब को बुलवा कर कहा, "तुम्हारा
भाई एसाव तुम को मार कर ही दम लेगा,
43 मेरे बेटे, अपने मामा लाबान के पास हारान
को चले जाओ। 44 जब तक तुम्हारे भाई का
गुस्सा ठण्डा न हो जाए, तब तक कुछ समय
के लिए तुम वहीं रहना 45 अर्थात जब तक
तुम्हारे किए गए काम को वह भूल न जाए।
उसके बाद मैं तुम्हें वहाँ से बुलवा लूँगी।
मैं एक ही दिन में तुम दोनों को खोना नहीं
चाहती हूँ।" 46 रिबका ने इसहाक से कहा,
"हित्ती लड़कियों के साथ रहते रहते मैं थक
गयी हूँ। यदि याकूब उस देश की लड़कियों
में से किसी हित्ती लड़की से शादी कर लेता
है, तो मुझे कौन सा सुख मिलेगा?"

28 इसहाक ने याकूब को बुलाया उसे
आशीर्वाद दिया और आज्ञा दी,
"तुम किसी कनानी लड़की के साथ शादी
मत करना।" 2 उठो और पद्नराम में अपने
नाना बतूएल के घर जाकर अपने मामा
लाबान की बेटियों में से किसी एक को
चुन लो। 3 सर्वशक्तिमान की कृपा तुम पर
बनी रहे और तुम्हें इतना फलवंत करें व
बढ़ाएँ कि तुम बहुत सी जातियों[d] का झुंड[e]
बन जाओ। 4 वह तुम्हें अब्राहम की तरह
समृद्ध करें। हाँ, तुम्हें और तुम्हारी संतान को
भी, ताकि तुम पराए देश के अधिकारी बन
जाओ, जिसे प्रभु ने अब्राहम को दिया था।
5 तब इसहाक ने याकूब को विदा किया
और वह पद्नराम में लाबान के पास चला
गया जो अरामी बतूएल का बेटा था तथा
याकूब और एसाव की माँ रिबका का भाई
था। 6 फिर एसाव ने देखा कि इसहाक ने
याकूब को आशीर्वाद देकर पद्नराम भेजा
है, ताकि वहाँ जाकर अपने लिए जीवन साथी
चुने। उसने उसे आशीर्वाद देते हुए यह हुक्म
दिया, "किसी कनानी लड़की से तुम शादी
मत करना।" 7 अपने माता-पिता के कहने के

[a] **27.33** आशीषों [b] **27.40** जूए [c] **27.40** कन्धे [d] **28.3** देशों [e] **28.3** समूह

मुताबिक याकूब पद्दनराम चला गया 8 एसाव
ने यह जान लिया था कि उसके पिताजी को
कनानी लड़कियाँ पसंद नहीं थी। 9 इसके
बाद वह अब्राहम के बेटे इश्माएल के पास
गया। वहाँ उसने उसकी बेटी महलत को जो
नबायोत की बहिन थी, ब्याह लिया। इसके
पहले ही उसके पास पत्नियाँ थी। 10 तब
याकूब बेर्शेबा से हारान की तरफ़ चल पड़ा।
11 सूरज डूब जाने की वजह से वहीं रास्ते
ही में वह रूक गया। उसने उस जगह के
पत्थरों में से एक पत्थर लेकर अपने सिर के
नीचे रखा। 12 तब उसने सपने में देखा कि
एक सीढ़ी ज़मीन पर खड़ी है। दूसरा सिरा
स्वर्ग तक पहुँचा हुआ था और प्रभु के दूत
उस पर चढ़-उतर रहे थे। 13 वहीं ऊपर से
प्रभु ने कहा, “मैं तुम्हारे दादा अब्राहम और
इसहाक का प्रभु हूँ। जिस ज़मीन पर तुम लेटे
हुए हो, वह क्षेत्र मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश
को दूँगा। 14 तुम्हारा वंश धूल के कणों की
तरह असंख्य होगा। वह सभी दिशाओं-उत्तर,
दक्षिण, पूर्व और पश्चिम तक फैल जाएगा।
15 तुम्हारे और तुम्हारे वंश के ज़रिए दुनिया के
तमाम परिवार मेरी भलाईयों को चखेंगे। 16 मैं
तुम्हारे साथ हूँ और तुम जहाँ-कहीं जाओगे,
मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। फिर वापस मैं तुम्हें
इस देश में ले आऊँगा। अपने इस वायदे के
कारण जो मैंने तुम से किया है, पूरे होने तक
नहीं छोडूँगा। 17 नींद से जाग उठने के बाद
याकूब कहने लगा, “हो न हो इस जगह पर
प्रभु की उपस्थिति है और यह मुझे मालूम
नहीं था।” 18 बहुत भोर वह उठा और पत्थर
को जिसे उसने अपने सिरहाने रखा था, लेकर
खम्भे की तरह खड़ा किया और उसके ऊपरी
सिरे पर तेल डाला 19 उस जगह का नाम
उसने बेतेल रखा, लेकिन पहले उस का नाम
लूज था। 20 तब याकूब ने यह मन्नत मानी,
“यदि प्रभु मेरे साथ रहें और जो सफ़र मैं
कर रहा हूँ, उसमें मेरी रक्षा करें, तथा खाने
के लिए खाना और पहनने के लिए कपड़े
दें, 21 और मैं सकुशल अपने पिताजी के घर
वापस लौट आऊँ, तब प्रभु मेरे प्रभु ठहरेंगे।
22 वह पत्थर जिसे मैंने खम्भे के समान
खड़ा किया है, वह परमेश्वर का घर होगा,
यही नहीं जो कुछ आप मुझे देंगे, उन सब
का दसवाँ भाग मैं अवश्य आपको दिया
करूँगा।”

29 इसके बाद याकूब पूर्वियों के देश
में पहुँच गया। 2 वहाँ उसको एक
कुआँ मिला, जिस के पास भेड़-बकरियों
के तीन झुण्ड बैठे थे। इस कुएँ के मुँह
पर एक भारी पत्थर रखा था। 3 जानवरों
के सारे झुण्डों के वहाँ इकट्ठे हो जाने पर
उस पत्थर को हटा दिया जाता था। उन्हें
पानी पिलाए जाने के बाद पत्थर को फिर
से कुएँ पर रख दिया जाता था। 4 तब याकूब
ने उन से सवाल किया, “भाईयो, तुम लोग
कहाँ के हो? उन्होंने कहा, “हारान के।”
5 फिर उसने पूछा, “क्या तुम नाहोर के पोते
लाबान को जानते हो?” वे बोले, “हाँ, हम
उसे जानते हैं।” 6 तब उसने प्रश्न किया,
“वह ठीक-ठाक तो है?” उन्होंने कहा, “हाँ
बिल्कुल ठीक है, देखो उसकी बेटी राहेल
भेड़ बकरियों को लेकर आ रही है।” 7 वह
बोला, “अभी तो उजाला है, और पशुओं को
इकट्ठा करने का समय भी नहीं आया है। भेड़ों
को पानी पिला कर चराओ।” 8 लेकिन वे
बोले, “अभी हम ऐसा नहीं कर सकते हैं।
जब जानवरों के तमाम झुण्ड इकट्ठा हो जाते
हैं, तभी कुएँ के मुँह पर से पत्थर लुढ़काया
जाता है और हम भेड़ों को पानी पिलाते हैं।”
9 जब वह उन से बात कर ही रहा थी, तभी

राहेल अपने पिता की भेड़ों के साथ आ
गई, क्योंकि वह एक चरवाहिन थी। 10 अपने
मामा लाबान की बेटी राहेल और भेड़ों को
देखते ही याकूब ने कुएँ के मुँह से पत्थर को
लुढ़का दिया और लाबान की भेड़ों को पानी
पिलाया। 11 तब याकूब राहेल को चूमते हुए
ऊँची आवाज़ में रोने लगा। 12 याकूब ने राहेल
को अपनी पहचान बतायी कि वह उस का
फुफेरा भाई है। तुरन्त वह दौड़ कर गई और
अपने पिता को यह बताया। 13 लाबान अपने
भांजे याकूब का समाचार सुनते ही घर से
बाहर आया, उसे चूमा और अपने घर ले
आया 14 लाबान बोल उठा, "हम एक ही
परिवार के हैं।" उसके बाद तकरीबन एक
महीने तक याकूब वहीं रहा। 15 तब लाबान ने
याकूब से कहा, "सिर्फ इसलिए कि हम एक
परिवार के हैं, क्या बिना मज़दूरी तुम काम
करते रहो? मुझे बताओ, तुम्हारी मज़दूरी
क्या होगी?" 16 लाबान की दो बेटियाँ थी।
बड़ी का नाम लिआ और छोटी का नाम
राहेल था। 17 लिआ की आँखें धुँधली थीं,
लेकिन राहेल देखने में ज़्यादा खूबसूरत थीं।
18 याकूब को राहेल से प्यार हो गया था।
इसलिए उसने कहा, "मैं तुम्हारी छोटी बेटी
राहेल के लिए सात साल तक तुम्हारी सेवा
करने के लिए तैयार हूँ।" 19 लाबान बोला,
"ठीक है, किसी पराए आदमी को देने से
बेहतर यही है कि मैं उसकी शादी तुम से
कर दूँ। इसलिए तुम मेरे संग ही रहो।" 20 इस
तरह याकूब ने राहेल के लिए सात साल
तक लाबान की सेवा की। लेकिन प्रेम के
कारण ये साल कुछ दिन की तरह थे। 21 फिर
याकूब लाबान से बोला, "सेवा का काल
खत्म हो चुका है इसलिए मेरी पत्नी मुझे दे
दो, ताकि मैं उसके साथ रहना शुरू करूँ।
22 तब लाबान ने उस जगह के लोगों को
इकट्ठा करके दावत की। 23 शाम के समय
वह अपनी बेटी लिआ को लेकर उसके पास
आया और याकूब ने उसे अपने पास ले
लिया। 24 लाबान ने लिआ के साथ अपनी
दासी[a] ज़िल्पा को उसकी सेवा के लिए दे
दिया। 25 बड़े सवेरे याकूब को मालूम पड़ा
कि लाबान ने राहेल के बदले लिआ को दिया
था। इसलिए उसने लाबान से पूछा, "तुमने
मेरे साथ यह धोखा क्यों किया, क्योंकि मैंने
तुम्हारी सेवा राहेल के लिए की थी, लिआ के
लिए नहीं।" 26 लाबान ने कहा, "हमारे यहाँ
ऐसा रिवाज़ नहीं कि बड़ी लड़की से पहले
छोटी लड़की की शादी की जाए।" 27 तुम
एक हफ्ते उसके साथ तो रहो, फिर मैं तुम्हें
राहेल को भी दे दूँगा, जिस के लिए तुम आने
वाले सात साल मेरी सेवा करोगे। 28 याकूब,
लाबान की बात मान गया और लाबान ने
अपनी बेटी राहेल भी उसे सौंप दी। 29 लाबान
ने अपनी दासी बिल्हा राहेल की सेवा करने
के लिए राहेल को दी। 30 याकूब ने राहेल से
भी शारीरिक संबन्ध शुरू किया और लिआ
से ज़्यादा उससे प्रेम भी किया। उसने सात
साल और लाबान की सेवा की। 31 जब प्रभु
ने देखा कि लिआ के साथ याकूब का प्रेम
राहेल की तुलना में कम है,तो उसे गर्भधारण
के योग्य बनाया, लेकिन राहेल निःसन्तान
रही। 32 लिआ गर्भवती हुई और उसके एक
बेटा पैदा हुआ। उसने उस का नाम रूबेन यह
समझ कर रखा कि अब उस का पति उससे
प्यार करेगा। 33 वह फिर गर्भवती हुई और
एक पुत्र को जन्म दिया। उसने कहा, "प्रभु
ने यह सुन कर कि मैं अप्रिय हूँ, मुझे यह पुत्र
दिया है।" इसलिए उसने उस का नाम शिमोन
रखा। 34 तीसरा पुत्र होने के बाद उसने कहा,

[a] **29.24** नौकरानी

“इसलिए कि मैंने तीन बेटों को जन्म दिया है,
ज़रूर मेरा पति मुझ से प्रेम करेगा।” इसलिए
उस का नाम उसने लेवी रखा। 35 लिआ की
आखिरी और चौथी संतान भी पुत्र थी, उसने
यह कह कर उस का नाम यहूदा रखा कि इस
बार मैं प्रभु की बड़ाई करूँगी।

30 यह देख कर कि याकूब और उसके
शारीरिक संबन्ध से कोई बच्चा नहीं
पैदा हुआ, राहेल अपनी बड़ी बहन लिआ
से नफ़रत करने लगी और याकूब से बोली,
“मुझे औलाद दो नहीं तो मैं मर जाऊँगी।”
2 तब याकूब राहेल पर आग बबूला हो उठा
और कहा, “क्या मैं प्रभु की जगह पर हूँ
जिन्होंने तुम्हें माँ नहीं बनने दिया।” 3 राहेल
बोली, “मेरी सेविका बिल्हा के साथ तुम
यौन संबन्ध करो, ताकि वह मेरे लिए संतान
उत्पन्न करे।” 4 इसलिए राहेल ने अपनी
नौकरानी बिल्हा, याकूब को दी और उन्होंने
शारीरिक संबन्ध किया। 5 समय आने पर
बिल्हा ने एक बेटे को जन्म दिया। 6 तब
राहेल ने कहा, “प्रभु ने मेरा इन्साफ़ किया
है और मेरी गुहार सुन कर मुझे एक बेटा
दिया है।” इसलिए उसने उस का नाम दान
रखा। 7 समय बीत जाने के बाद उसने फिर
याकूब के द्वारा एक बेटे को जन्म दिया।
8 राहेल बोली, “मैंने बड़ी ताकत से अपनी
बहन से संघर्ष करके जीत हासिल की है।”
और उसने उस का नाम नप्ताली रखा। 9 यह
देख कर कि उसकी संतान होना बंद हो
गया है, लिआ ने अपनी नौकरानी ज़िल्पा को
लेकर याकूब की पत्नी होने के लिए दिया।
10 लिआ की नौकरानी ज़िल्पा ने याकूब के
लिए एक पुत्र को जन्म दिया। 11 तब लिआ
ने कहा, “यह तो मेरे लिए खुशी की बात
है।” इसलिए उसने उस का नाम गाद रखा।
12 लिआ की नौकरानी ने याकूब के दूसरे बेटे
को जन्म दिया। 13 तब लिआ बोली, ‘मुझे
कितनी आशीष मिली है। महिलाएँ ज़रूर मुझे
आशीषित कहेंगी।” इसलिए उसने उस का
नाम आशेर रखा। 14 गेहूँ की कटनी के समय
जब रूबेन खेत में गया, तब वहाँ उसे दूदा
फल मिले। वह उन्हें अपनी माँ लिआ के
पास ले आया। तब राहेल लिआ से बोली,
“अच्छा तो तुम्हारे बेटे के दूदा फलों में
से मुझे कुछ दो।” 15 फिर राहेल ने कहा,
“अच्छा तो तुम्हारे बेटे के दूदा फलों के बदले
आज रात में वह तुम्हारे साथ सो सकता है।”
16 शाम के वक्त जब याकूब खेत से आया
तो लिआ ने उससे मिलने के लिए आकर
कहा, “तुम्हें मेरे पास आना ही होगा, क्योंकि
मैंने सचमुच तुम्हें अपने बेटे के दूदा फलों
के बदले में किराए पर लिया है।” उस रात
वे दोनों एक संग सोए। 17 प्रभु ने लिआ की
सुनी, वह गर्भवती हुई और उसे पाँचवां बेटा
हुआ। 18 तब लिआ ने कहा, “इसलिए कि
मैंने अपनी दासी अपने पति को सौंप दी है,
इसलिए प्रभु ने मुझे मेरी मज़दूरी दी है।” सो
उसने उस का नाम इस्साकार रखा। 19 लिआ
फिर गर्भवती हुई और याकूब से उस का
छठवाँ बेटा हुआ 20 तब लिआ ने यह कह
कर उस का नाम ज़बूलून रखा कि प्रभु ने मेरे
पति के लिए अच्छे ईनाम दिए हैं। इसलिए
कि मैंने उसे छैः बेटे दिए हैं, वह मेरी इज़्ज़त
करेगा। 21 बाद में उसको बेटी भी हुई, जिस
का नाम उसने दीना रखा। 22 प्रभु ने राहेल
की हालत पर भी नज़र डाली और प्रार्थना के
उत्तर में एक संतान दी। 23 इस बेटे का नाम
उसने यह कह कर यूसुफ़ रखा, “कि, प्रभु ने
मेरी लज्जा को दूर कर दिया है।” 24 उसने
यह भी कहा कि प्रभु उसे एक और बेटा
दे। 25 यूसुफ के उत्पन्न होने के तुरन्त बाद

याकूब लाबान से बोला, “मुझे विदाई दो,
ताकि मैं अपने देश को जाऊँ। 26 मेरी पत्नियाँ
और मेरे बच्चे, जिन के लिए मैंने सेवा की है,
उन्हें मुझे दो, ताकि मैं वापस चला जाऊँ।
तुम जानते हो कि मैंने कैसे तुम्हारी सेवा की
है। 27 लाबान ने कहा, “मैं यह जान गया
हूँ कि तुम्हारी मौजूदगी ही से मैं मालामाल
हो गया हूँ। 28 मुझ पर तुम्हारा क्या आता
है, जो कुछ भी है मैं चुका दूँगा। 29 याकूब
बोला, “तुम्हें मालूम है कि इन वर्षों में किस
तरह मैंने तुम्हारी सेवा की है और तुम्हारे
मवेशी संख्या में भी बढ़ गए हैं। 30 मेरे यहाँ
आने से पहले तुम्हारे पास थोड़ा बहुत ही
था। लेकिन तुम्हारी दौलत बहुत बढ़ गई
है। मेरे हर काम से प्रभु ने तुम्हें बढ़ाया है,
लेकिन मेरा क्या होगा? अपने परिवार के
लिए साधन मैं कब जुटा पाऊँगा? 31 लाबान
ने पूछा, “तुम्हें क्या मजदूरी चाहिए? याकूब
ने कहा, “तुम मुझे कुछ मत दो। लेकिन
एक काम करो तो मैं तुम्हारी भेड़-बकरियों
को चराऊँगा और उनकी देख-रेख करूँगा।
32 आज मैं तुम्हारी सब भेड़-बकरियों के बीच
होकर निकलूँगा। चित्तीवाली, चितकबरी,
काली बकरियों को मैं अलग करूँगा। तुम
उन्हें मेरी मज़दूरी के रूप में देना। 33 भविष्य
में जब कभी मज़दूरी की बात हो, तब मेरी
सच्चाई ही गवाह ठहरेगी। और यदि मेरे
पास चित्तीदार, चितकबरे बकरों और काली
भेड़ों को छोड़ और कुछ पाया जाए तो वह
चोरी का ठहरेंगे।” 34 लाबान ने कहा, “ठीक
है तुम्हारे कहने के अनुसार हो।” 35 उसी
दिन उसने धारीदार चितकबरे बकरों तथा
सब चित्तीदार चितकबरी बकरियों को, जिन
पर सफ़ेद धब्बे थे, और भेड़ों में से सब
काले रंग की भेड़ों को अलग करके अपने
बेटों के हाथों में सौंप दिया। 36 उसने अपने
और याकूब के बीच तीन दिन के रास्ते का
अंतर रखा और याकूब लाबान की बाकी
भेड़-बकरियों को चराने लगा 37 तब याकूब
ने चिनार, बादाम और अर्मोन के पेड़ों की
हरी छड़ियों लेकर उन्हें कहीं कहीं छीलकर
छड़ियों के अंदर की सफ़ेदी को सफ़ेद
धारीदार बना दिया। 38 उसने उन छिली हुयी
छड़ियों को भेड़-बकरियों के सामने उनके
पानी पीने की नालियों में यहाँ तक कि
नाँदों में जहाँ भेड़-बकरियाँ पानी पीने आती
थीं खड़ा कर दिया। पानी पीते समय वे
गाभिन हो गईं। 39 इसलिए कि भेड़-बकरियाँ
छड़ियों के सामने गाभिन हुई थीं, उन्होंने
धारीदार, चित्तीदार और चितकबरे बच्चों को
जन्म दिया। 40 याकूब ने मेम्नों को अलग
किया और लाबान की भेड़-बकरियों के मुँह
को धारीदार और सब काले झुण्ड की ओर
कर दिया। उसने अपने झुण्ड को अलग
रखा और उन्हें लाबान की भेड़-बकरियों में
मिलने न दिया। 41 इतना ही नहीं जब जब
मोटी-ताज़ी भेड़ बकरियाँ गाभिन होतीं तो
वह ऐसा करता। 42 इसलिए जब कमज़ोर
भेड़-बकरियाँ गाभिन होतीं, तब वह ऐसा
नहीं करता, इसलिए कमज़ोर वाली लाबान
की रहीं और मोटी ताज़ी याकूब की। 43 इस
तरह याकूब बहुत अमीर हो गया। उसके
पास बहुत सी भेड़-बकरियाँ, ऊँट, गदहे और
नौकर चाकर हो गए।

31 याकूब को मालूम पड़ गया
कि लाबान के बेटे उसके ऊपर
कुड़कुड़ाते हुए कह रहे हैं, “याकूब ने
हमारे पिताजी का सब कुछ लूट लिया है।
वह हमारे पिता की बदौलत अमीर हो गया
है।” 2 अपने प्रति लाबान के बदले हुए
रवैये को भी वह देख रहा था। 3 तब प्रभु

ने याकूब से कहा, “तुम अपने पिता, दादा
और रिश्तेदारों की ज़मीन पर वापस चले
जाओ, और मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा।
4 तब याकूब ने मैदान में जहाँ उसके जानवर
थे, राहेल और लिआ को बुलाया 5 उसने
उन दोनों से कहा, “मुझे ऐसा लगता है कि
तुम्हारे पिताजी का रवैया मेरे लिए अब वैसा
नहीं, जैसा पहले था। लेकिन मेरे पिता के
प्रभु मेरे संग हैं। 6 तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे
पिताजी के लिए मैंने कितनी मेहनत की है।
7 लेकिन दस बार मेरी मजदूरी को बदलकर
उन्होंने मेरे साथ धोखा किया है। 8 जब
उन्होंने कहा, चितकबरे जानवर तुम्हारी
मज़दूरी होंगे, तब सभी जानवरों के बच्चे
चितकबरे हुए।” जब उन्होंने कहा, “पट्टीदार
जानवर तुम्हारा मेहनताना होंगे, तब सभी
जानवरों से पैदा होने वाले बच्चे पट्टीदार
थे। 9 इस तरह से प्रभु ने तुम्हारे पिताजी
के जानवरों को मुझे दे डाला। 10 एक बार
मैंने स्वप्न में देखा कि उनके गाभिन होते
समय बकरे-बकरियाँ चित्ती, पट्टीदार और
धब्बे वाले थे। 11 तब स्वप्न ही में स्वर्गदूत
ने मुझे पुकारा, याकूब, मैंने तुरन्त कहा, मैं
यहाँ हूँ। 12 उसने कहा, “देखो, बकरों को
जो बकरियों से लीला-क्रीड़ा कर रहे हैं। वे
सभी धारीदार, चित्तीदार और चितकबरे हैं।
तुम्हारे साथ लाबान का जो रवैया रहा है वह
मैं देखता रहा हूँ। 13 मैं उस बेतेल का प्रभु हूँ,
जहाँ तुमने एक खंभे पर तेल डाल कर मन्नत
मानी थी। उठो, इस जगह को छोड़कर
अपनी जन्म-भूमि चले जाओ” 14 तब राहेल
और लिआ ने उत्तर दिया, “क्या हमारे
पिताजी के घर में हमारे लिए अब भी कुछ
हिस्सा या मीरास है? 15 क्या वह हमें पराया
नहीं समझते हैं? उन्होंने तो हमें बेच दिया है
और उस रकम को खा लिया है। 16 इसमें
कोई शक नहीं कि जो दौलत जिसे प्रभु
ने हमारे पिताजी से ले ली है, हमारी और
हमारे बच्चों की है। इसलिए तुम वही करो,
जो प्रभु तुम से कह रहे हैं।” 17 तब याकूब
ने अपने बच्चों और पत्नियों को ऊँटों पर
बैठाया। 18 इसके बाद पद्दनराम में इकट्ठे हुए
अपने सब पशुओं, दौलत और प्राप्त किए
हुए जानवरों के झुण्ड को लेकर वह कनान
देश में अपने पिता इसहाक के पास जाने
के लिए चल पड़ा। 19 जब लाबान अपनी
भेड़ों का ऊन कतरने के लिए गया हुआ था,
तभी राहेल ने अपने पिता के गृह-देवताओं
की चोरी कर ली। 20 याकूब बिना लाबान
को बताए अपनी यात्रा पर रवाना हो गया।
21 अपनी सारी संपत्ति के साथ उसने फ़रात
नदी पार की और अपना रूख गिलाद के
पहाड़ी देश की तरफ़ किया। 22 तीसरे दिन
लाबान को मालूम पड़ा कि याकूब भाग
चुका है। 23 इसलिए उसने अपने रिश्तेदारों
को साथ लेकर यात्रा शुरू की और पीछा
किया। गिलाद के पहाड़ी देश में उसने उसे
जा पकड़ा। 24 प्रभु ने लाबान को दर्शन में
कहा, “संभलकर रहना कि याकूब से तुम
क्या कहते हो।” 25 गिलाद के पहाड़ी देश
में पहुँचने पर लाबान ने याकूब के तने हुए
तंबुओं को देखा और अपने तंबू भी गाड़
दिए। 26 तब लाबान याकूब से बोला, “यह
क्या? तलवार के बल से बचाए गए बंदियों
की तरह मेरी बेटियों को भगा कर ले आए?
27 तुमने मुझे बताया क्यों नहीं? यदि बताया
होता तो खुशी के साथ और वीणा बजवाते,
गीत गवाते विदाई करता। 28 तुमने मुझे मेरी
बेटियों और नातियों को चूमने तक नहीं
दिया। यह तुम्हारी बेवकूफ़ी थी। 29 मुझ
में तुम्हारा नुकसान करने की ताकत है,
लेकिन तुम्हारे पिताजी के प्रभु ने मुझ से

रात में कहा, “संभल कर, याकूब से कुछ
भला-बुरा कहना । 30 वैसे तो तुम चले आए
तो अच्छा ही किया, लेकिन मेरे देवताओं
को क्यों चुराया?” 31 तब याकूब ने जवाब
में कहा, “मैंने सोचा कि कहीं, तुम अपनी
बेटियों को मुझ से छीन न लो। 32 जिस के
पास तुम अपने देवताओं को पा लो, वह
ज़िन्दा न बचेगा। हमारे रिश्तेदारों के सामने
मेरे सामान में तुम्हारा कुछ भी निकले, तो
बताओ और ले लो।” याकूब को इस बात
की भनक भी नहीं लगी थी कि यह काम
राहेल का है। 33 तब लाबान, याकूब-लिआ
तथा उनके दास-दासियों के तंबुओं में गया,
लेकिन कुछ भी न पाया। फिर वह लिआ के
तंबू में से निकल कर राहेल के तंबू में गया।
34 राहेल गृह देवताओं को ऊँट की काठी
में रख कर उन पर बैठी थी और लाबान
सभी तंबुओं को टटोलता गया लेकिन कुछ
भी न पा सका। 35 वह अपने पिता से
बोली, “मेरे मालिक, नाराज़ न होइएगा,
क्योंकि मासिक धर्म की वजह से मैं उठ
नहीं पाऊँगी। 36 गुस्से में आकर याकूब
लाबान से झगड़ने लगा। याकूब ने लाबान
को उत्तर दिया, “मेरा क्या अपराध है कि
तुम इतना गुस्सा दिखा रहे हो?” 37 तुमने
हमारा सामान टटोल लिया है लेकिन क्या
तुम्हारे घर का कुछ सामान मिला? यदि हाँ
तो, उसे मेरे और अपने रिश्तेदारों के सामने
ले आओ, कि वे न्याय करें। 38 बीस सालों
तक मैं तुम्हारे साथ रहा। इस दौरान तुम्हारी
भेड़-बकरियों के गर्भ न गिरे। न ही मैंने
कभी तुम्हारे मेंढ़ों का मांस खाया। 39 जिस
जानवर को जंगली जानवर ने खा लिया,
उसकी भरपाई मैंने की। चाहे कुछ रात में
चुराया गया हो या दिन में, तुम तो मुझ से ले
लेते थे। 40 मेरी हालत तो यह थी कि दिन
को धूप और रात की ठंड सहनी पड़ती थी
और नींद का नामो निशान नहीं रहा करता
था। 41 बीस साल तक मैं तुम्हारे घर में रहा।
चौदह साल तक तुम्हारी दो बेटियों के लिए
और छैः साल तक भेड़-बकरियों के लिए
मैंने तुम्हारी सेवा की और मेरी मज़दूरी को
तुमने दस बार बदल डाला। 42 यदि मेरे
पिताजी के प्रभु अर्थात अब्राहम के प्रभु
जिस से डर कर इसहाक भी जिया, मेरी
तरफ़ न होते तो तुम ज़रूर ही मुझे खाली
हाथ भगा देते। प्रभु ने मेरे दुख और मेरे
हाथों की मेहनत को देखा है इसलिए उन्होंने
कल रात तुम को डाँटा।” 43 तब लाबान ने
कहा, “ये बेटियाँ और उनके बच्चे सब मेरे
हैं। ये भेड़-बकरियाँ मेरी हैं और जो कुछ तुम
देख रहे हो, सब कुछ मेरा ही है। लेकिन
आज मैं इन सभी से क्या कर सकता हूँ?
44 अब आओ ताकि हम दोनों में एक गंभीर
सहमति हो जाए और वही हम दोनों के
बीच एक गवाही[a] होगी। 45 तब याकूब ने
एक पत्थर लेकर उसे खंभे की तरह खड़ा
किया। 46 तब याकूब ने अपने रिश्तेदारों से
कहा, “पत्थर इकट्ठा करो।” इसलिए उन
लोगों ने पत्थरों का एक ढेर लगा दिया और
वहीं खाना भी खाया। 47 लाबान ने इसका
नाम यज्र सहादुथा लेकिन याकूब ने गालएद
रखा। 48,49 लाबान बोला, “यह ढेर आज
मेरे और तुम्हारे बीच गवाही है।” इसलिए
उस का नाम गिलियाद तथा मिस्पा रखा,
क्योंकि उसने कहा, “जब हम एक दूसरे
से अलग रहें, तब प्रभु मेरी और तुम्हारी
देख-भाल करते रहें। 50 यदि तुम मेरी बेटियों
के साथ बुरा बर्ताव करो या दूसरी पत्नियाँ
कर लो, तो हालांकि हमारे साथ कोई मनुष्य

[a] **31.44** वाचा

नहीं रहेगा, लेकिन देखो, प्रभु मेरे तुम्हारे
बीच गवाह होंगे। 51 लाबान ने याकूब से
कहा, “उस ढेर को और इस खंभे को देखो,
जिन्हें मैंने अपने और तुम्हारे बीच खड़ा
किया है। 52 यह ढेर और खम्भा गवाह है
कि मैं नुकसान पहुँचाने के लिए इस ढेर को
पार कर तुम्हारे पास नहीं आऊँगा और न
मुझे नुकसान पहुँचाने के लिए इस ढेर और
खंभे को पार कर तुम आओगे। 53 अब्राहम
और नाहोर के प्रभु और उनके पिता के प्रभु
ही हमारे बीच इन्साफ़ करें।” 54 इसके बाद
याकूब ने उस पहाड़ पर मेलबलि चढ़ाई
और अपने कुटुंबियों को खाने पर बुलाया।
खाना खाने के बाद उन्होंने रात पहाड़ पर
बितायी। 55 लाबान ने बड़े सवेरे उठ कर
अपने बेटे-बेटियों को चूमा और आशीर्वाद
दिया। फिर लाबान उन से विदा होकर
वापस अपनी जगह लौट गया।

32 याकूब ने अपनी यात्रा जारी रखी,
तभी प्रभु के दूत आए और उससे
मिले। 2 याकूब ने उन्हें देख कर कहा, “यह
तो प्रभु का दल है” इसलिए उसने उस जगह
का नाम महनैम रखा। 3 तब याकूब ने अपने
भाई एसाव के पास सेईर प्रदेश में अर्थात
एदोम में अपने आगे संदेश वाहक भेजे।
4 उसने उन्हें आज्ञा दी, “तुम मेरे मालिक
एसाव से कहना तुम्हारा दास याकूब यह
कहता है कि मैं लाबान के पास प्रवासी
होकर अब तक रहा। 5 मेरे पास गाय-बैल,
गदहे, भेड़-बकरियाँ और दास-दासियाँ हैं। मैं
तुम्हारे पास यह समाचार इसलिए भेज रहा
हूँ, ताकि तुम्हारी कृपा मुझ पर बनी रहे।”
6 संदेश वाहकों ने याकूब के पास लौटकर
कहा, “हम तुम्हारे भाई एसाव के पास गए
थे। वह भी तुम से मिलने के लिए चार सौ
पुरुषों के साथ आ रहा है। 7 यह सुन कर
याकूब घबरा गया और अपने साथ के लोगों
तथा जानवरों को दो भागों में बाँट दिया।
8 उसने कहा, “यदि एसाव आकर एक दल
पर हमला करे तो दूसरा दल बच जाएगा।”
9 याकूब बोला, “हे प्रभु, मेरे दादा अब्राहम
और मेरे पिता इसहाक के प्रभु आपने तो
कहा था कि अपने देश में अपने रिश्तेदारों के
पास लौट जाओ और मैं तुम्हें संपन्न करूँगा।
10 मैं आपकी सब करुणा और सब सच्चाई
के उनकामों के लायक नहीं हूँ, जो आपने
अपने दास पर प्रगट किए क्योंकि मैं तो सिर्फ
अपनी लाठी लेकर यरदन के पार गया था
और अब मेरे पास दो दल हैं। 11 मैं बिनती
करता हूँ कि मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ
से छुड़ा लें, क्योंकि मैं उससे डरता हूँ, कहीं
वह मुझ पर आक्रमण करके माताओं और
बच्चों को मार न डाले। 12 आपने तो कहा था
कि मैं तुम्हें दौलतमंद करूँगा और तुम्हारी
पीढ़ी को समुद्र की बालू के कणों की तरह
बढ़ाऊँगा, जिसे गिना भी नहीं जा सकता।”
13 इसलिए उसने रात वहीं बितायी और जो
कुछ उसके पास था उसमें से उसने अपने
भाई एसाव को ईनाम देने के लिए चुन कर
निकाला। 14 दो सौ बकरियाँ, बीस बकरे,
दो सौ भेड़ें और बीस मेढ़े 15 दूध देने वाली
तीस उँटनियाँ, उनके बच्चे, चालीस गायें, दस
सांड, बीस गदहियाँ और दस गदहे। 16 उसने
उन्हें अलग-अलग झुण्डों में करके अपने
दासों को देकर भेजा और उन से कहा, “मेरे
आगे बढ़ चलो और झुण्डों के बीच फ़ासला
रखो।” 17 आगे के झुण्ड वालों को यह आज्ञा
दी, “जब मेरा भाई एसाव तुम से यह पूछे
कि तुम किस के दास हो, कहाँ जा रहे हो
और ये जानवर किस के हैं ? 18 तब तुम
कहना कि ये तुम्हारे दास याकूब के हैं जो

मेरे मालिक एसाव के लिए भेजा ईनाम है,
और देखो, वह भी हमारे पीछे-पीछे चला
आ रहा है। 19 इसके बाद उसने दूसरे, तीसरे
और उन सब को जो झुण्डों के पीछे-पीछे
आ रहे थे, आज्ञा दी कि तुम जब एसाव
से मिलो ऐसा ही कहना। 20 "देखो, तुम्हारा
सेवक याकूब भी पीछे पीछे आ रहा है।"
क्योंकि उसने सोचा, कि मैं अपने आगे उसके
लिए भेंट भेज कर उसे खुश करूँगा और
उसके बाद उसे देखूँगा। संभव है कि वह
मुझे अपना ले। 21 इसलिए भेंट उसके पहुँचने
से पहले पहुँच गई और वह उस रात तंबू
ही में रहा। 22 उसी रात याकूब अपनी दोनों
पत्नियों, दोनों दासियों और ग्यारह बेटों के
साथ यब्बोक नदी के घाट से पार उतर गया।
23 उन्हें नदी के पार उतारने के बाद उसने
अपना सब कुछ पार भेज दिया। 24 इसके
बाद याकूब अकेला रह गया और एक पुरुष
के साथ भोर तक संघर्ष करता रहा। 25 जब
उसने पाया कि वह उस पर जीत हासिल नहीं
कर पाएगा तो उसने उसकी जांघ की नस
को छुआ। इसलिए याकूब की जांघ की नस
संघर्ष करते समय जोड़ से उखड़ गई। 26 तब
वह बोल उठा, "सुबह हो रही है इसलिए
मुझे जाने दो।" लेकिन याकूब बोला, "जब
तक तुम मुझे आशीर्वाद न दो, मैं तुम्हें जाने
नहीं दूँगा। 27 तब उसने पूछा, "तुम्हारा नाम
क्या है?" उसने जवाब दिया, "याकूब"।
28 तब उसने कहा, "अब से तुम्हारा नाम
याकूब नहीं, लेकिन इस्राएल होगा, क्योंकि
तुम प्रभु और इन्सान दोनों ही से लड़ कर
जीत गए हो।" 29 तब याकूब ने उससे कहा,
"कृपया मुझे अपना नाम बताईये।" लेकिन
उसने कहा, "मेरा नाम तुम क्यों पूछ रहे
हो?" फिर उसने उसे वहीं आशीर्वाद दिया।
30 इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम
पनीएल रखा, क्योंकि उसने कहा, "प्रभु की
उपस्थिति के अनुभव के बावजूद मेरी जान
बची रही। 31 पनीएल से निकलते-निकलते
सुबह हो चुकी थी और वह जांघ से लंगड़ा
रहा था 32 इसलिए इस्राएली आज तक जाँघ
को जोड़ने वाली कूल्हे की नस को नहीं
खाते, क्योंकि उस पुरुष ने याकूब की जांघ
की जोड़ पर कूल्हे की नस को छुआ था।

33 याकूब ने देखा कि एसाव चार सौ
आदमी साथ लिए हुए आ रहा है।
2 तब उसने बाल बच्चों को अलग-अलग बाँट
कर लिया और राहेल तथा दोनों दासियों
को सौंप दिया। 3 उसने सब के आगे बच्चों
समेत नौकरानियों को उसके पीछे बच्चों समेत
लिआ को और सब के पीछे राहेल और
यूसुफ़ को रखा। 4 वह खुद उन सब के
आगे बढ़ा और सात बार ज़मीन पर गिर के
दण्डवत् करके अपने भाई के पास पहुँचा।
तब एसाव उससे मिलने के लिए दौड़ा और
सीने से लगा कर, गले से लिपटकर चूमा,
इसके बाद वे दोनों रो पड़े। 5 फिर उसने
महिलाओं और बच्चों के बारे में पूछा कि
वे कौन हैं? वह बोला, "ये तुम्हारे दास के
बच्चे हैं, जिन्हें प्रभु ने अपनी कृपा से दिए
हैं। 6 तब बच्चों सहित दासियों ने पास आकर
दण्डवत् किया। 7 फिर सभी बच्चों के साथ
लिआ ने आकर दण्डवत् किया बाद में यूसुफ़
और राहेल ने भी दण्डवत् किया। 8 तब
उसने पूछा, "तुम्हारे इस बड़े झुण्ड की क्या
ज़रूरत है?" उसने जवाब दिया, "यह कि मेरे
मालिक की मेहरबानी मुझ पर हो।" 9 एसाव
बोल उठा, "याकूब मेरे पास तो बहुत है,
यह सब तुम्हीं रखो।" 10 याकूब बोला, "नहीं
भाई, नहीं, यदि तुम मुझ से खुश हो, तो यह
सब ईनाम मेरे हाथ से ले लो। अब जब कि

मैंने तुम्हें देख लिया है और तुमने मुझे अपना
लिया है, यह मेरे लिए प्रभु को देखने की तरह
ही है और तुम मुझ से प्रसन्न हो। 11 इसलिए
यह ईनाम, जो तुम्हें दिया जा रहा है, ले लो।
प्रभु ने मुझ पर कृपा की है और मेरे पास बहुत
है।" जब याकूब ने बहुत ज़ोर ज़बरदस्ती
की, तब एसाव ने उसकी भेंट ग्रहण कर ली।
12 फिर एसाव ने कहा, "आओ हम आगे बढ़ें
और मैं तुम्हारे आगे-आगे चलूँगा। 13 याकूब
बोला, मेरे मालिक तुम जानते है कि मेरे साथ
खूबसूरत बच्चे, दूध देने वाली भेड़-बकरियाँ
और गायें हैं। यदि ऐसे पशु एक दिन भी हाँके
जाएँ, तो सब के सब मर जाएँगे। 14 इसलिए
मालिक अपने दास के आगे बढ़ जाओ और
मैं इन पशुओं की चाल के अनुसार, जो मेरे
आगे हैं और बाल बच्चों की चाल के अनुसार
धीरे से फिर चल कर सेईर में तुम्हारे पास
पहुँचूँगा। 15 एसाव बोला, "क्या अपने संग
वालों में से मैं कई एक तुम्हारे साथ छोड़
जाऊँ? याकूब ने कहा, "क्यों किस लिए?
इतना ही बहुत है कि तुम्हारी कृपा मुझ पर
बनी रहे। 16 तब एसाव उसी दिन सेईर के
लिए रवाना हो गया। 17 वहाँ से निकल कर
याकूब सुक्कोत गया जहाँ उसने अपने लिए
एक घर और जानवरों के लिए झोपड़ियाँ
बनाई। 18 याकूब ने जो पद्दनराम से आया था,
कनान देश के शेकेम नगर के पास सकुशल
पहुँचकर नगर के सामने डेरे खड़े किए।
19 जिस ज़मीन पर उसने अपना तंबू खड़ा
किया, उसको उसने शेकेम के पिता हमोर
के बेटों के हाथ से एक सौ कसीतों में खरीदा
था, 20 वहाँ उसने एक वेदी बना कर उस का
नाम एल-एलोहे-इस्राएल रखा।

34 लिआ की बेटी दीना जो याकूब
से उत्पन्न हुई थी, उस देश की
लड़कियों से मिलने निकली। 2 उस देश के
प्रधान हित्ती हमोर के बेटे शेकेम ने उसे ले
जाकर उसके साथ बलात्कार किया। 3 वह
उसे चाहने लगा और रोमांस की बातें करने
लगा। 4 शेकेम ने अपने पिता हमोर से कहा
कि उस लड़की को उसकी पत्नी होने के
लिए दिला दे। 5 जब याकूब को मालूम पड़ा
कि शेकेम ने उसकी बेटी के साथ बलात्कार
किया, तब उसके बेटे जानवरों के साथ
मैदान ही में थे, इसलिए उनके आने तक वह
खामोश रहा। 6 तभी शेकेम का पिता हमोर
याकूब से बातचीत करने के लिए निकल
पड़ा 7 यह जानकारी मिलते ही याकूब के बेटे
मैदान से वापस लौट आए। ये सभी उदास
और गुस्से में थे क्योंकि शेकेम ने याकूब की
बेटी को भ्रष्ट करके इस्राएल में ऐसी बेवकूफ़ी
का काम कर डाला था जिसे नहीं किया जाना
चाहिए था। 8 लेकिन हमोर ने उससे बातचीत
करते समय कहा, "मेरे बेटे का मन तुम्हारी
बेटी पर लग गया है। इसलिए इन दोनों की
शादी करा दी जाए। 9 हमारे बीच शादी-ब्याह
होते रहने चाहिए। तुम अपनी बेटियों की
शादी हमारे बेटों से करो और हमारी बेटियों
को अपने बेटों के लिए लिया करो। 10 इस
तरह से तुम हमारे बीच बसे रहोगे। यह देश
तुम्हारे सामने है, इसमें रह कर व्यापार करो
और पैसा कमाओ।" 11 शेकेम ने भी दीना
के पिता और भाईयों से कहा, "यदि तुम्हारी
कृपा मुझ पर बनी रहे, तब जो कुछ तुम मुझ
से मांगोगे, मैं दूँगा।" 12 तुम चाहे कितना ही
मूल्य और भेंट क्यों न माँगो, मैं तुम्हारे कहने
के अनुसार दूँगा, लेकिन उस कन्या को पत्नी
होने के लिए मुझे दे दो। 13 लेकिन याकूब के
बेटों ने यह सोच कर कि उसने हमारी बहन
से बलात्कार किया है, शेकेम और उसके
पिता को चालाकी से उत्तर दिया। 14 उन्होंने

कहा, “नहीं, हम यह नहीं कर सकते कि
किसी खतना रहित व्यक्ति को अपनी बहन
दें क्योंकि इस से हमारी बेइज्ज़ती होगी।
15 हाँ एक शर्त ज़रूर है, यदि तुम हमारी
तरह बन जाओ, अर्थात तुम में से हर एक
पुरुष अपना खतना कराए। 16 तब हम अपनी
बेटियाँ शादी में तुम्हें दिया करेंगे और तुम्हारी
बेटियाँ अपना लिया करेंगे और तुम्हारे साथ
बसे रह कर एक हो जाएँगे। 17 लेकिन यदि
तुम खतना कराने के लिए हमारी नहीं मानोगे,
तो हम अपनी बेटी को लेकर चले जाएँगे।
18 उनकी बातें हमोर और उसके बेटे शेकेम
को करने लायक लगीं। 19 उस जवान ने जो
याकूब की बेटी को चाहता था इस काम में
देरी नहीं की। वह अपने पिता के सारे घर में
प्रतिष्ठित था। 20 इस तरह हमोर और उस का
बेटा शेकेम अपने नगर के फ़ाटक के पास
आए और अपने नगरवासियों को यह कह
कर समझाने लगे,। 21 “वे लोग हमारे साथ
मेल से रहना चाहते हैं, इसलिए उन्हें इस देश
में रह कर लेन-देन करने दो। देखो, यह देश
उनके लिए भी बहुत है। साथ ही हम लोग
उनकी बेटियाँ ब्याह लें और अपनी बेटियों
को उन्हें दिया करें। 22 सिर्फ इस शर्त पर वे
लोग हमारे साथ रहने और एक ही समुदाय
के हो जाने को राजी हैं, कि उनके पुरुषों
की तरह हमारे पुरुषों का भी खतना किया
जाए। 23 क्या उनकी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल
यहाँ तक कि उनके सारे जानवर और धन
दौलत हमारी न हो जाएगी? इतना ही किया
जाए कि हम लोग उनकी सलाह मान लें,
तो वे हमारे साथ रहेंगे।” 24 इसलिए जितने
लोग उस नगर के फ़ाटक से निकलते थे,
उन सभों ने हमोर और उसके बेटे शेकेम की
बात मानी। और जितने पुरुष उस नगर के
फ़ाटक से निकलते थे, उनका खतना किया
गया। 25 शिमोन और लेवी याकूब के बेटे
और दीना के भाई थे। तीसरे दिन वे निडरता
से अपनी तलवार लिए हुए नगर में घुस गए।
उन्होंने पुरुषों को जो अपनी पीड़ा की वजह
से पड़े थे मार डाला। 26 हमोर और उसके
बेटे शेकेम की भी हत्या करके अपनी बहन
को उनके यहाँ से निकाल ले गए। 27 इसलिए
कि उनकी बहन को उस नगर में अशुद्ध किया
गया था, नगर को याकूब के बेटों ने लूट
लिया। 28 भेड़-बकरी, गाय-बैल, गदहे और
सारी दौलत को उन्होंने लूट लिया 29 बाल
बच्चे, महिलाएँ और जो कुछ भी वहाँ था, वह
सब वे अपने साथ ले गए। 30 तब याकूब ने
शिमोन और लेवी से कहा, “तुमने इस देश
में रहने वालों, कनानियों और परिज्जियों ने
शर्मिन्दा करके मुझे परेशानी में डाल दिया
है और हम संख्या में कम हैं। अब वे सब
इकट्ठा होकर मेरे खिलाफ़ खड़े होंगे और
मुझ पर हमला करेंगे। इस तरह तो मैं अपने
परिवार सहित बर्बाद हो जाऊँगा।” 31 लेकिन
वे बोले, “उनकी यह हिम्मत कैसे हुई कि
हमारी बहन के साथ वेश्या का सा बर्ताव
करें?”

35 तब प्रभु ने याकूब से कहा, “उठो,
बेतेल को जाकर वहीं रहो। अपने
भाई एसाव से डर कर भागते समय जिस
प्रभु ने तुम से बातचीत की, उसके लिए एक
वेदी बनाओ।” 2 तब याकूब ने अपने परिवार
से और उन से जो उसके साथ थे कहा,
“तुम्हारे बीच जो देवताओं की मूर्तियाँ हैं,
उन्हें निकाल कर फेंक दो। अपने आपको
शुद्ध करने के साथ अपने कपड़े बदल डालो।
3 आओ, यहाँ से हम बेतेल को जाएँ। वहाँ मैं
प्रभु के लिए एक वेदी बनाऊँगा। मुसीबत के
समय उन्होंने मुझे उत्तर दिया और मैं जहाँ

कहीं भी गया, वह मेरे साथ रहे।” 4 इसलिए
उन्होंने अन्यजातियों के देवताओं की उन
मूर्तियों और कान की बालियों को याकूब
को सौंप दिया। याकूब ने उन्हें शेकेम के
बांज वृक्ष के नीचे गाड़ दिया। 5 वहाँ से
रवाना होने के बाद उनके चारों तरफ़ के
नगरों में डर समा गया और उन्होंने याकूब
के बेटों का पीछा नहीं किया। 6 फिर याकूब
उन सब लोगों के साथ जो उसके साथ थे,
कनान देश के लूज नगर अर्थात बेतेल को
आया। 7 वहाँ एक वेदी बना कर उस जगह
का नाम उसने एल बेतेल रखा। जब याकूब
अपने भाई से डर कर भागा था, तब वहीं
प्रभु ने उससे बातचीत की थी। 8 रिबका
की धाय दबोरा मर गई और उसे बेतेल
के नीचे सिन्दूर पेड़ के नीचे मिट्टी दी गई।
इसलिए इसका नाम अल्लोन-बक्कूत रखा गया।
9 पद्नराम से लौटने के बाद प्रभु ने दूसरी बार
उसको दर्शन देकर आशीर्वाद दिया। 10 प्रभु ने
उससे कहा, “तुम्हारा नाम अभी तक याकूब
था। भविष्य में तुम याकूब नहीं इस्राएल
कहलाओगे 11 सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने
उससे कहा, “मैं सब से ज़्यादा ताकतवर
हूँ। तुम उन्नति करो और बढ़ जाओ। तुम
से एक जाति वरन् जातियों का एक झुण्ड
पैदा होगा। तुम से राजा भी उत्पन्न होंगे।
12 जो देश मैंने अब्राहम और इसहाक को
दिया, वह तुम्हें भी दूँगा। तुम्हारे बाद वह देश
तुम्हारे वंश को भी दूँगा।” 13 जिस जगह पर
प्रभु ने उससे बातें कीं, वहीं से वह उसके
पास से ऊपर चले गए। 14 प्रभु ने याकूब से
जिस जगह पर बातें की वहाँ उसने पत्थर
का एक खम्भा खड़ा किया और इसके ऊपर
तेलघ चढ़ाया और तेल भी उण्डेल दिया।
15 इसलिए उस जगह का नाम याकूब ने
बेतेल रखा, जहाँ प्रभु ने उससे बातचीत की
थी। 16 फिर वे बेतेल से चल पड़े। एप्राता
पहुँचने से पहले राहेल को प्रसव पीड़ा शुरू
हो गई, जो धीरे-धीरे असहनीय भी हो गई।
17 उस दर्द के समय धाई ने कहा, “डरो मत,
इस बार भी तुम्हारे बेटा होने वाला है।”
18 उसके मरने से पहले उसने बच्चे का नाम
बेनोनी रखा। लेकिन उसके पिता ने उस का
नाम बिन्यामीन रखा। 19 बेतलेहेम के रास्ते
में एप्राता में उसे दफ़ना दिया गया। 20 उसकी
कब्र पर याकूब ने एक खम्भा खड़ा किया जो
आज तक है। 21 इसके बाद इस्राएल ने वहाँ
से निकल कर एदेर नामक गुम्मट की दूसरी
तरफ़ अपना तंबू लगाया। 22 इस्राएल के उस
देश में रहने के दिनों में रूबेन ने अपने पिता
की रखैल बिल्हा के साथ कुकर्म किया, जिस
की खबर इस्राएल को लग गई। 23 याकूब
के बारह बेटे हुए, लिआ के बेटे याकूब
का पहलौठा रूबेन शिमोन, लेवी, यहूदा,
इस्साकार और ज़बूलून। 24 राहेल के बेटे
यूसुफ और बिन्यामीन। 25 राहेल की दासी
बिल्हा के बेटे : दान और नप्ताली 26 लिआ
की दासी ज़िल्पा के बेटे गाद और आशेर।
याकूब के ये ही बेटे थे जो उससे पद्नराम
में पैदा हुए। 27 याकूब अपने पिता इसहाक
के पास मम्रे में आया जो किर्यत-अर्बा अर्थात
हेब्रोन है, जहाँ अब्राहम और इसहाक परदेशी
होकर रहे थे। 28 इसहाक एक सौ अस्सी
साल का हो गया। 29 इसहाक बुढ़ापे में पूरी
उम्र का होकर मर गया। उसके बेटे एसाव
और याकूब ने उसे मिट्टी दी।

36 अब एसाव अर्थात एदोम की
वंशावली है। 2 एसाव ने कनानी
महिलाओं से शादी कर ली अर्थात् हित्ती
एलोन की बेटी आदा, अना की बेटी हिव्वी,
सिबोन की यह नातिन आहोलीबामा 3 फिर

उसने इश्माएल की बेटी बासमत से शादी
कर ली जो नबायोत की बहन थी। 4 एसाव
से आदा ने एलीपज़ और बासमत ने रूएल
को जन्माया। 5 ओहोलीबामा ने यूश, यालाम
और कोरह को जन्म दिया। एसाव के ये ही
बेटे कनान देश में पैदा हुए। 6 एसाव ने अपनी
पत्नियों, पुत्रों, पुत्रियों, घर के सब प्राणियों,
पशुओं, सब चौपायों, अपने सब सामान को
साथ लाया, जो उसने कनान देश में इकट्ठा
किया था। इसके बाद वह अपने भाई याकूब
के पास से दूसरे देश को चला गया। 7 उनकी
दौलत इतनी हो चुकी थी कि वे एक साथ न
रह सके। जिस देश में वे परदेशी होकर रहते
थे, वहाँ वे अपने मवेशियों के बढ़ जाने से
साथ में नहीं रह पा रहे थे। 8 एसाव पहाड़ी
देश सेईर में रहने लगा। एसाव एदोम भी
कहलाता है। 9 सेईर नाम पहाड़ी देश में रहने
वाले एदोमियों के पिता एसाव की वंशावली
इस तरह है। 10 एसाव के बेटों के नाम ये
हैं, अर्थात एसाव की पत्नी आदा का पुत्र
एलीपज़ और उसी एसाव की पत्नी बासमत
का पुत्र रूएल। 11 एलीपज़ के ये बेटे हुए,
अर्थात तेमाव, ओमार, सदो, गाताम और
कनज। 12 एसाव के बेटे एलीपज़ की तिम्ना
नामक एक रखैल थी जिस ने एलीपज़ के
द्वारा अमालेक को जन्म दिया. एसाव की
पत्नी आदा के वंश में ये ही हुए। 13 रूएल
के ये बेटे हुए; अर्थात नहत, ज़ेरह, शम्मा
और मिज्जा; एसाव की पत्नी बासमत के
वंश में हुए। 14 ओहोलीबामा जो एसाव की
पत्नी और सिबोन की नातिन और अना की
बेटी थी, उसके ये बेटे हुए; अर्थात उसने
एसाव के द्वारा यूश, यालाम और कोरह को
जन्म दिया। 15 एसाववंशियों के अधिपति
में हुएः अर्थात् एसाव के जेठे एलीपज़
के वंश में से तेमान, ओमर अधिपति,
सपो अधिपति, कनज अधिपति। 16 कोरह
अधिपति, गाजाम अधिपति, अमालेक
अधिपति, एलीपज़ वंशियों में से, एदोम देश
में ये अधिपति हुए और ये आदा के वंश
में हुए 17 एसाव के बेटे रूएल के वंश में
हुए; अर्थात नहत अधिपति, ज़ेरह अधिपति,
शम्मा अधिपति, मिज्जा अधिपति; रूएल
वंशियों में से एदोम देश में ये ही अधिपति
हुए और ये ही एसाव की पत्नी बासमत के
वंश में हुए। 18 एसाव की पत्नी ओहोलीबामा
के वंश में हुए; अर्थात यूश अधिपति, यालाम
अधिपति, कोरह अधिपति, अना की बेटी
ओहोलीबामा जो एसाव की पत्नी थी उसके
वंश में ये ही हुए। 19 एसाव जो एदोम भी
कहलाता है, उसके वंश ये हैं और उनके
अधिपति भी ये हुए। 20 सेईर जो होरी नामक
जाति का था, उसके ये बेटे उस देश में पहले
से रहते थे, लोतान, शोबाल, शिबोन, अना।
21 दीशोन, एसेर और दीशान : एदोम देश
में सेईर के ये होरी जाति वाले अधिपति
हुए। 22 लोतान के बेटे, होरी और होमाम हुए
और लोतान की बहन तिम्ना थी। 23 शोबाल
के ये बेटे हुए : आल्वान, मानहत, एबाल,
शपो और ओनाम। 24 सिदोन के ये बेटे हुए :
अय्या और अना; यह वही अना है जिस को
जंगल में अपने पिता सिबोन के गदहों को
चराते-चराते गर्म पानी के झरने मिले। 25 अना
के दीशोन नाम बेटा हुआ और उसी अना के
ओहोलीबामा नामक बेटी हुई। 26 दीशोन के
ये बेटे हुए : हेमदान, एश्बान, मित्रान और
कराना। 27 एसेर के ये बेटे हुए : बिल्हान,
जाबान और आकान 28 दीशान के ये बेटे हुए
: ऊज़ और अरान 29 होरियों के अधिपति ये
थे : लोतान, अधिपति, शोबाल अधिपति,
शिबोन अधिपति, अना अधिपति 30 दीशोन
अधिपति, एसेर अधिपति, दीशोन अधिपति,

सेईर देश में होरी जाति वाले ये अधिपति
हुए। 31 जब इस्राएलियों पर किसी ने शासन
न किया था, तब भी एदोम के देश में ये
राजा हुए। 32 बोर के बेटे बेला ने एदोम में
राज्य किया और उसकी राजधानी का नाम
दिन्हाबा है। 33 बेला के मरने पर, बोस्त्र
निवासी ज़ेरह का बेटा योबाब उसकी जगह
पर राजा हुआ 34 योबाब के देहान्त के बाद
तेमानियों के देश का निवासी हुशाम उसकी
जगह पर राजा हुआ। 35 फिर हुशान के मरने
पर बदद का बेटा हदद उसके स्थान पर
राजा बना। यह वही है जिस ने मिद्यानियों
को मोआब के देश में मार लिया और उसकी
राजधानी का नाम अबीत है। 36 हदद के
मरने पर मस्त्रे का वासी सम्ला उसके स्थान
पर राजा बना। 37 फिर सम्ला के मरने पर
शाऊल जो महानद के तट वाले रहोबोत
नगर का था वह उसके स्थान पर राजा
हुआ 38 शाऊल के मरने पर अकबोर का
बेटा बाल्हानान उसके स्थान पर राजा बना
39 अकबोर के बेटे बाल्हानान के मरने पर
हदर उसकी जगह पर राजा हुआ उसकी
राजधानी का नाम पाऊ और पत्नी का
नाम महेतबेल था, जो मेजाहब की नातिन
और मत्रेद की बेटी थी 40 एसाववंशियों
के अधिपतियों के कुलों और स्थानों
के अनुसार उनके नाम ये है : तिम्ना
अधिपति, अल्बा अधिपति, यतेत अधिपति
41 ओहोलीबामा अधिपति, एला अधिपति,
पीनोन अधिपति 42 कनज अधिपति, तेमान
अधिपति, मिबसार अधिपति 43 मग्दीएल
अधिपति, ईराम अधिपति, एदोम वंशियों ने
जो देश अपना कर लिया था, उसके निवास
स्थानों में उनके ये अधिपति हुए : एदोमी
जाति का मूल पुरुष एसाव है।

37 याकूब कनान देश में रहा जहाँ
उसके पिता परदेशी की तरह रहे
थे। 2 याकूब का वंश यूसुफ़ सत्रह साल का
होकर अपने भाईयों के संग भेड़-बकरियों को
चराया करता था। वह अपने पिता की पत्नी
बिल्हा और ज़िल्पा के बेटों के साथ रहा
करता था। वह पिता से उनकी चुगली किया
करता था। 3 इस्राएल[a] अपने सब बेटों से
ज़्यादा यूसुफ़ से प्यार करता था, क्योंकि वह
उसके बुढ़ापे में पैदा हुआ था। उसने यूसुफ़
के लिए रंग-बिरंगा वस्त्र भी बनवा दिया
था। 4 उसके भाईयों को यह एहसास हुआ
कि उनके पिताजी यूसुफ़ से सब से ज़्यादा
प्यार करते हैं। इसलिए वे उससे नफ़रत करने
लगे और ठीक से बात तक नहीं करते थे।
5 एक बार जब एक सपने को उसने अपने
भाईयों से बताया, तो वे उससे और ज़्यादा
नफ़रत करने लगे। 6 वह बोला, “मेरे सपने
के बारे में सुनो” 7 उसने बताया, “मैंने देखा
कि हम लोग खेत में पूले बाँध रहे हैं, तभी
मेरा पूला उठ कर सीधा खड़ा हो गया।
तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ़ से घेर
लिया और उसे दण्डवत् किया। 8 यह सुन
कर उसके भाईयों ने उससे पूछा, “क्या तुम
सचमुच हमारे ऊपर शासन करोगे? यहीं से
वे उसके प्रति और ज़्यादा कड़वाहट रखने
लगे। 9 दूसरा सपना देखने के बाद उसे भी
उसने अपने भाईयों को बता डाला, “इस बार
मैंने देखा कि सूरज और चाँद मुझे सिज़दा
कर रहे हैं।” 10 पिता ने जब यह सपना सुना
तो यूसुफ़ को बहुत डाँटा और कहा, “क्या
वास्तव में मैं, तुम्हारी माँ जी और तुम्हारे भाई
तुम्हारे सामने ज़मीन पर गिर कर दण्डवत्
करेंगे?” 11 यूसुफ़ के भाई तो उससे जला
करते थे, लेकिन याकूब ने उसकी बातों को

[a] **37.3** याकूब

याद रखा। 12 यूसुफ़ के भाई अपने पिता की
भेड़-बकरियों को चराने शेकेम गए हुए थे।
13 तभी इस्राएल ने यूसुफ़ से कहा, “तुम्हारे
भाई शेकेम में भेड़-बकरियाँ चरा रहे होंगे,
उनके पास जाओ।” 14 वह बोला, “जाकर
उनका हाल-चाल मालूम करना और आकर
मुझे बताना कि वे और मवेशी ठीक-ठाक
हैं कि नहीं।” इसलिए उसने उसे हेब्रोन की
घाटी के बाहर भेजा और वह शेकेम आया
15 शेकेम में किसी आदमी ने उसे यहाँ-वहाँ
भटकता देख पूछा, “तुम यहाँ किसे ढूँढ
रहे हो?” 16 वह बोला, “मैं अपने भाईयों
की तलाश में हूँ, मेहरबानी से मेरी मदद
करें यह जानने में कि वे कहाँ भेड़े चरा
रहे हैं।” 17 वह पुरुष बोला, “वे यहाँ से तो
चले जा चुके हैं, लेकिन जाने से पहले मैंने
उन्हें कहते सुना था कि दोतान को चला
जाए।” इसलिए यूसुफ़ वहाँ से रवाना हो
चला और दोतान में भाईयों को पा लिया।
18 दूर से देखते ही उन्होंने यह योजना बनानी
शुरू की कि कैसे उसे मार डाला जाए। 19 वे
आपस में कहने लगे, “देखो वह स्वप्न देखने
वाला चला आ रहा है। 20 इसलिए उसे मार
कर किसी गड्ढे में डाल दें और पिता को
खबर कर दें कि किसी जंगली जानवर ने
उसे खा लिया। फिर हम देखेंगे कि उसके
स्वप्नों का क्या होगा। 21 इतना सुन कर
रूबेन ने उसकी जान को बचाने के ख्याल
से कहा, “हम उस का खून न करें।” 22 फिर
वह बोला, “खून करने के बदले उसे इस
गड्ढे में डाल दिया जाए। ऐसा कह कर
वह उसे बचा कर पिताजी के पास वापस
पहुँचाना चाहता था। 23 इसलिए यूसुफ़ के
वहाँ आ जाने पर उन्होंने उस का रंग-बिरंगा
चोगा उतार लिया, 24 और उसे सूखे गड्ढे में
डाल दिया। 25 इसके बाद वे खाना खाने बैठ
गए,जब उन्होंने देखा कि इश्माएली लोग
खुशबूदार वस्तुएँ, बलसान,और गन्धरस
लादे हुए गिलाद से मिस्र चले जा रहे थे,
26 तब यहूदा ने अपने भाईयों से कहा, “अपने
भाई की जान लेने और उसका खून छिपाने से
हमें क्या फ़ायदा? 27 चलो, उसे इश्माएलियों
को बेच डालते हैं, हम उसे मारेंगे नहीं,वह
हमारा भाई और हमारी ही हड्डी-मांस है।”
28 तभी मिद्यानी व्यापारी वहाँ पहुँच गए।
इसलिए यूसुफ़ के भाईयों ने उसको उस
गड्ढे में से खींच कर बाहर निकाला और
इश्माएलियों के हाथ चाँदी के बीस टुकड़ों में
बेच दिया। वे लोग यूसुफ़ को मिस्र ले गए।
29 रूबेन ने गड्ढे पर लौटकर देखा कि यूसुफ़
गड्ढे में नहीं है। 30 इसलिए शोक करता हुआ
अपने भाईयों के पास पहुँचकर कहने लगा,
“यूसुफ़ तो है नहीं अब मैं करूँ तो क्या?”
31 भाईयों ने यूसुफ़ की कोटी को लिया और
एक बकरे को मार कर उसके खून में उसे
डुबा दिया। 32 उन्होंने रंग-बिरंगी कोटी को
अपने पिता के पास भेज कर कहला भेजा,
“यह हम को मिली है। आप पहचान लीजिए
कि, यह आपके बेटे की कोटी है या नहीं?”
33 पिताजी ने उसे पहचान लिया और कहा,
“हाँ, यह मेरे बेटे की है। किसी दुष्ट जानवर
ने इसे खा लिया है। बेशक यूसुफ़ फाड़ डाला
गया है।” 34 तब याकूब ने अपने कपड़े फाड़े
और कमर में टाट लपेटा और अपने बेटे के
लिए बहुत दिन तक रोता रहा। 35 उसके सभी
बेटे-बेटियों ने उसको तसल्ली देने की कोशिश
की, लेकिन वह व्याकुल होकर कहता रहा,
“मैं तो रोते-रोते अपने बेटे के पास अधोलोक
में जा उतरूँगा।” और वह बोला,” मैं रोते-
रोते कब्र तक पहुँच जाऊँगा।” 36 इस बीच

मिद्यानियों ने यूसुफ़ को मिस्र में ले जाकर
फ़िरौन के पोतीपर नामक एक हाकिम और
अंगरक्षकों के प्रधान के हाथ बेच डाला।

38 उसी दौरान यहूदा अपने भाईयों को
छोड़कर अदुल्लाम में रहने वाले हीरा
के पास रहने लगा। 2 वहाँ शूआ नाम के
व्यक्ति की बेटी से उसने शादी कर ली।
3 उसके जो पुत्र हुआ, उस का नाम उसने
एर रखा। 4 उसने दूसरे बेटे का नाम ओनान
रखा 5 तीसरी बार भी उसको बेटा हुआ,
जिस का नाम शेला रखा गया। उस समय
यहूदा कजीब में रहा करता था। 6 यहूदा ने
तामार नाम की एक लड़की से अपने जेठे
एर की शादी कर दी। 7 प्रभु परमेश्वर की
निगाह में वह बड़ा दुष्ट था इसलिए उन्होंने
उसे मार डाला 8 तब यहूदा ने ओनान से
कहा, “अपनी भाभी के पास जाकर देवर
की ज़िम्मेदारी पूरी करके अपने भाई के लिए
औलाद पैदा करो।” 9 ओनान को मालूम था
कि उस का वंश नहीं होगा, इसलिए जब वह
अपनी भाभी के पास गया, तो अपना वीर्य
ज़मीन पर गिरा दिया, जिस से कि उसके
भाई का वंश न चले। 10 लेकिन उसके ऐसे
करने से प्रभु खुश न थे, इसलिए वह आगे
को नहीं जिया। 11 तब यहूदा ने अपनी बहू
तामार से कहा, “जब तक मेरा बेटा शेलह
जवान न हो जाए तब तक तुम अपने पिता
के घर में विधवा बैठी रहो।” यहूदा को यह
डर था कि उसके भाईयों की तरह शेला भी
मर न जाए। इसलिए तामार अपने पिताजी के
घर जाकर रहने लगी। 12 काफी समय बाद
शूआ की बेटी यानि कि यहूदा की पत्नी मर
गई। शोक के समय के बीत जाने के बाद
यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन कतरने वालों के
पास अपने दोस्त अदुल्लामवासी सहित तिम्ना
को गया 13 तामार को यह बताया गया कि
उस का ससुर भेड़ों का ऊन कतरने वालों के
लिए तिम्ना जा रहा है। 14 तब उसने यह सोच
कर कि शेला सयाना तो हो गया, लेकिन
मैं उसकी पत्नी होने के लिए नहीं दी गई,
अपने विधवापन का पहरावा उतार दिया।
इसके बाद घूँघट डाल कर, अपने आपको
ढाँप कर एनैम नगर के फ़ाटक के पास जो
तिम्ना के रास्ते पर है, जाकर बैठ गई। 15 उसे
मुँह ढाँपे बैठा देख, यहूदा ने उसे वेश्या
समझा। 16 और कहा कि, वह उसके साथ
यौन संबन्ध करना चाहता है। वह बोली,
“इसके बदले में तुम मुझे क्या दोगे?” 17 वह
अपनी बकरी का एक बच्चा भेजने को राजी
हो गया। लेकिन वह पूछ बैठी, “उसके
भेजने तक तुम मेरे पास धरोहर में कुछ
रखना चाहोगे?” 18 यहूदा ने पूछा, “क्या
धरोहर रखूँ?” वह बोली, “अपनी मुहर,
बाजूबन्द और छड़ी रख जाओ।” इसके बाद
ही उसने उसके साथ शारीरिक संबन्ध किया,
जिस की वजह से वह गर्भवती हो गयी।
19 तत्पश्चात् वहाँ से जाने के बाद उसने घूँघट
उतारा और विधवापन के कपड़े पहन लिए।
20 जब यहूदा ने अपने अदुल्लामवासी दोस्त के
हाथ बकरी का बच्चा भेजा ताकि गिरवीं रखी
चीजें वापस ले आए, तो वह महिला वहाँ न
थी। 21 वहाँ के लोगों से उसके बारे में पूछने
पर मालूम पड़ा कि वह कोई देवदासी नहीं
थी। 22 उसने यहूदा के पास लौट कर कहा,
“मुझे वह नहीं मिली और उस जगह के लोगों
से मिली सूचना के आधार पर वहाँ ऐसी
कोई महिला नहीं थी। 23 तब यहूदा बोला,
“अच्छा वह बंधक उसी के पास रहने दो,
नहीं तो हम लोग तुच्छ गिने जाएँगे, देखो मैंने
बकरी का यह बच्चा भेज दिया, पर वह तुम्हें
नहीं मिली।” 24 तीन महीनों के बाद यहूदा को

यह खबर मिली कि उसकी बहू ने व्यभिचार
किया है और गर्भवती हो गई है। तब यहूदा
बोल उठा, “उसको बाहर लाया जाए और
जला दिया जाए।” 25 उसे बाहर निकाले जाते
समय, उसने अपने ससुर के पास यह कहला
भेजा कि जिस आदमी की ये चीजें हैं, उसी
से मैं गर्भवती हुई हूँ। उसने यह भी कहलाया
कि वह पहचाने, कि मुहर, बाजूबन्द और
छड़ी किस की है। 26 यहूदा ने पहचान कर
कहा कि तामार उस से कम दोषी है क्योंकि
उसी ने अपने बेटे शेला का उससे ब्याह नहीं
कराया। इसके बाद फिर यहूदा ने उसके साथ
यौन संबन्ध नहीं किया। 27 जनने का समय
आने पर मालूम पड़ा कि गर्भ में जुड़वा बच्चे
हैं। 28 जनते समय जब एक बच्चे ने अपना
हाथ बढ़ाया तो दाई ने लाल धागा यह कहते
हुए बांध दिया कि, यह पहले पैदा हुआ है।
29 उसके हाथ समेट लेने पर उस का भाई
पैदा हुआ। तब दाई बोली, इसलिए कि वह
ज़बरदस्ती निकल आया है इसलिए उस का
नाम पेरेस रखा जाए। 30 बाद में जिस के हाथ
में लाल धागा बंधा हुआ था, उस भाई का
नाम ज़ेरह रखा गया।

39 पोतीपर नाम का एक मिस्री फ़िरौन
का गवर्नर और जल्लादों का प्रधान
था। उसने यूसुफ़ को वहाँ पहुँचने वाले
इश्माएलियों के हाथ से मोल ले लिया था।
2 यूसुफ़ अपने मिस्री मालिक के घर में रहा
करता था। इसलिए कि प्रभु यूसुफ के साथ
थे, वह आशीषित हो गया था 3 यूसुफ़ के
स्वामी ने यह जान लिया था कि प्रभु उसके
संग थे और वही उसके सभी कामों को
सफल कर दिया करते थे। 4 तब उसकी
मेहरबानी उस पर हुई और वह उसकी सेवा
करने के लिए ठहराया गया। पोतीपर ने
यूसुफ़ को अपने घर का अधिकारी बना कर
सब कुछ उसके हाथ सुपुर्द कर दिया। 5 जब
से पोतीपर ने यूसुफ़ को अपने घर और सारी
दौलत की ज़िम्मेदारी दे दी, तब से प्रभु यूसुफ़
की वजह से उस मिस्री के घर पर आशीष
देने लगे। घर, खेत या जो कुछ उस का
था सब पर प्रभु का आशीर्वाद आने लगा।
6 इसलिए उसने अपना सब कुछ यूसुफ़ के
हाथ में यहाँ तक छोड़ दिया, कि अपने
भोजन को छोड़कर अपनी ज़मीन जायदाद
का हाल कुछ न जानता था। यूसुफ़ बहुत
खूबसूरत था। 7 पोतीपर की पत्नी यूसुफ़ को
बुरी नज़र से देखने लगी और चाहा कि वह
उसके साथ सोए। 8 यूसुफ़ ने इन्कार करते
हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, “जो
कुछ इस घर में है, वह सब मेरे साथ में
है। उसने सब कुछ मेरे हवाले कर रखा
है। 9 इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं है।
उसने तुम्हें छोड़[a] मुझ से कुछ भी नहीं रख
छोड़ा है। इसलिए मैं ऐसी बुराई परमेश्वर के
खिलाफ़ करके प्रभु का अपराधी क्यों बनूँ?
10 पोतीपर की पत्नी हर दिन उसे फुसलाती
रही, लेकिन यूसुफ़ ने उसकी नहीं सुनी कि
उसके साथ लेटे और शारीरिक संबन्ध करे।
11 एक दिन यूसुफ़ अपना काम-काज करने
के लिए घर में गया। उस समय घर का कोई
नौकर अंदर नहीं था। 12 तब उस महिला ने
यूसुफ़ के कपड़े पकड़ कर कहा, मेरे साथ
लेटो। लेकिन वह अपना कपड़ा उसके हाथ
ही में छोड़कर बाहर भाग निकला 13 यह
देख, कि वह अपना कपड़ा उसके हाथों में
छोड़कर भाग गया है। 14 उस महिला ने अपने
घर के नौकरों को बुलाकर कहा, “देखो,
तुम्हारे मालिक ने इस इब्री आदमी को हमारी

[a] **39.9** जो कि उसकी पत्नी हो

बेइज्ज़ती करने के लिए यहाँ रखा है। मेरे
साथ यौन संबन्ध करने की नियत से वह
भीतर आया था, लेकिन मैं ज़ोर से चिल्ला
उठी। 15 मेरी चिल्लाहट सुनते ही वह अपना
कपड़ा छोड़ चंपत हो गया।" 16 मालिक के
वापस आने तक वह उस का वस्त्र अपने
पास रखे रही। 17,18 तब उसने उससे इन
शब्दों में बातें की, "वह इब्री दास, जिसे तुम
लेकर आए हो, मुझ से रोमांस करने मेरे पास
आया था। जैसे ही मैं ज़ोर से चिल्लायी, वह
अपना कपड़ा मेरे पास छोड़कर भाग खड़ा
हुआ।" 19 अपनी पत्नी की ये बातें सुन कर
कि यूसुफ़ ने उसके साथ ऐसा किया, उस
का गुस्सा भड़क उठा। 20 इसलिए जहाँ राजा
के कैदी बंदी थे, वहाँ पर उसे डाल दिया
गया। 21 प्रभु की संगति उसके साथ रही और
कृपा बनी रही। साथ ही दारोगा भी उसके
प्रति दयालु रहा। 22 जेलर ने वहाँ के कैदियों
की ज़िम्मेदारी यूसुफ़ के हाथ सौंप दी। उसी
का हुक्म वहाँ चलता था। 23 प्रमुख दारोगा
यूसुफ के कामों पर अपनी दृष्टि नहीं रखता
था, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। वह
जो कुछ भी करता था, उसमे कामयाब होता
था।

40 इसी बीच मिस्र देश के राजा के
साकी और रसोईये ने अपने स्वामी
मिस्र के राजा के खिलाफ़ कुछ अपराध
किया। 2 इसलिए फ़िरौन अपने उन दोनों,
अर्थात प्रधान साकी और प्रधान रसोईये पर
बहुत गुस्सा हुआ। 3 उसने उन्हें बंदी बना कर
उसी जेल में डलवा दिया जहाँ यूसुफ़ था।
4 तब अंगरक्षकों के प्रधान ने उन दोनों को
यूसुफ़ के सुपुर्द कर दिया। उसी ने उनकी
देख-भाल की जब तक वे जेल में रहे। 5 एक
रात मिस्र के राजा के साकी और रसोईया
ने अपने भविष्य के बारे में स्वप्न देखे।
6 अगली सुबह यूसुफ़ ने उन दोनों के चेहरे
उतरे हुए देखे। 7 तब उसने उनकी उदासी
का कारण पूछा। 8 वे बोले, "हम दोनों ने
स्वप्न देखा है और उस का मतलब बताने
वाला कोई है नहीं।" यूसुफ़ ने कहा, "क्या
स्वप्नों का अर्थ परमेश्वर नहीं बता सकते
हैं?" तुम अपने स्वप्न मुझे बताओ। 9,10 तब
प्रधान साकी ने अपना सपना यूसुफ़ को
बताया, "मैंने एक अंगूर की बेल देखी जिस
में तीन डालियाँ थी। उस में कलियाँ लगीं
और गुच्छों में अंगूर पक गए। 11 फ़िरौन
का कटोरा मेरे हाथ में था। मैंने अंगूरों को
कटोरे में निचोड़ कर वापस कटोरा फ़िरौन
के हाथ में दे दिया। 12 तब यूसुफ़ ने उससे
कहा, "तीन डालियों का मतलब तीन दिन
हैं। 13 तीन दिनों के अंदर फ़िरौन तुम्हारा
सिर ऊँचा करेगा और तुम्हारा पद फिर से
तुम्हें दे देगा। तुम पहले की तरह फिर से
फ़िरौन के साकी बन कर कटोरा उसके हाथ
में दिया करोगे। 14 इसलिए जब तुम वापस
अपना काम पा जाओ, मुझे याद करना और
कृपया मेरी यहाँ से निकासी के लिए फ़िरौन
से सिफ़ारिश करना 15 क्योंकि मुझे इब्रियों
के देश से ज़बरदस्ती मिस्र लाया गया है। मैंने
ऐसा कोई काम नहीं किया था कि इस जेल
में बंद किया जाऊँ" 16 साकी के स्वप्न के
अर्थ से संतुष्ट हो जाने की वजह से रसोई
के प्रधान ने भी यूसुफ़ को अपना स्वप्न
बतलाया, 17 "मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की
तीन टोकरियों में फ़िरौन के लिए हर तरह की
पकी-पकाई चीजें है और चिड़िया आकर उन
चीजों को खा रही हैं। 18 यूसुफ़ बोला, "तीन
टोकरियों का मतलब तीन दिन हैं। 19 अब
से तीन दिन के अंदर फ़िरौन तुम्हारा सिर
कटवा कर एक पेड़ पर टँगवा देगा और

पक्षी तुम्हारे मांस को नोच-नोच कर खाएँगे।
20 तीसरे दिन फ़िरौन का जन्म दिन था। उसने
अपने सभी कर्मचारियों को दावत में बुलाया।
उन में से प्रधान साकी और प्रधान रसोईए को
भी जेल से निकलवाया। 21 प्रधान साकी को
फिर से उसके पद पर रख दिया गया और वह
राजा को उस का कटोरा देने लगा। 22 लेकिन
प्रधान रसोईए को उसने टँगवा दिया, जैसा
कि यूसुफ़ ने उसके स्वप्न का फल उसे
बताया था 23 फिर भी प्रधान साकी ने यूसुफ़
को भूल गए।

41 दो साल बीत जाने के बाद फ़िरौन
ने सपने में देखा कि, वह नील नदी
के किनारे खड़ा है। 2 उस नदी में से सात
खूबसूरत और मोटी गायें निकल कर कछार
की घास पर चरने लगीं। 3 उनके पीछे सात
बदसूरत और दुबली गायें नदी से निकल कर
पहली गायों के पास जाकर नदी के किनारे
खड़ी हो गईं। 4 तब ये बदसूरत और दुबली
गायें उन सात सुंदर और मोटी गायों को खा
गईं, तभी फ़िरौन की नींद खुल गयी। 5 फ़िरौन
के सो जाने के बाद उसने दूसरे सपने में एक
डंठल में से सात मोटी और अच्छी बालें
निकलती देखीं 6 उनके पीछे सात पतली और
पुरवाई से मुरझाई बालें निकलीं। 7 इन पतली
बालों ने उन सात मोटी और दानों से भरी
बालों को निगल लिया। फ़िरौन के जागते ही
उसने जाना कि यह तो मात्र सपना ही था।
8 सुबह उस का मन परेशान हुआ और उसने
मिस्र के सभी ज्योतिषियों और पण्डितों को
बुलवाया। उसने उन्हें अपने स्वप्न बताए,
लेकिन उन में से कोई भी मतलब न बता
सका 9 तब पिलानेहारों के प्रधान ने फ़िरौन
से कहा, “आज मेरे अपराध मुझे याद आ
रहे हैं।” 10 जब फ़िरौन अपने नौकरों से
गुस्सा हुआ था और मुझ तथा पकानेहारों
के प्रधान को कैद करा के अंगरक्षकों के
प्रधान के घर-घर के जेलखाने में डाल दिया
था। 11 तभी हम ने एक ही रात में सपने
देखे थे। 12 हमारे साथ वहाँ एक इब्री जवान
था। वह अंगरक्षकों के प्रधान का सेवक
था, उसने हमारे सपनों के मतलब को हमें
बता दिया। 13 उसके कहने के मुताबिक हुआ
भी। यह कि मुझे मेरी जगह वापस मिल गयी
लेकिन उसे फाँसी दे दी गयी। 14 तब फ़िरौन
ने यूसुफ़ को बुलवाया। वह तुरन्त जेल से
बाहर निकला। दाढ़ी और बाल बना कर और
कपड़े बदलकर वह फ़िरौन के सामने आया।
15 फ़िरौन यूसुफ़ से बोला, “मैंने एक स्वप्न
देखा है, लेकिन कोई उस का मतलब नहीं
बता पा रहा है। तुम्हारे बारे में मैंने यह सुना
है कि तुम ऐसा कर सकते हो।” 16 यूसुफ़
बोला, “मैं तो कुछ नहीं जानता, प्रभु ही
फ़िरौन के लिए अच्छे शब्द देंगे।” 17 फिर
फ़िरौन ने यूसुफ़ को बताया, “मैंने स्वप्न में
यह देखा कि मैं नील नदी के तट पर खड़ा
हूँ। 18 सात मोटी और सुंदर गायें नदी में से
निकलीं और कछार की घास खाने लगीं।
19 बाद में सात ऐसी बदसूरत और कमज़ोर
गायें निकली, जिन्हें इसके पहले मैंने मिस्र
देश में कभी नहीं देखा था। 20 इन कमज़ोर
और बदसूरत गायों ने पहले निकली सात
मोटी और खूबसूरत गायों को खा लिया।
21 उनके निगले जाने के बाद भी यह मालूम
नहीं पड़ता था, कि वे उनको निगल चुकी
हैं, क्योंकि वे पहले की तरह बदसूरत ही
रहीं। तभी मेरी नींद खुल गयी। 22 मैंने सपने
में यह भी देखा कि एक डंठल में से सात
अच्छी और दानों से भरी बालें निकलीं।
23 उनके बाद पुरवायी से मुरझाई हुई सूखी
पतली सात बालें और निकलीं। 24 इन पतली

बालों ने उन सात अच्छी बालों को निगल
लिया। ज्योतिषी लोग इस स्वप्न का मतलब
बताने में असफ़ल रहे।" 25 तब यूसुफ़ फ़िरौन
से बोला, "फ़िरौन का स्वप्न एक ही है।
प्रभु ने फ़िरौन को वह सब बतलाया, जो
वह करने वाले हैं। 26 सात सुंदर गायें, सात
साल को दिखाती हैं। सात बालें भी सात
साल ही हैं। दोनों स्वप्न एक ही हैं। 27 सात
दुबली-पतली और बदसूरत गायें जो बाद में
निकली थीं, सात साल की तरफ़ इशारा हैं।
जो सात पतली और पुरवाई से मुरझाई हुई
बालें निकली थीं वे आकाल के सात वर्ष
होंगे। 28 यह वही बात है जो मैं फ़िरौन को
बता चुका हूँ कि जो प्रभु करने वाला है, उसे
फ़िरौन को बताया गया है। 29 पूरे मिस्र देश
में सात साल भरपूरी के होंगे। 30 उन दिनों के
बाद मिस्र में ऐसा आकाल पड़ेगा कि लोग
भरपूरी को भूल जाएँगे और देश बर्बाद हो
जाएगा। 31 इसलिए देश में भरपूर सालों को
भुला दिया जाएगा, क्योंकि आकाल बहुत
भयंकर होगा। 32 इस स्वप्न के दोहराए जाने
का मतलब यह है कि ऐसा ज़रूर होकर
रहेगा और प्रभु इसे जल्दी पूरा करेंगे। 33 अब
ज़रूरी है कि फ़िरौन किसी अक्लमंद व्यक्ति
को ढूँढ कर मिस्र देश का अधिकारी बना
दें। 34 फ़िरौन को चाहिए कि सारे देश में
अधिकारियों को नियुक्त करने का काम शुरू
करें। ये लोग मिस्र देश की उपज का पाँचवां
हिस्सा लिया करें। 35 ये लोग आने वाली
समृद्धि के दिनों में सब तरह की खाने की
चीजें इकट्ठा करें और उन नगरों में जो फ़िरौन
के अधिकार में हैं, खाने के लिए अनाज
के गोदाम बना कर उनकी रक्षा करें। 36 ये
खाने की चीजें आकाल के उन सात सालों
के लिए बचा कर रखी जाएँ, जो मिस्र देश
में आने वाले हैं, जिस से कि आकाल के
दिनों में देश बर्बाद न हो जाए। 37 यह बात
फ़िरौन और उसके सभी काम करने वालों
को पसंद आयी। 38 तब फ़िरौन ने अपने
कर्मचारियों से कहा, "क्या इसकी तरह हम
किसी और आदमी को पा सकते हैं, जिस
में प्रभु का आत्मा रहता हो?" 39 इसलिए
फ़िरौन ने यूसुफ़ से कहा, "इसलिए कि प्रभु
ने तुम्हें सब कुछ बता दिया है, तुम्हारी तरह
ऐसा अक्लमंद और समझदार कोई नहीं है।
40 तुम मेरे घर के अधिकारी होगे और तुम्हारी
आज्ञा के अनुसार मेरी प्रजा को करना होगा।
जहाँ तक राजासन का सवाल है उस पर मैं
ही बैठा रहूँगा। 41 फ़िरौन यूसुफ़ से बोला,
"देखो, मैंने तुम्हें मिस्र के सारे देश के ऊपर
अधिकारी ठहराया है। 42 तब फ़िरौन ने अपने
हाथ की अंगूठी यूसुफ़ को पहना दी, महीन
मलमल के कपड़े पहना दिए और गले में
सोने की माला डाल दी 43 तब फ़िरौन ने उसे
अपने रथ पर चढ़वा कर उसके आगे यह
ऐलान करवाया, अपने घुटने टेको। इस तरह
से उसने यूसुफ़ को सारे देश पर अधिकारी
ठहराया। 44 फ़िरौन ने कहा, "हालांकि मैं
फ़िरौन हूँ, फिर भी सारे मिस्र देश में कोई
भी तुम्हारी आज्ञा के बिना हाथ पाँव न
हिलाएगा। 45 तब फ़िरौन ने यूसुफ़ का नाम
सापन -तपानेह रखा और उसने ओन नगर के
याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत से उसकी
शादी करा दी। और यूसुफ़ मिस्र देश का दौरा
करने लगा 46 उस समय यूसुफ़ तीस साल
का था और उसने मिस्र का दौरा करना जारी
रखा। 47 बहुतायत के सात सालों में थोड़े
लोगों द्वारा ज़मीन भरपूर उपज देती रही।
48 उन सात सालों में मिस्र में पैदा होने वाली
भोजन वस्तुओं को उसने इकट्ठा करना जारी
रखा। हर नगर के चारों तरफ़ के खेतों की
उपज को उसने वहीं इकट्ठा किया। 49 यूसुफ़

ने समुन्दर की रेत की तरह अनाज का बड़ा भण्डार इकट्ठा कर लिया। यह भण्डार इतना बड़ा हो गया कि उस का हिसाब रखना मुश्किल हो गया और उसने लेखा रखना भी छोड़ दिया। 50 आकाल के पहले साल की शुरुआत से पूर्व यूसुफ़ के दो बेटे ओन के याजक पोतीपेरा की बेटी से जन्में। 51 यूसुफ़ ने अपने पहलौठे का नाम मनश्शे रखा। उसने कहा, "प्रभु ने मुझ से सारा दुख और मेरे पिता का सारा परिवार[a] भुला दिया है। 52 दूसरे का नाम उसने यह कह कर एप्रैम रखा, कि, प्रभु ने मुझे दुख भोगने के देश में समृद्धि दी है। 53 और मिस्र देश के सुकाल के वे सात साल खत्म हो गए। 54 यूसुफ़ के कहने के मुताबिक सात सालों के लिए आकाल शुरू हो गया। मिस्र को छोड़कर किसी देश में अनाज नहीं था। 55 मिस्र में भुखमरी की हालत में लोग राजा से खाना माँगने लगे। राजा उन्हें यूसुफ़ के पास यह कह कर भेज दिया करता था, कि उसके कहने के अनुसार करो। 56 सारी दुनिया में आकाल और ज़्यादा भयंकर हो गया। इसलिए उस समय से यूसुफ़ सब भण्डारों को खोल-खोल मिस्रियों को अनाज बेचने लगा। 57 इसलिए कि सारी दुनिया में ज़बरदस्त आकाल पड़ा हुआ था, लोग अनाज मोल लेने के लिए यूसुफ़ के पास मिस्र आने लगे।

42 यह सुनने के बाद कि मिस्र में अनाज है, याकूब ने अपने बेटों से कहा, "तुम एक दूसरे का मुँह क्या ताक रहे हो?" 2 उसने कहा, "देखो, मैं सुन रहा हूँ कि मिस्र में अनाज है। तुम वहाँ जाकर अनाज खरीदो और यहाँ ले आओ, ताकि हम मरे नहीं लेकिन ज़िन्दा रहें।" 3 तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज लेने के लिए मिस्र को रवाना हो गए। 4 लेकिन याकूब ने यूसुफ़ के भाई बिन्यामीन को उसके भाईयों के साथ इस डर से नहीं भेजा, कि कहीं उस पर कोई मुसीबत न आ पड़े। 5 इसलिए जो लोग अनाज लेने आए उनके साथ इस्राएल के बेटे भी आए, क्योंकि कनान देश में भी भारी आकाल था। 6 यूसुफ़ मिस्र देश का अधिकारी था। उसी से लोग अनाज खरीदते थे। तभी एक दिन यूसुफ़ के भाई आए और उन्होंने गिर कर उसको सिज़दा किया 7 उन्हें देखते ही यूसुफ़ ने उन्हें पहचान लिया, लेकिन बड़े भोलेपन से कठोरता के साथ पूछा, "तुम कहाँ से आ रहे हो?" उन्होंने कहा, "हम तो कनान देश से अनाज खरीदने आए हैं। 8 यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया, लेकिन वे उसे पहचान न सके 9 तब यूसुफ़ अपने उन स्वप्नों को याद करके जो उसने उनके बारे में देखा था, उन से कहने लगा, "तुम जासूस हो और इस देश की बर्बादी देखने के लिए आए हो।" 10 उन्होंने उससे कहा, "नहीं, नहीं, हे मालिक तुम्हारे दास खाने की चीजें खरीदने आए हैं 11 हम सभी एक पिता की सन्तान हैं। हम जासूस नहीं, अच्छे लोग हैं।" 12 यूसुफ़ बोला, "बिल्कुल नहीं, तुम यहाँ के नाज़ुक हालात देखने आए हो।" 13 वे बोले, "हम बारह भाई कनान वासी एक पिता के बेटे हैं। एक भाई मर चुका है और छोटा वाला घर पर पिताजी के साथ है। 14 तब यूसुफ़ ने उन से कहा, "मैं तुम से कह चुका हूँ कि तुम सब भेद लेने आए हो। 15 तुम्हें परखा जाना ज़रूरी है। राजा के जीवन की शपथ, जब तक तुम्हारा छोटा भाई भी यहाँ नहीं आ जाता, तुम इस जगह से हिल नहीं सकते। 16 तुम अपने में से एक को भेजो, ताकि वह

[a] **41.51** घराना

जाकर तुम्हारे भाई को ले आए और तुम कैद
में रहोगे. जिस से तुम्हारी बातों की सच्चाई
जानी जाए।" 17 इसलिए यूसुफ़ ने उन्हें तीन
दिन तक जेल में रखा। 18 तब तीसरे दिन
यूसुफ़ ने उन से कहा, "एक काम करो, तभी
ज़िन्दा रहोगे, क्योंकि मैं परमेश्वर से डरता
हूँ। 19 अगर तुम सच्चे हो, तो तुम में से एक
भाई जेल में रहे। बाकी तुम सब अपनी भूख
मिटाने के लिए अनाज घर ले जाओ। 20 अपने
सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, जिस
से तुम्हारी बातें सच्ची साबित हो सकें और
तुम्हारी जान बच जाए।" 21 उन्होंने आपस में
कहा, "बेशक हम अपने भाई के बारे में दोषी
हैं, क्योंकि जब उसने हम से गिड़गिड़ाकर
बिनती की, तब भी हम ने यह देख कर
कि वह कितनी दयनीय हालत में है, उसकी
न सुनी। इसलिए हम भी अब इस मुसीबत
में फँस गए हैं। 22 रूबेन बोल उठा, "क्या
मैंने तुम से कहा नहीं था कि इस लड़के के
गुनाहगार मत बनो, लेकिन तुमने मेरी न सुनी।
अब उसके खून का बदला लिया जाएगा।"
23 यूसुफ़ और उनकी बातचीत एक दुभाषिये
के माध्यम से हुआ करती थी। इसलिए वे यह
न जान सके कि वह उनकी बोली[a] समझता
है। 24 तब वह उनके पास से हटकर रोने
लगा। फिर उनके पास लौटकर और उन से
बातचीत करके उन में से शिमोन को चुन
लिया और बंदी बना लिया। 25 तब यूसुफ़ ने
आज्ञा दी कि उनके बोरों में अनाज भरा जाए
और एक-एक जन के बोरे में रूपए रखकर,
रास्ते के लिए खाने की चीजें दी जाएँ। 26 तब
वे अपना अनाज अपने गदहों पर लाद कर
वहाँ से चल दिए। 27 जब धर्मशाला में एक
ने अपने गदहे को चारा देने के लिए बोरा
खोला, तो उस का रूपया, बोरे के मुँह पर ही
रखा दिखायी पड़ा 28 तब वह अपने भाईयों
से बोला, "मेरा रूपया तो मुझे मेरे बोरे के मुँह
पर ही रखा मिला है।" तब वे घबरा गए और
डर से एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे और
बोले, "परमेश्वर ने यह हम से क्या किया
है?" 29 कनान देश में अपने पिता याकूब
के पास पहुँचने पर उन्होंने सब कुछ कह
सुनाया, 30 "जो आदमी उस देश का मालिक
है, उसने हम से सख्ती के साथ बातें की
और हमें जासूस भी कह डाला। 31 तब हम
ने उससे कहा, "हम सीधे-सादे लोग हैं, हम
जासूस नहीं हैं। 32 हम बारह भाई एक पिता
के बेटे हैं, एक तो रहा नहीं, लेकिन छोटा
वाला कनान देश में हमारे पिताजी के साथ
ही है, 33 तब उसने कहा, "अभी परख हो
जाएगी कि तुम सीधे लोग हो या नहीं। तुम
अपने में से एक को मेरे पास छोड़कर अपने
घर वालों की भूख मिटाने के लिए कुछ ले
आओ। 34 और अपने छोटे भाई को मेरे पास
ले आओ, ताकि मुझे यकीन हो जाएगा कि
तुम जासूस नहीं, अच्छे लोग हो। फिर मैं
तुम्हारे भाई को तुम्हारे सुपुर्द कर दूँगा और
तुम इस देश में व्यापार कर सकोगे।" 35 यह
कह कर वे अपने-अपने बोरे में से अनाज
निकालने लगे। उन्होंने यह पाया कि हर एक
के रूपए की थैली उसी के बोरे में है। तब
रूपए की थैलियों को देख कर वे और उनका
पिता डर गए। 36 तब उनके पिता याकूब ने
कहा, "तुमने मुझे नि:संतान कर डाला है।
यूसुफ़ पहले ही नहीं रहा, शिमोन आया नहीं
और अब तुम बिन्यामीन को भी ले जाना
चाहते हो। ये सब मुसीबतें मुझ पर आ पड़ी
हैं। 37 रूबेन अपने पिता से बोला, "मैं उसको
तुम्हारे पास न लाऊँ तो मेरे दोनों बेटों को
जान से मार डालना। तुम उसे मेरे सुपुर्द कर

[a] 42.23 भाषा

दो, मैं उसे वापस पहुँचा दूँगा। 38 वह बोला,
“मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा, क्योंकि
उस का भाई मर गया और वह अब अकेला
रह गया है। इसलिए जिस रास्ते से होकर तुम
जाओगे, उसमें यदि उस पर कोई मुसीबत आ
पड़े, तब तुम्हारी वजह से मैं इस बुढ़ापे की
हालत में शोक के साथ अधोलोक में उतर
जाऊँगा।

43 देश में सूखे की हालत बद से बदतर
हो गई। 2 मिस्र से लाए गए अनाज
के खत्म हो जाने पर उनके पिता[a] ने उन
से[b] कहा, “‘फिर से मिस्र जाकर हमारे लिए
थोड़ा और खाने पीने का सामान ले आओ।”
3 तब यहूदा बोला, “उस आदमी ने हम को
चेतावनी देकर कहा था, “यदि तुम्हारा[c] भाई
तुम्हारे साथ नहीं आएगा तो तुम मेरे सामने
फिर मत आना। 4 इसलिए यदि आप हमारे
भाई को हमारे साथ भेजते हैं, तब तो हम
जाकर खाने की चीजें खरीद कर ला सकेंगे।
5 लेकिन अगर आप उसे हमारे साथ न भेजें,
तो हम नहीं जाएँगे, क्योंकि वह आदमी हम
से कह चुका है, कि बिना अपने भाई को साथ
लाए यहाँ मत आना।” 6 तब इस्राएल ने कहा,
“तुमने उस पुरुष को यह बता कर कि तुम्हारे
एक और भाई है, मुझ से ऐसा बुरा बर्ताव क्यों
किया?” 7 लेकिन वे बोले, उस व्यक्ति ने
खासकर हमारे और हमारे रिश्तेदारों के बारे
में यह पूछा, “क्या तुम्हारे पिताजी अब तक
ज़िन्दा हैं? क्या तुम्हारा और कोई भाई भी है?
तब हम ने उसके सवालों का जवाब दिया।
हमें उस समय यह नहीं मालूम था, कि वह
हमें अपने भाई को लाने के लिए कहेगा।”
8 फिर यहूदा इस्राएल से बोला, “हमारे भाई
को हमारे साथ भेज दीजिए, ताकि हम सब
वापस जाएँ और हम, आप और हमारे बच्चे
जीवित रहें और न मरें। 9 उसकी देख-रेख
की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ। यदि वापस उसे
आपके पास न लाऊँ, तो आपके प्रति मैं
अपराधी ठहरूँगा। 10 यदि हम लोग देरी न
करते तो अब तक दूसरी बार लौट आते”।
11 तब उनके पिता इस्राएल ने उन से कहा,
“यदि ऐसा ही करना है तो यह करो कि उस
आदमी के लिए अपने अपने बोरों में इस देश
की कुछ बढ़िया चीजों में से अर्थात थोड़ा
बलसान, थोड़ा शहद, खुशबूदार चीजें और
गंधरस, पिस्ते और बादाम ईनाम के रूप
में ले जाओ। 12 अपने साथ दोगुना रूपया
ले जाओ और जो रूपया तुम्हारा बोरों के
मुँह पर रख कर वापस कर दिया गया था,
उसको भी ले जाना, क्योंकि हो सकता है
ऐसा भूल से हो गया था। 13 अपने भाई को
लेकर जाओ। 14 शक्तिशाली परमेश्वर उस
पुरुष की निगाह में तुम्हारे लिए दया पैदा
करें, जिस से कि वह तुम्हारे दूसरे भाई और
बिन्यामीन को छोड़ दे और यदि मैं बिना वंश
के भी रह गया, तो चलेगा।” 15 तब उन लोगों
ने वह ईनाम और दोगुना रूपया अपने हाथ
में लिया और बिन्यामीन को लेकर मिस्र के
लिए रवाना हो गए। वहाँ वे यूसुफ़ के सामने
खड़े हुए। 16 बिन्यामीन को उनके साथ खड़े
देखते ही यूसुफ़ ने अपने घर के प्रबंधक
से कहा, “इन सभी को घर पहुँचाओ और
बढ़िया खाना तैयार करवाओ। दोपहर का
खाना हम सभी मिल कर करेंगे।” 17 यूसुफ़
के कहने के अनुसार उस पुरुष ने किया
भी। 18 यूसुफ़ के घर पहुँचने पर उनके मन
में यह डर समा गया कि पहली बार हमारे
बोरों में जो रूपए वापस कर दिए गए थे,
शायद उन्हीं के कारण हमें यहाँ लाया गया

[a] **43.2** याकूब [b] **43.2** अपने बेटों से [c] **43.3** छोटा

है। वह हमें अपने वश में करके गुलाम बनाने
के साथ हमारे मवेशी भी छीन सकता है।
19 तब प्रबंधक के पास जाकर उन्होंने कहा,
20 "पहली बार अनाज लेने के लिए जब हम
यहाँ आए थे, तब लौटते वक्त सराय में बोरों
को खोलने पर हम ने प्रत्येक के रूपए बोरों
के मुँह पर ही रखे पाए, इसलिए हम उन्हें
वापस ले आए हैं। 21 पता नहीं किस ने उन
रूपयों को हमारे बोरों में रख दिया था। 22 हम
और अनाज की खरीददारी करने के लिए
रूपया लाए हैं। 23 वह बोला, तुम्हारा कुशल
हो, डरो मत। तुम्हारे और तुम्हारे पिता के
परमेश्वर ने ऐसा किया होगा। तुम्हारा दिया
गया रूपया तो हम ने रख लिया था। फिर
उसने शिमोन को निकाल कर उनके संग कर
दिया। 24 तब उस व्यक्ति ने उन सभी को
पाँव धोने के लिए पानी दिया और गदहों
के लिए चारा। 25 यह जानने पर कि उन्हें
दोपहर का खाना वहीं खाना होगा, यूसुफ़ के
आने तक उस भेंट को तैयार किया। 26 यूसुफ़
के आते ही, उन्होंने यह भेंट उसे दी और
भूमि तक झुककर प्रणाम किया। 27 उसने
उनका हाल-चाल पूछा और कहा, "क्या
तुम्हारे बूढ़े पिताजी अच्छे हैं? 28 वे बोले,
"हाँ आपके दास, हमारे पिताजी ठीक-ठाक
हैं।" यह कह कर उन्होंने यूसुफ़ को दण्डवत्
किया। 29 तब उसने बिन्यामीन, जो उसकी
माँ का बेटा था उसकी तरफ़ इशारा करके
पूछा, "क्या यही तुम्हारा वह भाई है, जिस
के बारे में तुमने मुझे बताया था?" 30 अपने
भाई के प्रति ऐसा उस का प्यार उमड़ा कि
वह रोने वाला ही था। इसलिए अपने कमरे
में जाकर वह रोने लगा। 31 फिर अपना चेहरा
धो कर अपने को शांत किए हुए आया और
खाना परोसे जाने के लिए कहा। 32 तब उसके
लिए अलग और इब्रियों के लिए अलग और
उसके साथ खाना खाने वाले मिस्रियों के लिए
अलग खाना परोसा गया। मिस्री, इब्रियों के
साथ खाना पसंद नहीं करते थे। 33 इसलिए
यूसुफ़ के भाई, उसके सामने अपनी उम्र के
आधार पर, पहले बड़े, फिर छोटे बैठाए
गए। यह सब वे लोग हैरानी से देख रहे थे।
34 तब यूसुफ़ अपने सामने के खाने की चीजों
को उनकी तरफ़ भेजने लगा। बिन्यामीन को
अपने भाईयों की तुलना में पाँच गुना ज़्यादा
मिला। सभी ने जी भर कर भोजन किया।

44 तब यूसुफ़ ने अपने घर के
अधिकारी को आदेश दिया कि इन
लोगों के बोरों में जितनी खाने की चीजें समा
सकें, उतनी भर दी जाएँ। इसके बाद प्रत्येक
के रूपए को उसके बोरे के ऊपरी भाग में
रखा जाए। 2 मेरे चाँदी के कटोरे को छोटे
भाई के बोरे में मुँह पर उसके अनाज के
रूपए के साथ रखा जाए। प्रबंधक ने आज्ञा
के अनुसार ही किया। 3 सुबह होते ही वे
लोग अपने गदहों समेत वापस चले गए।
4 वे ज़्यादा दूर गए ही नहीं थे, कि यूसुफ़ ने
उनका पीछा करने के लिए कहा कि, उन
से पूछा जाए कि भलाई के बदले उन्होंने
बुराई क्यों की। 5 क्या यह वह कटोरा नहीं
जिस में हमारा मालिक पीता है और जिस
से वह अच्छे-बुरे की पहचान कर लेता
है? तुमने यह जो किया है, वह बुरा है।
6 तब उसने उन्हें पकड़ लिया और ऐसी ही
बातें उन से कहीं। 7 उन्होंने उससे कहा, "हे
मालिक, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? ऐसा
हम कैसा कर सकते हैं? 8 देखो, जो रूपया
हमारे बोरों के मुँह पर निकला था, जब हम
ने उसको कनान देश से ले आकर आपको
वापस कर दिया, तब भला तुम्हारे मालिक
के घर से चाँदी या सोना क्यों चुरा सकते

है? 9 आपके दासों में से जिस किसी के पास
वह निकले, वह मार डाला जाए और हम
सभी आपके गुलाम बन जाएँगे।" 10 इसलिए
वह बोला, "जैसा तुम कह रहे हो, वैसा ही
किया जाएगा। जिस के पास वह निकले
वह मेरा गुलाम बनेगा और बाकी लोग
बेगुनाह ठहरोगे।" 11 फुर्ती से उन्होंने अपने
बोरे उतार कर खोलना शुरू किया। 12 तब
उसने बड़े से शुरूवात कर सब से छोटे
के बोरे की छानबीन की और वह कटोरा
बिन्यामीन के बोरे में मिला। 13 तब वे बड़े
शर्मिन्दा हुए और अपने-अपने गदहे को
लाद कर वापस रवाना हो गए। 14 जब
यहूदा और उसके भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे
तो वह घर में ही था, और वे उसके सामने
ज़मीन पर गिरे। 15 यूसुफ़ बोला, "तुमने यह
कैसा काम किया है? क्या तुम्हें नहीं मालूम
कि मुझ जैसा इन्सान शकुन विचार सकता
है? 16 यहूदा बोला, "मालिक, हम आप
से क्या कहें? हम अपने आपको बेगुनाह
साबित नहीं कर सकते। आपके दासों की
बुराई प्रभु ने सामने ला रखी है। हम और
जिस के पास यह कटोरा निकला है, वह
आपके दास ही हैं।" 17 उसने कहा, "नहीं
ऐसा मैं बिल्कुल नहीं करूँगा, जिस के पास
कटोरा पाया गया है, वही मेरा दास बनेगा।
तुम लोग आराम से अपने पिताजी के पास
चले जाओ।" 18 तब यहूदा उसके पास
जाकर कहने लगा, "महाशय अपने दास
को एक बात कहने की इज़ाज़त दें। आप
तो राजा के बराबर हैं और मुझ पर गुस्सा
मत कीजियेगा। 19 आपने पूछा कि हमारे
भाई और पिता हैं कि नहीं। 20 हम ने बताया
था कि हमारे बुजुर्ग पिताजी हैं और बुढ़ापे
का एक बेटा है, लेकिन उस का भाई मर
चुका है। इसलिए वह अब अपनी माता का
अकेला रह गया है और पिताजी उसे बहुत
चाहते हैं। 21 तब आपने हम से उस भाई
को लाने के लिए कहा था ताकि आप उसे
देख सकें। 22 हम ने आप से कहा था, कि
वह लड़का अपने पिताजी को छोड़ नहीं
सकता, नहीं तो उसके पिताजी मर जाएँगे
23 और आपने यह कहा था कि अगर हम
अपने भाई के साथ नहीं आएँगे तो आपके
सामने खड़े भी न हो सकेंगे। 24 इसलिए
वापस घर लौटने पर हम ने पिताजी को
सब कुछ बतलाया। 25 तब हमारे पिताजी
ने कहा, "फिर से जाकर हमारे लिए खाने
का सामान ले आओ।" 26 हम ने जवाब
दिया जब तक हमारा छोटा भाई हमारे संग
न चले, हम जा नहीं सकते, क्योंकि बिना
उसके हम अपना मुँह नहीं दिखा सकते।
27 आपके दास हमारे पिताजी ने हम से
कहा, "तुम तो जानते हो कि मेरी पत्नी से
दो बेटे हुए थे। 28 उन में से एक तो मुझे
छोड़ ही गया और उस का मुँह मैं फिर कभी
देख नहीं पाया। मैंने मान लिया कि उसे
फाड़ डाला गया होगा। 29 इसलिए यदि तुम
इसको भी मेरी नज़र से दूर ले जाओ और
इस पर कोई मुसीबत आ पड़े, तो तुम्हारी
वजह से मैं इस बुढ़ापे में दुख के साथ
अधोलोक में उतर जाऊँगा। 30 इसलिए जब
मैं आपने पिता, आपके दास के पास जाऊँ
और यह लड़का साथ में न हो तब? क्योंकि
उसकी जान तो इस लड़के में अटकी रहती
है। 31 इस कारण यह देख कर कि लड़का
नहीं है, वह अपना दम तोड़ देंगें। तब
आपके दासों के कारण आपके दास हमारे
पिताजी, इस बुढ़ापे में चल बसेंगे। 32 फिर
आपका दास अपने पिता के यहाँ यह कह
कर इस लड़के के लिए यह ज़मानत दे
चुका है, "यदि मैं उसे वापस न लाऊँ, तो मैं

हमेशा के लिए आपका अपराधी ठहरूँगा।”
33 इसलिए अपने दास को इस लड़के के
बदले आपका दास होकर रहने की आज्ञा दें
और इस लड़के को उसके भाईयों के साथ
जाने दिया जाए। 34 क्योंकि लड़के के संग
बिना रहे मैं कैसे अपने पिताजी के पास जा
सकूँगा। ऐसा न हो कि मेरे पिताजी पर जो
दुख पड़ेगा वह मुझे देखना पड़े।

45 यूसुफ़ अपने आपको रोक न पाया
और ऊँची आवाज़ से बोला, “सभी
लोगों को मेरे पास से बाहर कर दो।” इसलिए
जिस समय उसने अपने भाईयों के सामने
अपने आपको प्रगट किया, उस समय दूसरा
कोई वहाँ नहीं था। 2 वह इतनी जोर-ज़ोर से
रोया, कि मिस्री और राजा के परिवार के
लोगों ने भी इसके बारे में सुना। 3 तब यूसुफ़ ने
अपने भाईयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ, क्या मेरे
पिताजी अभी तक ज़िन्दा है?” उसके भाई
जवाब इसलिए नहीं दे पाए, क्योंकि वे पहले
से घबरा हुए थे। 4 तब यूसुफ़ अपने भाईयों
से बोला, “मेरे पास आओ” उसके पास आ
जाने पर वह बोला, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ,
जिस को तुमने मिस्र आने वालों के हाथ बेच
दिया था। 5 पर अब घबराने की ज़रूरत नहीं
है, न ही अपने आप को कोसने की, कि तुमने
मुझे यहाँ के लोगों के हाथ बेच दिया था।
तुम्हारी जान बचाने के लिए प्रभु ने मुझे पहले
से यहाँ भेज दिया था। 6 दो साल से इस देश
में आकाल है और पाँच साल तक ऐसा ही
रहेगा। इस बीच न हल चलेगा और न फसल
काटी जाएगी। 7 प्रभु ने मुझे तुम से पहले भेजा
था, ताकि इस दुनिया में तुम्हारे वंश की रक्षा
की जाए। 8 इसलिए मुझ को यहाँ भेजने वाले
तुम नहीं, लेकिन प्रभु हैं। प्रभु ही ने मुझे राजा
के लिए पिता के समान और उसके घर का
मालिक तथा सारे मिस्र देश का शासक ठहरा
दिया है। 9 जल्दी से पिताजी के पास जाकर
उन्हें बताओ कि प्रभु ने उनके बेटे यूसुफ़
को सारे मिस्र देश पर अधिकारी ठहरा दिया
है। 10 अब से वह अपने बेटों, नाती-पोतों,
भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और अपनी सभी
चीजों समेत गोशेन देश में मेरे पास ही रहेंगे।
11 इसलिए कि अभी आकाल के पाँच साल
बाकी हैं, ऐसा न हो कि कहीं उन्हें और
उनके परिवार के लोगों को भूखा मरना पड़े।
12 तुम और मेरा भाई बिन्यामीन यह देख ही
रहा है कि मैं यूसुफ़ ही यह कह रहा हूँ।
13 मिस्र में मेरी इस शान के बारे में तुम मेरे
पिताजी को बतलाना और जल्दी उन्हें यहाँ
ले आना।” 14 तब बिन्यामीन और यूसुफ़ एक
दूसरे के गले से लिपटकर रोए। 15 इसके
बाद वह अपने दूसरे भाईयों को चूम कर
उन से मिला और रोया। इसी के बाद उसके
भाईयों ने उससे बातचीत करनी शुरू की।
16 यूसुफ़ के भाई के आने की खबर राजा
तक पहुँच गई। राजा और उसके कर्मचारी
यह जान कर बहुत खुश हो गए। 17 राजा ने
यूसुफ़ से कहा कि, वह अपने भाईयों से कहे
कि पशुओं को लाद कर कनान देश में चले
जाएँ। 18 यह भी कि अपने पिताजी और घर
के लोगों को उसके पास लाए। उसने वायदा
किया कि मिस्र में देश की अच्छी से अच्छी
चीजें उन्हें खाने के लिए मिलेंगी। 19 उन्हें
बाल-बच्चों और स्त्रियों के लिए गाड़ियाँ ले
जाने को भी कहा गया। 20 उनकी[a] वस्तुओं
से मोह करने को भी उन्हें मना किया गया,
क्योंकि सारे देश का अच्छा से अच्छा उनके
लिए मुहैया कराया जाएगा। 21 इस्राएल के
बेटों ने वैसा ही किया और यूसुफ़ ने राजा

[a] **45.20** पुरानी

की बात मान कर उन्हें गाड़ियाँ दीं और रास्ते
के लिए खर्चा पानी भी। 22 यूसुफ़ ने हर एक
को एक जोड़ा कपड़ा दिया पर बिन्यामीन
को तीन सौ चाँदी के टुकड़े और पाँच जोड़े
कपड़े दिए। 23 अपने पिताजी के लिए उसने
मिस्र की बढ़िया वस्तुओं से लादे हुए दस
गदहे, अनाज और रोटी और उसके पिताजी
के रास्ते के लिए खाने की चीजों से लदी
हुई दस गदहियाँ दी। 24 इस तरह उसने अपने
भाईयों को विदा किया और वे रवाना हुए।
उसने उन्हें रास्ते में झगड़ा नहीं करने को
कहा। 25 आखिरकार वे अपने पिता याकूब
के पास पहुँच गए। 26 भाईयों ने पिताजी को
बताया कि यूसुफ़ अभी तक ज़िन्दा है और
मिस्र देश पर राज्य कर रहा है। लेकिन याकूब
को उनकी बातों पर विश्वास न हुआ। 27 तब
उन्होंने अपने पिता याकूब को वे सभी बातें
बतायीं जो यूसुफ़ ने कहीं थी। यूसुफ़ द्वारा
भेजी गाड़ियों को देख कर जिन्हें याकूब को
लाने के लिए भेजा गया था, उसे विश्वास
हो गया। 28 इस्राएल ने कहा, “बस, मेरा
बेटा यूसुफ़ जीवित है, मैं मरने से पहले उसे
देखूँगा।

46 तब इस्राएल अपना सब कुछ
लेकर, बेर्शेबा को गया। वहाँ
पहुँचकर उसने अपने पिता इसहाक के प्रभु
को कुर्बानी चढ़ायी। 2 एक रात दर्शन में
प्रभु ने इस्राएल से कहा,“याकूब, याकूब मैं
तुम्हारे पिता का प्रभु हूँ। 3 तुम मिस्र जाने
से मत डरो, क्योंकि मैं वहाँ तुम्हारे द्वारा
एक बड़े राष्ट्र का निर्माण करूँगा। 4 तुम्हारे
साथ मैं मिस्र को चलूँगा। फिर वहाँ से तुम्हें
वापस ले आऊँगा। 5 तब याकूब, उसके
बेटे अपने बाल-बच्चों और स्त्रियों को उन
गाड़ियों पर जो राजा ने उनके ले आने के
लिए भेजी थीं, चढ़ाकर बेर्शेबा से रवाना हुए।
6 और वे अपनी भेड़-बकरी, गाय-बैल, और
कनान में इकट्ठा की गई सारी दौलत लेकर
मिस्र में आए। 7 याकूब अपने बेटे-बेटियों
और पोते-पोतियों को अपने संग अर्थात् सारे
कुटुम्ब सहित मिस्र में ले आया। 8 उसके
साथ जो लोग आए थे उन में उनका बड़ा
बेटा रूबेन था। 9 रूबेन के बेटे, हनोक, पल्लू,
हेस्त्रोन और कर्मी थे। 10 शिमोन के बेटे,
शमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और
कनानी महिला से उत्पन्न हुआ शाऊल भी
था। 11 और लेवी के बेटे गेर्शोन, कहात और
मरारी थे। 12 और यहूदा के एर, ओनान,
शेला, पेरेस और ज़ेरह नाम बेटे हुए तो थे,
लेकिन एर और ओनान कनान देश में मर
गए थे। पेरेस के बेटे हेस्त्रोन और हामूल थे।
13 इस्साकार के बेटे तोला, पुब्बा, अय्यूब
और शिम्रोन थे। 14 ज़बूलून के बेटे सेरेद,
एलोन और यहलेल थे। 15 लिआ के बेटे,
जो याकूब से पद्दनराम में पैदा हुए थे, उनके
पोते ये थे। उसी से बेटी दीना हुई थी। ये
सब मिला कर सब तैंतीस हुए। 16 फिर गाद
के पुत्र सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी,
अरोदी और अरेली थे। 17 आशेर के बेटे
यिम्ना, यिश्वा, यिस्वी और बरीआ और बहन
सेरह थी। बरीआ के पुत्र हेबेर और मल्किएल
थे। 18 ज़िल्पा, जिसे लाबान ने अपनी बेटी
लिआ को दिया था, उसके बेटे पोते आदि
ये ही थे। उसके द्वारा याकूब के सोलह जन
उत्पन्न हुए। 19 फिर याकूब की पत्नी राहेल
के बेटे यूसुफ़ और बिन्यामीन हुए थे। 20 मिस्र
देश में ओन के पुरोहित की बेटी आसनत से
यूसुफ़ के बेटे मनश्शे और एप्रैम उत्पन्न हुए।
21 बिन्यामीन के पुत्र बेला, बेकेर, अश्बेल,
गेरा, नामान, एही, रोश, मुप्पीम, हुप्पीम और
आर्द थे। 22 राहेल के पुत्र जो याकूब से उत्पन्न

हुए उनके ये बेटे थे। उसके ये सब बेटे,
पोते चौदह प्राणी हुए। 23 फिर दान का पुत्र
हुशीम था। 24 और नप्ताली के पुत्र यहसेल,
गूनी, सेसेर और गिहलेम थे। 25 बिल्हा, जिसे
लाबान ने अपनी बेटी राहेल को दिया था,
उसके बेटे पोते ये हैं। याकूब के वंश से
उसके द्वारा सात जन हुए थे। 26 याकूब ने
निज वंश के जो लोग मिस्र में आए, बहुओं
को छोड़ सब मिला कर संख्या में[a] छियासठ
थे। 27 यूसुफ़ के बेटे, जो मिस्र में उससे उत्पन्न
हुए वे दो जन थे। इस तरह याकूब के परिवार
के जो लोग मिस्र में आए, सब मिला कर
सत्तर हुए। 28 फिर उसने यहूदा को अपने
आगे यूसुफ़ के पास भेज दिया कि, वह उसे
गोशेन का रास्ता दिखाए और वे गोशेन देश
में आए। 29 तब यूसुफ़ अपना रथ जुतवा
कर अपने पिता इस्राएल से मिलने के लिए
गोशेन देश गया। उससे मिलते ही वह उसके
गले से लिपट गया और रोता रहा। 30 तब
इस्राएल बोल उठा, "यूसुफ़, मैंने तुम्हारा मुँह
देख लिया है और तुम्हें जीवित पा लिया
है, इसलिए मैं खुशी से दुनिया से जाने को
तैयार हूँ।" 31 तब यूसुफ़ ने अपने भाईयों
और पिता के परिवार से कहा," मैं जाकर
राजा को खबर दूँगा कि मेरे भाई और मेरे
पिता के सारे परिवार के वे सभी लोग जो
कनान देश में रहते थे, मेरे पास आ गए हैं।
32 वे लोग चरवाहे हैं, क्योंकि वे जानवरों
को पालते आए हैं, इसलिए वे अपनी भेड़
बकरी, गाय-बैल और जो कुछ उनका है,
सब ले आए हैं। 33 जब राजा तुम को बुलाकर
पूछे कि, तुम लोग क्या काम धंधा करते हो
34 तो उसे बताना कि आपके दास लड़कपन
से अभी तक पशुओं का पालन करते आए
हैं और हमारे पूर्वज भी यही किया करते
थे। ऐसा करने पर तुम गोशेन में रह सकोगे,
क्योंकि मिस्र के लोग चरवाहों से नफ़रत
किया करते हैं।"

47 तब यूसुफ़ ने राजा[b] के पास जाकर
यह खबर दी कि मेरे पिताजी, भाई,
उनकी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और जो कुछ
उनका है, सब कुछ कनान देश से आ गया
है और वे सब गोशेन देश में हैं। 2 फिर उसने
अपने भाईयों में से पाँच को लिया और राजा
के सामने खड़ा कर दिया। 3 राजा ने उसके
भाईयों से पूछा, "तुम्हारा व्यवसाय क्या
है?" उन्होंने फिर कहा, "पूर्वजों ही से हम
चरवाहें हैं।" 4 तब वे बोले, "हम इस देश में
परदेशी होकर रहना चाहते हैं। कनान देश में
भारी आकाल के कारण वहाँ भेड़-बकरियों
के लिए चारा नहीं है। इसलिए हमें अनुमति
दें कि हम गोशेन में रह सकें। 5 तब राजा ने
यूसुफ़ से कहा, "तुम्हारे पिताजी और भाई
आ गए हैं। 6 और पूरा मिस्र देश तुम्हारे सामने
है। देश के सब से अच्छे हिस्से में उन्हें बसा
दो। उन में से जो योग्य लोग हैं, उन्हें मेरे
पशुओं की ज़िम्मेदारी दे दो।" 7 तब यूसुफ़
अपने पिता याकूब को राजा के पास लाया
और याकूब ने उसे आशीर्वाद दिया। 8 राजा
ने याकूब से पूछा, "तुम्हारी उम्र कितनी है?"
9 याकूब ने राजा को उत्तर दिया, '' मेरी
परदेशी होने के एक सौ तीस साल थे । मेरे
जीवन के दिन थोड़े और दुख से भरे हुए
थे।और मेरे बापदादे परदेशी होकर जितने
दिन तक ज़िन्दा रहे, उतने दिन का मैं अब
तक नहीं हुआ। 10 इसके बाद याकूब ने राजा
को आशीर्वाद दिया और चला गया। 11 तब
यूसुफ़ ने अपने पिताजी और भाईयों को बसा
दिया। राजा की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश

[a] **46.26** 66 [b] **47.1** फ़िरौन

के सब से बढ़िया हिस्से में अर्थात रामसेस
नामक जगह पर ज़मीन सौंप दी। 12 यूसुफ़
ने अपने पिताजी और भाईयों के परिवार के
खाने का प्रबंध कर दिया 13 भारी आकाल
के कारण सारे देश में खाने को कुछ न रहा
और मिस्र व कनान दोनों परेशान हो गए।
14 देशवासियों को अनाज बेचने से जो पैसा
इकट्ठा होता था, उसे यूसुफ़ राजा के पास
पहुँचा देता था। 15 लोगों के पास पैसा खत्म
हो जाने पर वे यूसुफ़ के पास आए और मुफ़्त
में अनाज माँगा। 16 यूसुफ़ ने कहा, "मैं तुम्हें
पशुओं के बदले अनाज दे सकता हूँ।" 17 तब
वे अपने पशु यूसुफ़ के पास लाए। यूसुफ़ उन्हें
घोड़ों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और गदहों
के बदले खाने की वस्तुएँ देने लगा। उस साल
वह सब जाति के पशुओं के बदले भोजन
देकर उनका पालन-पोषण करने लगा। 18 वह
साल तो ऐसे ही निकल गया। पर अगले साल
उन्होंने उससे कहा, "सच्चाई यह है कि हमारे
पास अब न धन है न जानवर। हमारी देह
और ज़मीन ही बची है। 19 हम यों ही क्यों
मर जाएँ, इसलिए हमारी ज़मीन और हमारे
बदले, में हमें खाने की वस्तुएँ मिले। हम खुद
गुलाम बनने के लिए तैयार है। हमें बीज दो
ताकि हम जीवित रहें और भूमि भी उजड़ने न
पाए। 20 तब यूसुफ़ ने मिस्र की सारी भूमि को
राजा के लिए खरीद लिया क्योंकि भयंकर
आकाल में मिस्रियों को अपना खेत बेचना
पड़ा था। इस तरह सारी भूमि राजा की हो
गई। 21 सारे मिस्र की प्रजा को यूसुफ़ ने नगरों
में लाकर बसा दिया। 22 पुरोहित[a] लोगों की
ज़मीन उसने नहीं खरीदी। उनके खाने का
इन्तज़ाम राजा की तरफ़ से था। 23 तब यूसुफ़
ने प्रजा से कहा, "यहाँ बीज है, जाओ और
खेती करो। 24 उत्पादन का पाँचवां भाग राजा
को देना। बाकी चार भाग तुम्हारे बोने और
तुम्हारे बाल बच्चों और सभी दूसरे लोगों के
लिए ताकि खाने की कमी न हो।" 25 वे बोले,
"तुमने हमें बचा लिया है, तुम्हारी दया हम
पर बनी रहे, हम राजा के गुलाम बने रहने
में राज़ी हैं।" 26 इसलिए यूसुफ़ द्वारा ठहरायी
रीति आज तक है, कि पाँचवां भाग राजा का
हो। केवल पुरोहितों की भूमि राजा की नहीं
हुई। 27 इसी दौरान इस्राएली मिस्र के गोशेन
में रहने लगे, बढ़ते गए और भूमि अपने वश
में कर ली। 28 मिस्र देश में याकूब सत्रह साल
जीवित रहा। इस तरह से कुल मिला कर वह
एक सौ सैंतालिस वर्ष जीवित रहा। 29 उसके
मरने का समय आने पर उसने यूसुफ़ को
पास बुलाकर कहा, "यदि तुम्हारी कृपा मेरे
ऊपर हो, तो अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे
रख कर शपथ खाओ, कि मुझे मिस्र में नहीं
दफ़नाओगे। 30 जब मैं अपने पूर्वजों के संग
सो जाऊँगा तब तुम मेरी देह को मिस्र से उठा
कर जाओगे उन्हीं के कब्रिस्तान में रखोगे।
तब यूसुफ़ ने विश्वास दिलाया कि वह ऐसा
ही करेगा। 31 तब उसने कहा, "मुझे वचन
दो" इसलिए उसने उससे शपथ खाई। तब
इस्राएल ने खाट के सिरहाने की तरफ़ सिर
झुका कर दण्डवत किया।

48 इन बातों के बाद किसी ने समाचार
दिया कि याकूब बीमार हो गया है।
इसलिए यूसुफ़ अपने बेटों मनश्शे और एप्रैम
को लेकर पिताजी से मिलने गया। 2 याकूब
को यह मालूम होते ही वह संभलकर खाट
पर बैठ गया। 3 याकूब यूसुफ़ से बोला,
"सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने कनान देश के
लूज नगर के पास मुझे दर्शन दिया और
आशीर्वाद भी। 4 उन्होंने मुझ से कहा, "मैं

[a] **47.22** याजक

तुम्हें समृद्ध करूँगा और राष्ट्रों का स्त्रोत
बनाऊँगा। तुम्हारे बाद तुम्हारे वंशजों को यह
देश हमेशा के लिए उनकी अपनी ज़मीन होने
के लिए दे दूँगा। 5 अब तुम्हारे दोनों बेटे
जो मिस्र में मेरे आने से पहले पैदा हुए, वे
मेरे हैं। जिस तरह से रूबेन और शिमोन मेरे
हैं, उसी तरह एप्रैम और मनश्शे भी मेरे ही
ठहरेंगे। 6 लेकिन उनके बाद जो औलाद हुई
वह तुम्हारी होगी। फिर भी उत्तराधिकार में वे
अपने भाईयों के ही वंश में गिने जाएँगे। 7 जब
मैं पद्दनराम से आ रहा था, तब रास्ते में एप्राता
पहुँचने से कुछ दूर पहले राहेल कनान देश
में मर गई और मैंने उसे वहीं एप्राता के मार्ग
में अर्थात बेतलेहेम में मिट्टी दी।" 8 यूसुफ़ के
बेटों को देखते ही इस्राएल पूछ बैठा, "ये
कौन हैं?" 9 यूसुफ़ ने पिता से कहा, "ये मेरे
पुत्र हैं, जो प्रभु ने मुझे यहाँ दिए हैं।" तब
उसने उन्हें अपने पास बुलाया ताकि उन्हें
आशीर्वाद दे। 10 बुढ़ापे की वजह से उसकी
आँखें धुँधली हो चुकी थीं और साफ़-साफ़
नहीं दिखता था। पास आने पर उसने उन्हें
चूमा और गले लगाया। 11 इस्राएल बोला,
"मैंने कभी सोचा भी न था कि तुम्हें देख
पाऊँगा, लेकिन अब तो तुम्हारे बेटों को
भी देख लिया है।" 12 तब यूसुफ़ ने अपने
बेटों को अपने पिताजी के घुटनों से हटाया
और खुद मुँह के बल गिर कर पिताजी को
दण्डवत् किया। 13 इसके बाद यूसुफ़ अपने
दाहिने हाथ से एप्रैम को अपने पिताजी को
बायीं तरफ़ और अपने बाएँ हाथ से मनश्शे
को पिता की दायीं तरफ़ करते हुए उनके पास
लाया। 14 तब इस्राएल ने अपना दाहिना हाथ
बढ़ा कर छोटे बेटे एप्रैम के सिर पर रखा
और अपने बाएँ हाथ को बड़े बेटे मनश्शे
के सिर पर रख दिया। ऐसा उसने जान-बूझ
कर किया था। 15 फिर इस्राएल ने यूसुफ़ को
आशीर्वाद देकर कहा, "प्रभु जिन की इच्छा
में मेरे पिता अब्राहम और इसहाक जीवन
बिताते थे, वही प्रभु जन्म से लेकर आज तक
मेरे चरवाहा रहे हैं। 16 वही मुझे हर तरह के
नुकसान से बचाते आए हैं, वही अब इन बच्चों
को आशीष दें। ये मेरे बाप-दादे अब्राहम और
इसहाक के कहलाएँ और पृथ्वी पर उनकी
संख्या बढ़ जाए। 17 एप्रैम के सिर पर अपने
पिताजी के हाथ को देख कर यूसुफ़ को बुरा
लगा। इसलिए उसने अपने पिता के हाथ को
उठा कर मनश्शे पर रखने की कोशिश की।
18 यूसुफ़ अपने पिता से बोल उठा, "पिताजी,
मनश्शे बड़ा है, उसी पर अपना हाथ रखें।
19 पिता बोले, "नहीं, मेरी सुनो मेरे बेटे, मैं
यह जानता हूँ कि इसके द्वारा भी एक जाति
बनेगी[a] और यह महान हो जाएगा। फिर भी
इसका छोटा भाई इस से ज़्यादा बढ़ जाएगा
और उसके वंश से तमाम राष्ट्र निकलेंगे।"
20 फिर इस्राएल ने उसी दिन यह यह कर
आशीर्वाद दिया कि प्रभु तुम्हें एप्रैम और
मनश्शे की तरह बना देंऔर उसने मनश्शे से
पहले एप्रैम का नाम लिया। 21 तब इस्राएल
ने यूसुफ़ से कहा, "देखो, मैं तो मरने पर हूँ,
लेकिन प्रभु तुम लोगों के संग रहेंगे और तुम्हें,
तुम्हारे पूर्वजों के देश में फिर पहुँचा देंगे। 22 मैं
तुम्हारे भाईयों से ज़मीन का एक हिस्सा तुम्हें
ज़्यादा दे रहा हूँ, जिस को मैंने एमोरियों के
हाथ से अपनी तलवार और धनुष की ताकत
से लिया था।

49 तब याकूब ने अपने बेटों को बुलाया
ताकि वह उन्हें बताए कि अंत के
दिनों में उन्हें किन-किन बातों का सामना
करना पड़ेगा। 2 उसने उन्हें पिता की बातों

[a] **48.19** बड़ा झुण्ड बनेगा

को ध्यान से सुनने के लिए कहा, 3 "हे रूबेन,
तुम मेरे पहलौठे, मेरा बल और मेरी नौजवानी
की औलाद हो। तुम इज़्ज़त और शक्ति में
लाजवाब हो। 4 पानी की तरह तुम बहने वाले
हो। तुम दूसरों से बड़े न ठहरोगे, क्योंकि
तुमने मेरी पत्नी के साथ शारीरिक संबन्ध
बनाया और मेरे बिस्तर को अशुद्ध किया।
5 शिमोन और लेवी तो भाई-भाई हैं, उनकी
तलवार हिंसा के हथियार हैं 6 मेरा मन उनकी
सलाह न मानें, मैं उनकी सभा का हिस्सा
न बनूँ। क्योंकि गुस्से में आकर वे लोगों
की हत्या कर डालते हैं और अपने मज़े के
लिए बैलों को लंगड़ा कर डालते हैं। 7 उनके
भयंकर और निर्दयी क्रोध पर धिक्कार। मैं
उन्हें याकूब में बाँट दूँगा और इस्राएल में
तित्तर-बितर कर दूँगा। 8 हे यहूदा, "तुम्हारे
भाई तुम्हारी बड़ाई करेंगे और तुम्हारा हाथ
तुम्हारे दुश्मनों की गर्दन पर पड़ेगा। तुम्हारे
पिता के बेटे तुम्हें दण्डवत् करेंगे।" 9 यहूदा
शेर का बच्चा है। हे मेरे बेटे, "तुम शिकार
करके ऊपर चढ़ आए हो।" वह शेर की तरह
दब कर बैठ गया है और शेरनी को छेड़नी
की हिम्मत कौन करेगा? 10 यहूदा से तब
तक राजदण्ड नहीं छूटेगा और न उसके पैरों
के बीच से शासकीय राजदण्ड हटेगा, जब
तक कि शीलो[a] न आ जाए और देश-देश
के लोग उसकी आज्ञा न मानें। 11 वह अपने
जवान गदहे को दाखलता में और अपनी
गदही के बच्चे को उत्तम जाति की दाखलता
में बाँधा करेगा। वह अपने कपड़े दाखमधु
में और अपने चोगे अंगूर के रस में धोएगा।
12 उसकी आँखें दाखमधु से चमकीली और
दाँत दूध से सफ़ेद होंगे। 13 ज़बूलून समुद्र
के किनारे पर रहा करेगा वह जहाज़ों के
लिए बंदरगाह का काम देगा, उस का छोर
सीदोन के पास पहुँचेगा। 14 इस्साकार एक
बड़ा ताकतवर गदहा है, जो जानवरों के
बाड़ों के बीच में दब कर रहता है। 15 जब
उसने देखा कि आराम की जगह अच्छी है
और देश मनोहर है, तो उसने बोझ उठाने के
लिए कंधे को झुकाया और बेगार करने वाले
गुलाम की तरह बन गया। 16 दान इस्राएल
का एक गोत्र होकर अपने लोगों का न्याय
करेगा। 17 दान रास्ते में का सांप और रास्ते
का नाग होगा जो घोड़े की एड़ी को डसता है,
जिस से उस का सवार पछाड़ खा कर गिर
पड़ता है। 18 हे प्रभु "मैं आप से मुक्ति पाने के
इंतज़ार में हूँ।" 19 गाद पर एक दल चढ़ाई तो
करेगा, लेकिन वह उसी दल के पिछले हिस्से
पर छापा मारेगा। 20 आशेर से उत्पन्न अनाज
उत्तम होगा और वह राजा के लायक स्वादिष्ट
खाना दिया करेगा। 21 नप्ताली एक छूटी हुई
हिरनी है। वह मीठी-मीठी बातें बोलता है।
22 यूसुफ़ शक्तिशाली लता की एक शाखा है।
वह सोते के पास लगी हुई फलवंत लता
की एक शाखा है। उसकी डालियाँ मुण्डेर
पर से चढ़कर फैल जाती हैं। 23 धनुष धारण
करने वालों ने उस पर हमला किया और
उस पर तीर चलाए और उसके पीछे पड़
गए। 24 लेकिन उस का धनुष मज़बूत रहा
और उसकी बाँह और हाथ याकूब के उसी
शक्तिमान प्रभु के हाथों द्वारा फुर्तीले हुए, जिस
के पास से वह चरवाहा आएगा, जो इस्राएल
का पत्थर भी ठहरेगा। 25 यह तुम्हारे पिता
के उस प्रभु का काम है, जो तुम्हारी मदद
करेंगे उस सर्वशक्तिमान का जो तुम्हें ऊपर
से आकाश में की आशीषें और नीचे गहरे
जल में की आशीषें देंगे। 26 तुम्हारे पिता के
आशीर्वाद मेरे पूर्वजों के आशीर्वादों से बढ़
गए हैं वे यूसुफ़ के सिर पर रहें उसके सिर

[a] **49.10** उचित अधिकारी

के ताज पर रहे जो अपने भाईयों में न्यारा है।
27 बिन्यामीन फाड़ने वाला भेड़िया है। वह
सुबह शिकार को फाड़ खाता है और शाम
को वह लूट को बाँट लेता है। 28 इस्राएल के
बारह गोत्र यही है और इस तरह से उसने
एक-एक को आशीर्वाद दिया। 29 तब उसने
आज्ञा देकर उन से कहा, “मैं मरने पर हूँ,
मुझे मेरे पूर्वजों की उस गुफ़ा में मिट्टी देना
जो हित्ती एप्रोन के खेत में है। 30 अर्थात उसी
गुफ़ा में जो कनान देश में मम्रे के सामने वाली
मकपेला भूमि में है, जिसे अब्राहम ने हित्ती
एप्रोन के हाथ से कब्रिस्तान के लिए मोल
लिया था। 31 वहाँ अब्राहम और उसकी पत्नी
साराह को दफ़नाया गया था। वहीं इसहाक
और उसकी पत्नी रिबका को भी मिट्टी दी गई
थी। और वहीं मैंने लिआ को भी दफ़नाया
है। 32 वह ज़मीन और वह गुफ़ा जो उस भूमि
में है, हित्तियों के हाथ से खरीदी गई है।
33 जब याकूब अपने बेटों को आदेश दे चुका,
तो उसने चारपाई पर अपने पैर समेटे और
आखिरी सांस ली।

50 यूसुफ़ अपने पिता के चेहरे से लिपट
कर रोया और चूमा 2 तब यूसुफ़
ने उन डॉक्टरों को जो उनके सेवक थे,
हुक्म दिया कि उसके पिता की लाश में
खुशबूदार पदार्थ लगाएँ। 3 चालीस दिनों तक
ऐसा किया गया क्योंकि इसमें इतना ही समय
लगा करता था। मिस्री लोगों ने उसके लिए
सत्तर दिन तक शोक मनाया। 4 शोक के दिन
गुज़रने के बाद यूसुफ़ ने फ़िरौन के परिवार
के लोगों को कहा, “यदि तुम्हारी कृपा दृष्टि
मुझ पर हो तो मेरी यह बिनती फ़िरौन को
बताओ, 5 कि मेरे पिता के मरने से पहले मुझ
से यह शपथ खिलवाई थी कि वह मेरे अपने
लिए खुदवायी गयी कब्र में दफ़नाया जाना
चाहेगा। इसलिए मुझे वहाँ जाकर अपने पिता
को मिट्टी देने की इज़ाज़त दें। ऐसा करने के
बाद मैं वापस आ जाऊँगा। 6 तब फ़िरौन ने
उसको जाने दिया। 7 इसलिए यूसुफ़ अपने
पिता को दफ़नाने के लिए रवाना हुआ।
फ़िरौन के कर्मचारी अर्थात उसके भवन के
बुजुर्ग और मिस्र देश के सभी पुरनिए उसके
संग चल पड़े। 8 यूसुफ़ के घर के सभी लोग
और उसके भाई और उसके पिता के घर के
सब लोग भी साथ गए। लेकिन वे अपने बाल
बच्चों भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को गोशेन
देश में ही छोड़ गए। 9 उनके संग रथ और
सवार भी थे, जिस की वजह से भारी भीड़
हो गई। 10 यरदन नदी के उस पार जब वे
आताद के खलिहान तक पहुँचे, तो वहाँ भारी
रोना-धोना शुरू हो गया। यूसुफ़ ने अपने पिता
के निधन पर सात दिन का विलाप करवाया।
11 आताद के खलिहान के विलाप को देख
कर उस देश के कनानी निवासी बोले, “यह
तो मिस्रियों का भारी विलाप होगा। “इसलिए
उस जगह का नाम एबेल मिज़राएम पड़ गया
12 इस्राएल के बेटों ने वैसा ही किया, “जैसा
उसने उन्हें करने के लिए कहा था। 13 उन्होंने
पिता की लाश को कनान देश में ले जाकर
मकपेला की गुफ़ा में जो मम्रे के सामने है,
दफ़ना दिया। इसे अब्राहम ने हित्ती एप्रोन से
इसलिए खरीदा था, कि कब्रिस्तान के लिए
वह निजी ज़मीन हो। 14 पिताजी को मिट्टी
देने के बाद यूसुफ़ अपने भाईयों के साथ,
जो पिता को मिट्टी देने साथ गए थे, मिस्र
वापस लौट आया। 15 पिताजी के मौत के
बाद यूसुफ़ के भाईयों को यह डर सताने
लगा कि कहीं यूसुफ़ उन से उनके किए का
बदला न ले। 16 इसलिए उन्होंने यूसुफ़ को
यह समाचार दिया कि पिताजी ने मरने से
पहले यह आज्ञा दी थी, 17 “कि तुम लोग

यूसुफ़ से इस तरह कहना, 'कृपया अपने
भाईयों के अपराध और अपराध को माफ़
करो। हम ने तुम से बुराई तो की थी, लेकिन
अब अपने पिता के प्रभु के दासों का अपराध
क्षमा करो।" उनकी ये बातें सुन कर यूसुफ़
रो पड़ा। 18 उसके भाईयों ने भी वहाँ जाकर
यूसुफ़ के सामने मुँह के बल गिर कर कहा,
"हम तुम्हारे दास हैं"। 19 यूसुफ़ ने उन से
कहा, "डरो मत, क्या मैं प्रभु के स्थान पर
हूँ? 20 हालांकि तुम लोगों ने मेरे नुकसान की
योजना बनायी थी, लेकिन प्रभु ने उसी को
अच्छे में बदल डाला। इसलिए आज बहुत से
लोग भूखे मरने से बच सके। 21 इसलिए अब
डरो नहीं, मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल बच्चों
का पालन पोषण करता रहूँगा।" इस तरह
से यूसुफ़ ने उनकी हिम्मत बढ़ायी। 22 यूसुफ़
अपने परिवार के साथ मिस्र में रहता रहा और
एक सौ दस साल तक जीवित रहा। 23 यूसुफ़
ने एप्रैम के परपोते तक देखे। मनश्शे के पोते
जो माकीर के बच्चे थे, उन्हें भी यूसुफ़ ने गोद
में खिलाया। 24 फिर यूसुफ़ ने अपने भाईयों से
कहा, "मैं तो मरने पर हूँ, लेकिन प्रभु ज़रूर
तुम्हारा ख्याल रखेंगे। वह तुम्हें इस देश से
निकाल कर उस देश में पहुँचा देंगे, जिसे
देने का वायदा उन्होंने अब्राहम, इसहाक
और याकूब से किया था।" 25 फिर यूसुफ़
ने इस्राएलियों को भी यही आश्वासन दिलाया
और प्रतिज्ञा भी करवाई कि वे उसकी हड्डियों
को वहाँ से उस देश में ले जाएँगे। 26 इस तरह
यूसुफ़ एक सौ दस साल का होकर मर गया।
उसके शव में खुशबूदार पदार्थ लगाए गए
और मिस्र ही में एक बक्से में रखा गया।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com